अवधी

कक्षा ८

अवधी

कक्षा ८

नेपाल सरकार
शिक्षा, विज्ञान तथा प्रविधि मन्त्रालय
पाठ्यक्रम विकास केन्द्र
सानोठिमी, भक्तपुर

प्रकाशक : नेपाल सरकार
शिक्षा, विज्ञान तथा प्रविधि मन्त्रालय
पाठ्यक्रम विकास केन्द्र
सानोठिमी, भक्तपुर

© पाठ्यक्रम विकास केन्द्र

यस पाठ्यपुस्तकसम्बन्धी सम्पूर्ण अधिकार पाठ्यक्रम विकास केन्द्र सानोठिमी, भक्तपुरमा निहित छ । पाठ्यक्रम विकास केन्द्रको लिखित स्वीकृतिविना व्यापारिक प्रयोजनका लागि यसको पूरै वा आंशिक भाग हुबहु प्रकाशन गर्न, परिवर्तन गरेर प्रकाशन गर्न, कुनै विद्युतीय साधन वा अन्य प्रविधिबाट रेकर्ड गर्न र प्रतिलिपि निकाल्न पाइने छैन ।

पहिलो संस्करण : वि. सं. २०८२

हाम्रो भनाइ

विद्यालय तहको शिक्षालाई उद्देश्यमूलक, व्यावहारिक, समसामयिक र रोजगारमूलक बनाउन विभिन्न समयमा पाठ्यक्रम, पाठ्यपुस्तक विकास तथा परिमार्जन गर्ने कार्यलाई निरन्तरता दिइँदै आएको छ । विद्यार्थीमा राष्ट्र राष्ट्रियताप्रति एकताको भावना पैदा गराई नैतिकता, अनुशासन र स्वावलम्बन जस्ता सामाजिक एवम् चारित्रिक गुणका साथ आधारभूत भाषिक तथा गणितीय सिपको विकास गरी विज्ञान, सूचना प्रविधि, वातावरण र स्वास्थ्यसम्बन्धी आधारभूत ज्ञान र जीवनपयोगी सिपका माध्यमले कलासौन्दर्यप्रति अभिरुचि जगाउन, सिर्जनशील सिपको विकास गराउनु र विभिन्न जातजाति, लिङ्ग, धर्म, भाषा, संस्कृतिप्रति समभाव जगाई सामाजिक मूल्य र मान्यताप्रतिको सहयोगात्मक र जिम्मेवारीपूर्ण आचरण विकास गराउनु आजको आवश्यकता बनेको छ । यही आवश्यकता पूर्तिका लागि विद्यालय शिक्षाका लागि राष्ट्रिय पाठ्यक्रम प्रारूप, २०७६ को सैद्धान्तिक मार्गदर्शनअनुसार अवधी कक्षा ८ को यो नमुना पाठ्यपुस्तक विकास गरिएको हो ।

यस पाठ्यपुस्तकको लेखन श्री विक्रममणि त्रिपाठी, श्री विजयकुमार बर्मा र श्री हंसावती कुर्मीबाट भएको हो । पाठ्यपुस्तकलाई यस रूपमा ल्याउने कार्यमा महानिर्देशक श्री युवराज पौडेल, डा. बज्रमुनि बज्राचार्य, श्री बरुण वैद्य, श्री डम्बर आङदम्बे, श्री राजु श्रेष्ठ र श्री कुमार घिमिरेको विशेष योगदान रहेको छ । यस पुस्तकको लेआउट डिजाइन श्री भक्तबहादुर कार्की र चित्राङ्कन श्री कुलदीप जङ्गबहादुर गुरुङबाट भएको हो । उहाँहरूलगायत यसको विकासमा संलग्न सम्पूर्णप्रति केन्द्र हार्दिक कृतज्ञता प्रकट गर्छ ।

पाठ्यपुस्तकलाई शिक्षण सिकाइको महत्त्वपूर्ण साधनका रूपमा लिइन्छ । अनुभवी शिक्षक र जिज्ञासु विद्यार्थीले पाठ्यक्रमद्वारा लक्षित सिकाइ उपलब्धिलाई विविध स्रोत र साधनको प्रयोग गरी अध्ययन अध्यापन गर्न सक्छन् । यस पाठ्यपुस्तकलाई सकेसम्म क्रियाकलापमुखी र रुचिकर बनाउने प्रयत्न गरिएको छ तथापि यसमा अझै भाषा प्रयोग, भाषाशैली, विषयवस्तु तथा प्रस्तुति र चित्राङ्कनका दृष्टिले कमीकमजोरी रहेको हुन सक्छन् । तिनको सुधारका लागि शिक्षक, विद्यार्थी, अभिभावक, बुद्धिजीवी एवम् सम्पूर्ण पाठकहरूको समेत महत्त्वपूर्ण भूमिका रहने हुँदा सम्बद्ध सबैको रचनात्मक सुझावका लागि पाठ्यक्रम विकास केन्द्र हार्दिक अनुरोध गर्छ ।

वि.स. २०८२ **पाठ्यक्रम विकास केन्द्र**

विषयसूची

पाठ	शीर्षक	विधा	पृष्ठसङ्ख्या
१	हमार देश सुन्नर देश	कविता	१
२	समय कै गवाही	ऐतिहासिक कथा	१०
३	समाजसेवी भगवानदास गुप्ता	राष्ट्रिय जीवनी	२२
४	व्यवसायिक चिठी		३१
५	महाकाव्य : रामचरितमानस	निबन्ध	४०
६	गुलर कै फूल	कथा	५१
७	गाँव कै जिन्दगी	संवाद	६२
८	नेपाली होई	कविता	७४
९	नदी कै आत्मकथा	आत्मपरक निबन्ध	८२
१०	मनई के जिन्दगी मे प्रविधि	मनोवाद	९३
११	जङ्गलवा गावै लाग	कथा	१०४
१२	सचेतना कै धरोहर	जीवनी	११७
१३	वसंत बहार	कविता	१२८
१४	चित्रकला कार्याशाला	दैनिकी	१३८
१५	कृषि प्रधान देश मा किसानै अपहेलित	सम्पादक का चिठ्ठी	१४९

हमार देश सुन्नर देश

- पशुपति मणि त्रिपाठी

प्राकृतिक छटा से **विभूषित,**
आकर्षक औ **भूपरिवेष्ठित,**
बहुजातिक, बहुभाषिक,
हिमाल, पहाड़ औ मधेश ।
हमार देश सुन्नर देश ॥

हिम **श्रृङ्खला** से **आच्छादित,**
बन जङ्गल से परिपूरित,
नदी नाला से **अभिसिंचित,**
अन्न से **भण्डारित** देश ।
हमार देश सुन्नर देश ॥

सीता बुद्ध कै मातृभूमि,
पशुपतिनाथ कै देवभूमि,
बैदिक औ बौद्धिक विशेष,
पुण्यभूमि पूर्ण **अवशेष,**
हमार देश, सुन्नर देश ॥

पाणिनी कै **जन्मभूमि,**
वाल्मिकी कै **कर्मभूमि,**
ऋगीं के तप से **उर्जावान,**
सांख्य दर्शन **पल्लवित** देश ।
हमार देश सुन्नर देश ॥

सामन्तन कै **विनाशक,**
जनता बने शासक,
संघीयता से परिभाषित,
गणतन्त्र से निर्मित देश,
हमार देश सुन्नर देश ॥

शब्दार्थ

विभूषित	:	अलंकृत, शोभित, सजावा
बहुजातिक	:	अनेक जाति कै
बहुभाषिक	:	अनेक भाषा कै
आच्छादित	:	ढका, छावा
अभिसिंचित	:	अच्छे तरह से सीचा
भण्डारित	:	भण्डार में भरा, भण्डार किहा
अवशेष	:	ऊ जवन बचा रहै या बाक़ी रहै, शेष भाग, बचा
जन्मभूमि	:	जन्मस्थान
कर्मभूमि	:	कर्म करै वाला स्थान; कर्म-क्षेत्र
उर्जावान	:	उर्जा से भरा
पल्लवित	:	विकसित, जवने में पल्लव लाग होंय ।

शब्द भण्डार

१. नीचे दिहा अर्थ से आवै वाला शब्द 'हमार देश सुन्नर देश' कविता से खोजिकै लिखा जाय :

(क) ऊ देश वा स्थान जवन समुद्र से न जुड़ा होय

(ख) हिमाल कै उ पार, जवन एक दुसरे से जुटा रहत हैं औ घाटी से एक दुसरे से अलग देखाय परत हैं ।

(ग) अच्छी तरह से सींचा या भावनात्मक स्तर पर पोषित ।

(घ) एक निश्चित स्थान पर बसा दुइ से ढेर भाषा का प्रयोग करै वाला समुह या समाज

(ङ) जन्म भवा मातृभूमि कै स्थान

२. दिहा शब्द का प्रयोग कइकै वाक्य बनावा जाय :

बहुजातिक, भण्डारित, कर्मभूमि, पल्लवित, कर्मभूमि

बोध औ अभिव्यक्ति

१. दिहा शब्द कै शुद्ध से उच्चारण किहा जाय :

प्राकृतिक, आच्छादित, मातृभूमि, पुण्यभूमि, सांख्य दर्शन, गणतन्त्र

२. 'हमार देश सुन्नर देश' कविता लयवद्ध वाचन किहा जाय ।

३. 'हमार देश सुन्नर देश' कविता पढ़िकै पूछा प्रश्न कै मौखिक उत्तर दिहा जाय :

(क) हमार देश केसे विभुषित है ?

(ख) हमार देश केसे परिपूरित है ?

(ग) यी केकर मातृभूमि होय ?

(घ) यी देश मे कवन दर्शन पल्लवित है ?

(ङ) हमार देश केसे परिभाषित है ?

४. गुरुजी से कवितांश का सुना जाय औ छुटा शब्द का भरिकै पुनर्लेखन किहा जाय :

.... कै विनाशक,

जनता बने ....,

संघीयता से ....,

.... से निर्मित देश,

हमार देश .... देश ॥

५. 'हमार देश सुन्नर देश' कविता पढ़िकै दिहा प्रश्न कै संक्षिप्त उत्तर लिखा जाय :

(क) हमरे देश के भूगोल में का का हैं ?

(ख) हमार देश केसे भण्डारित देश होय ?

(ग) हमार देश केकरे तप से उर्जावान है ?

(घ) हमार देश केसे परिभाषित देश होय ?

६. 'हमार देश सुन्नर देश' कविता के तिसरे श्लोक से दुइ प्रश्न बनावा जाय ।

७. दिहा कवितांश का गद्य में लिखा जाय :

उदाहरण : पाणिनी कै जन्मभूमि, वाल्मिकी कै कर्मभूमि,

यी पाणिनी कै जन्मभूमि औ वाल्मिकी कै कर्मभूमि होय ।

(क) प्राकृतिक छटा से विभूषित, आकर्षक औ भूपरिवेष्ठित

(ख) नदी नाला से अभिसिंचित, अन्न से भण्डारित देश

(ग) ऋगीं के तप से उर्जावान, सांख्य दर्शन पल्लवित देश ।

८. व्याख्या किहा जाय :

पाणिनी कै जन्मभूमि,

वाल्मिकी कै कर्मभूमि,

ऋगीं के तप से उर्जावान,

सांख्य दर्शन पल्लवित देश ।

हमार देश सुन्नर देश ॥

९. नीचे दिहा अनुच्छेद का पढ़िकै पुछा प्रश्न कै उत्तर लिखा जाय :

बरसाती नदी

बरसात कै समय रहा । गृष्म मे सुखान नदी उफान भरै लाग । गाँव मे बाढ़ि आय, गोहारि मचै लाग । नदिन कै अहम चरम पर रहा । गाँव, देहात औ सिउवान मे पानी...पानी रहा । गर्व से अपने समीप रहा गाँव के कुवाँ से नदी बोला,“भाई ! हमार चौड़ाई तो देखौ ? अइसन तो दशौ गाँव का हम अपने भीतर समेटि सकित है ।”

कुवाँ नदी के ओर देखिकै मुस्कियान औ अउर कुछ नाही बोला ।

नदी कुवाँ के ओर देखिकै बोली,“भाई तोहरे जेस लोग बहुत आसानी से हमरे भीतर समाय जइहैं ।”

यहू बाति पर कुवाँ कवनो प्रतिकार किहिस न प्रतिउत्तर । अपने गम्भीरता मे रहा ।

मौसम बदला बरसाती नदी सुखात गवा । समय के सङ्हरियै नदी कै धार पातर होय गवा । अब समय कुवाँ के पक्ष मे रहा । कुवाँ नदी का कहिस,"बहिनी, जीवन से बहुत सिखि सकित है ।"

नदी,"आप कहै का चाहत हौ, भाई ?"

"बहिनी, जीवन मे खुद कै बिस्तारै होब सबकुछ नाही होत, वहमा गुणवत्ता आइब आवश्यक होत है । कुवाँ कहिस ।

"हम आप कै बाति सम्भि नाही पायेन ।" नदी अनभिज्ञता प्रकट किहिस ।

कुवाँ यहर वहर देखिकै बोला,"आपन जीवन सङ्ख्यात्मक कम औ गुणात्मक बनाइब ढेर आवश्यक होत है ।"

"जी !"

"बिना उद्देश्य आगे बढ़ि गये से कवनो लक्ष्य नाही प्राप्त होत है । सफलता तो व्यक्तित्व मे गहिराई लावै के बादै प्राप्त होत है ।" कुवाँ आपन बाति पूरा किहिस ।

अबकिर नदी कुछ नाही बोली । बरसात मे बहाव के कारण बना पदचाप का निहारै लाग ।

प्रश्न

(क) गावँ में गोहारि काहे मचै लाग ?

(ख) कुवाँ नदी के बिकराल रूप का देखिकै का किहिस ?

(ग) सफलता व्यक्तित्त्व में काव लावै के बादै मिलत है ?

(घ) अन्त में नदी काहे कुछ नाही बोली औ काव निहारै लाग ?

१०. नीचे दिहा सन्दर्भ पढ़ा जाय औ निर्देशन अनुसार किहा जाय :

हम साथी का अगोरि सकति है । साथी हम्मै अगोरि सकत है । लेकिन समय केहु का नाही अगोरत है । उ अपनेन गति मे चलत रहत है । जे समय के साथ सम्भौता कइकै नाही चलत है । उ पीछे परिजात है । अपनेआप से पछितात रहत है । हम बहुत लोग का बतुवात सुने हन- समय से खेलवाड़नाही करै के चाहीं । न तो बुरा

वकत के खातिर समय का दोख देय के चाहीँ । पतझड़के बाद बगिया मे हरियाली छावत है । यहि सोचिकै आगे बढै के चाहीँ । आपन खयाल राखत न कि दूसरे के बाति मे आइकै आपन समय बरबाद करत ।

उपर के उदाहरण में किताब के बारे मा कुछ विचार दिहा हैं, आपौ किताब के बारे में आपन विचार लिखिकै कक्षा में सुनावा जाय ।

भाषिक संरचना औ वर्ण विन्यास

१. **नीचे दिहा अनुच्छेद पढ़ा जाय । यहिमे प्रयोग भवा नाम पद कै पहिचान कइकै तालिका बनाइकै लिखा जाय ::**

रजनी, रतन औ मुन्ना मेला देखै गये । कत्थक नाचै वालेन कै समूह नृत्य प्रस्तुत करत रहा । मनइन कै भीड लाग रहा । चलै के कठिनाई होत रहा । गाँव गाँव से लोग मेला देखै गोल बनाइकै आये रहें । एक ओर मदारी भालू कै खेला देखावत रहें । मेला मे खाय वाला चीज, खेलौना औ अउर सामान सब विकात रहा । एक जने बानर नचावत रहें । हम्मै बनार का खेला देखिकै बहुत मोह लाग । आदमी निर्दयता देखिकै घिन लाग । सब ओर घुमघाम करै के बाद एक ठू बेड के तरे बइठा गै । वही अउर चारपाँच जने रहें । विद्यालय कै भाइबहिन लोग स्वयंसेवक कै काम करत रहें । रामघाट कै मेला बहुतै चर्चित है । यी चतरादेई के किनारे परत है ।

२. **हमार देश सुन्नर देश कविता से जाति, द्रव्य औ भाव बुझावै वाला दुइ दुइ ठू नाम पद पहिचान कइके लिखा जाय ।**

३. **नीचे अनुच्छेद पढा जाय ओ सर्वनाम पद कै टिपोट बनावा जाय :**

हम नहारी लइकै जात रहेन । राधा औ रमेश रास्ता मे मिले । वनहु लोग नहारी देय जात रहें । हमरे सब जने सङहरियै गवा गै । हम्मन का देखिकै भरोसे दादा कहिन- तोहरे लोग सङहरि कइके चला रहेव । वय फिर सब का कहिन- जे जे भुखान हौ बाउ, ते ते खाय आवो । केहु केहु हँसत कहिन- हमरे तो नाही खाबै, बयारि पिइकै रहि जाबै ।

४. हम, हमरे, तू, तहार, आप, हम्मन, वन्हरे, जे, ते आदि प्रयोग कइकै अनुच्छेद लिखा जाय ।

५. नीचे वाक्य मे नाम पद के जगह पर सर्वनाम पद कै प्रयोग कइकै पुनर्लेखन करा जाय :

(क) राज पकोडी खाइन ।

(ख) राधा, रमा औ रजनी गीत गाइन ।

(ग) मामा काम करत हैं । मामा मेहनत करत हैं ।

(घ) काका हमरे साथे आये । काका हमार काम देखिन ।

सुनाई औ बोलाई

सुनाई पाठ- १

याद सतावत

- *वासुदेव प्रसाद चौधरी, कपिलवस्तु*

आज देखो सुविधा साधन कै दिनवा ।
देख-देख, बुढ़वन कै मोहत मनवा ॥
आवा बुढ़ापा, बीता लरिकइया जवानी ।
यस नाई देखेन, ईहै जीवन कहानी ॥
लेकिन प्यार-भाव कै टूटा सपनवा ।
देख-------------------------------॥
हम्मन कै याद सतावत, ढेंकी जांता ।
सिल-लोढ़ा, ओखरी-पहरूवा औ हाथा ॥
हर-जोठा, पयना, जाबा, लढ़िया, सिपावाँ ।
देख--------------------------------॥

तका-तका, ओ-ओ कहि जोतैं खेतवा ।
पल्टा-लग्गी, हेङ्गावत लै कै हेङ्वा ॥
अन्हरा दै कै मूनत बोवल धनवा ।
देख-------------------------------॥
बरहा, कुला, चहला, कनई, ओभ्फान ।
भोंड़ा-चोंड़ा, गड़बड़ा , खत्कोला अटान ॥
याद आवै, लेवा मे कजरी गावें गनवा ।
देख--------------------------------॥

१. सुनाई पाठ १ सुना जाय औ दिहा प्रश्न कै उत्तर बतावा जाय :

(क) लेखक कै मन काव देखिकै मोहित होत है ?

(ख) कविता मा केतकै याद सतावत है ?

(ग) पहिले काव काव कहिकै खेत जोता जात रहा ?

(घ) आज के लेवा में काव नाही सनै के मिलत है ?

२. 'याद सतावत' कविता में कवि का कवने कवने चीजिन कै याद आवत है ? सुनाई पाठ १ के आधार पर बतावा जाय ।

सिर्जना औ परियोजना कार्य

१. 'हमार देश' शीर्षक पर एक कविता लिखा जाय ।

२. आप के समाज में गावा जाय वाला एक लोकगीत का सुनिकै लिखा जाय औ कक्षा में सुनावा जाय ।

समय कै गवाही

आप औ हमरे जीवन कै भर नाही । इतिहास के प्रत्येक कालखण्ड कै **गवाह** होय- समय ! समय के साथ भवा आर्थिक औ सांस्कृतिक समृद्धि येकर प्रमाण होय । इतिहास कै एक अनोखा कालखण्ड बनिकै रहि गवा रहा, कपिलवस्तु गणराज्य कै स्थापना औ पतन कै कहानी ।

आज के छब्बिस सौ वर्ष पहिले कै बाति होय । कपिलवस्तु मे गणतान्त्रिक शासन व्यवस्था अभ्यास मे रहा । राजा रहें । राजपरिवार रहें । भाइभारदार रहें । लेकिन सब लोग शाक्यसंघ कै सदस्य रहें । राज्य के विषय मे एकल निर्णय केहू कै नाही चलत रहा । सामुहिक निर्णय भर मान्य होत रहा । शाक्य गणराज्य कै समग्र विकास यही नियम पर अड़ा रहा ।

कपिलवस्तु कै बाति, इतिहास खोजै वालेन के मन मे अनेकन सवाल उठाय देत है । सवालो कइसै न उठै ? गवाह रहा समय, जवन मकरी के जाल जेस घटनाक्रम का घुमाय देत है ।

ई.पू छब्बिस सौ वर्ष पहिले कपिलवस्तुनगर मे शाक्य वंश कै राज्य रहा । कपिलवस्तु के दखिन मे इक्ष्वाकु वंश कै शासन कै एक राज्य रहा । वहिकै राजा ओक्काक रहें । वनके बड़ी रानी के कोख से चार बेटवा औ पाँच बिटियन कै जन्म भवा रहा ।

बड़ी रानी कै असमय मृत्यु होय गवा । राजा फिर से बियाह किहिन, वनहू से एक राजकुमार कै जन्म भवा । यी रानी अपने बेटवा का राज्य कै उत्तराधिकारी बनावै खातिर राजा का दबाब देय लागीं । राज्य क नीति के अनुसार उनकै यी प्रस्ताव सान्दर्भिक नाही रहा ।

लेकिन रानी कै दबाब बढ़त गवा । राजा रानी का खुशी बनावै के उपाय सोचिन । वन पहिली रानी से जन्मे चारौ बेटवा औ पाँच बिटियन का राज्य से निर्वासित होइकै जाय के आदेश दिहिन । वनहू लोग पिता कै आज्ञा शिरोपर करत राज्य परित्याग कइ दिहिन । उ लोग चलतैचलत घना जङ्गल मे पहुँचे । जवन उ लोगन के राज्य से उत्तर मे परत रहा । ऊ लोगन के साथ कुछ भारदारौ लोग राज्य छोड़िकै आय रहें । सब जने घुमतघामत कपिलमुनि के आश्रम मे पहुँचे । उ लोग मुनि के सल्लाह अनुसार सखुवा कै बन काटिकै एक नवाँ बस्ती बसाइन । मुनि के सल्लाह अनुसार बस्ती बसावै के नाते यहि नगर कै नाँव कपिलवस्तु राखि गवा ।

कपिलमुनि के सुझाव अनुसार बड़की बहिन पिया का मातृ स्थान पर राखिकै चारो भाई औ बहिन मिलिजुलि कै यिहा कै शासन चलावै लागें । जङ्गल के बीच मे नवाँ बस्ती होय के बावजूद सबकुछ ठीकठाक चलत रहा ।

अचानक बड़ी बहिन पिया का कुष्ठरोग रोग होइ जात है । वहि समय कुष्ठरोग का **दुःसाध्य** या अछुत रोग मानि जात रहा । लोगन कै बुझाई रहा- घरपरिवार मे एक जने का कुष्ठरोग होय गवा तो अउरो लोग का होय जाई । कुष्ठरोग कै दवाई औ इलाज नाही रहा । वहि समय कुष्ठरोग लागै के बाद लोग घरबार छोड़िकै गुफा, जङ्गल या कवनो अनकण्टार एकान्त मे जाइकै रहै लागत रहें । समय के चलन अनुसार पिया अब घरबार छोड़िकै जङ्गल में जाय कै सोच बनावै लागीं । वन आपन यी विचार अपने भाई औ कपिलवस्तु कै तत्कालीन राजा ओक्कामुख के सामने राखिन ।

दिदी के प्रस्ताव अनुसार ओक्कामुख अपने सिपाहिन का एक ठू गुफा खोजै के लगाइन । गुफा मिलै के बाद वकर सरसफाई करवाइन । काठ कै पटरा ठोकिकै गुफा मे रहै लायक कोठरी तइयार किहा गै । वह मा खाय-पियै, बिछावै-ओढ़ै कै व्यवस्था किहा गै । फिर,

कुष्ठरोग से ग्रसित दिदी का गुफा भीतर राखा गै । यकरे साथै काठ कै पटरा आदि लगाय कै वहि गुफा का सुरक्षित बनावा गै । ताकि हिंसक जानवर आक्रमण न कइ पावैं ।

अब राजकुमारी पिया जङ्गल के वही गुफा मे रहै लागीं । अइसै दिन बितत गै । एक दिन कै बाति होय । वनके गुफा के आगे एक बाघ आय । बघवा मनई कै गन्ध पाइकै गुफा कै पटरा धकेलै लाग । उ बहुतै देर तक प्रयास किहिस । बाघ कै आहट औ प्रयास देखिकै राजकुमारी पिया भोकासि मारिकै रोवै लागीं । लेकिन बाघ पटरा से बना बन्द दरवाजा नाही खोलि पाइस औ लउटिकै चला गवा ।

वहि गुफा के कुछै दुरी पर कोल के पेड़ रहा । वही कोल के पेड़पर एक आदमी रहत रहें । वयँ रातिके समय मे बाघ कै गर्जना औ स्त्री चित्कार सुनिकै अचम्भित भयें । वन सबेरे उठिकै रातिके आवाज आवा दिशा ओर यकीन करत आगे बढें । आगे आवै के बाद वन एक ठू गुफा देखिन । जवने का पटरा आदि के माध्यम से अत्यन्त सुरक्षित बनावा रहा । वय गुफा के बहरे खड़ा होइकै बोलावै लागें । मनई कै आवाज सुनिकै राजकुमारी पिया पटरा हटाय कै गुफा से बहरे आईं । दुनौ जने मे चिन्हापर्ची भवा । ऊ पुरुष तत्कालीन काशी महा जनपद कै राजा राम रहें । वनहु का कुष्ठरोग लाग रहा औ लोगन कै अपहेलना से बचै के खातिर यही आय कै रहत रहें । वन केहू का बिना बताये दरबार छोड़िकै, यहि घना जङ्गल मे चलि आय रहें । बनविहार करत औ जड़ीबुटी खात रहत बहुत वर्ष विति गवा रहा । उनकै कुष्ठरोगव ठीक होय गवा रहा ।

कुष्ठरोग के कारण दुनौ अपने लोगन से दूर रहें । बाति मिलि गवा औ दुनौ जने सङ्हरियै रहै लागें । साथसाथ रहत के मन मिलै लाग औ एक दुसरे से बियाहौ कइ लिहिन । पिया सोह्र बेर गर्भवती भईं औ सोह्रौ बेर जुड़ुवा बेटवा कै जन्म दिहिन । उ लोग शिक्षादिक्षा ग्रहण किहिन । उलोग कै शादी बियाह भवा औ राजकाज मे लाग गयें ।

यहि किसिम से कोल वृक्ष के आश्रय लइके रहे के नाते बत्तिसौ कुमार के वंश का कोलिय वंश नाम दइ गै । बस्ती बिस्तार होतै जात ऊ एक बस्ती कै रूप लइ लिहिस जवने का कोल नगर कहि जाय लाग । अब कोल नगर मे कोलिय वंश औ कपिलवस्तु मे शाक्य वंश शासन करै लाग । दुनौ कै सिमाना उत्तरदक्षिण होइकै बहै वाली रोहिणी नदी बना । यहि किसिम से रोहिणी नदी के पूर्व मे कोलीय राज्य औ पश्चिम मे कपिलवस्तु राज्य कै स्थापना भवा । रोहिणी नदी यहू घरि वही गति औ गम्भिरता के साथ बहत है । वकरे कुछै दुरी पर अउर नदी सब है ।

वहि समय भारत वर्ष मे कपिलवस्तु से बहुतै शक्तिशाली महाजनपद औ राज्य सब अस्तित्व मे रहा । मगध, मल्ल, कम्बोज, काशी, कोशल, कुरु जेस नाम कै अनेकन राज्य सब क्षेत्रफल औ शक्ति हिसाब से बहुतै शक्तिशाली रहें ।

समय के साथ कपिलवस्तु मे राजा शुद्धोधन कै शासन आय । वहि समय कपिलवस्तु कै राजधानी तिलौराकोट रहा । यही समय चक्र मे शाक्य राजा शुद्धोधन के बड़की रानी मायावती से एक राजकुमार कै जन्म भवा । वनकै नाव सिद्धार्थ गौतम राखा गै । राजकुमार सिद्धार्थ कै मन राजपाठ मे नाही लागत रहा । वन अपने जीवन कै वन्तिस वर्ष कपिलवस्तु मे बिताइन रहा । वन्तिसहवाँ वर्ष मे वन अपने नवजात शिशु राहुल, पत्नी यशोधरा औ दरबार छोड़िकै चला गवा रहें । बाद मे जाइकै कठिन तपस्या औ विचारमन्थन के बाद वन्है **बुद्धत्व** कै प्राप्ति भवा । वनही सिद्धार्थ बुद्धत्व प्राप्ति के बाद गौतम बुद्ध के नाम से विश्वविख्यात भयें । वहि समय शाक्य कुल का लोग उच्चकुल के रूप मे देखत रहें ।

कोशल नरेश प्रसेनजित बुद्ध कै **अनुयायी** रहें । वय शाक्य कुल से वैवाहिक सम्बन्ध जोड़ै के चाहत रहें । वय शाक्यकुल के कन्या से बियाह कइकै पयदा भवा सन्तान का कोशल महाजनपद कै सम्राट बनावै कै सपना देखत रहें । वन कन्या कै हाथ माङै के खातिर कपिलवस्तु राज्य मे खबर भेजिन । अपने से छोट कुल के राजा का कन्या कइसै देय ? न देय तो राजा रिसियाइकै अपने राज्य पर आक्रमण कइ दिहैं कि ? दुविधा कै अवस्था रहा ।

शाक्य लोगन का अपने रक्तशुद्धि कै अभिमान रहा । उ लोग शक्तिशाली कोशल सम्राट का नजरअन्दाजो नाही कइ पावत रहें । साथै अपने कुल कै मर्यादौ नाही गिराय सकत रहें । प्रसेनजित कै मान राखै के रहा । ऊ लोग षड्यन्त्रपूर्वक दासीपुत्री बासभ खत्तिया का शाक्य राजकुमारी कहिकै प्रसेनजित से बियाह कराय दिहिन । वनही से विडुडभ कै जन्म भवा ।

कपिलवस्तु विडुडभ कै ननियाउर राज्य रहा । विडुडभ कोशल नरेश प्रसेनजित कै बेटवा रहें । वय सोह्र वर्ष तक अपने ननियउरे कपिलवस्तु नाही आय रहें । जब वय कपिलवस्तु गयें तब शाक्य लोग धोखा से अपने पिता कै बियाह दासी कन्या से भवा रहस्य जानि पाइन । वन कोशल आवै के बाद सब बाति अपने पिता का बताइन ।

यहि रहस्य से विडुडभ के मन मे विद्रोह कै वीजारोपण भवा । वन पिता के अपमान कै बदला लेय के योजना बनावै लागें । बदला कै भावना दिनानुदिन प्रबल होत गवा ।

पिता से सत्ता छोड़ै के बाद विडुडभ राजपाट सम्हारै लागें। वन बदला लेय के खातिर सैन्य संगठन विस्तार करै लागें। वय सेना कपिलवस्तु के ओर भेजत रहें, लेकिन सीमा पर बुद्ध से भेट होय जात रहा। यी क्रम तीन बेर दोहरियान औ तीनौ बेर विडुडभ का लउटै के परा।

तीन बेर लउटै के बादो वनमे बदला कै भावना जइसै के तइसै रहा। चउथा बेर जात के सीमा पर बुद्ध नाही मिलें। वहि समय विडुडभ का रोकै वाला केहु नाही रहा। उनकै सेना कपिलवस्तु पर निर्ममतापूर्वक आक्रमण किहिस। युद्ध मे कपिलवस्तु राज्य राखि मे परिणत होय गवा। लड़ाई मे खून कै नदी बहा। विडुडभ बहुसङ्ख्यक शाक्यन कै वध किहिन रहा।

विडुडभ बुद्ध के जीवनकालै मे कपिलवस्तु पर आक्रमण किहिन रहा। जे लोग बचा रहें। उ लोग पूरब औ पच्छु के ओर तितरबितर होय गयें।

कपिलवस्तु जवने समय सम्पन्न सभ्यता रहा। वही घरी नगर सभ्यता कै विकास भवा रहा। यहिमे केहू कै आपत्ति नाही है। अपने का उच्च कुल कै मानै वाले शाक्य लोग कै अहम् औ वहम् कपिलवस्तु का राखि बनाय दिहिस।

विकसित सभ्यता कै नमुना रहा कपिलवस्तु। मनइन कै पलायन के बाद निर्जन होतै गवा। पेड़, पवधा औ झाड़ी जामै लाग। बनैया जीवजन्तु बासस्थान बनै लाग। चुरे से बाढ़ि मे बहिकै आवै वाला दुमट **बहपट** से कपिलवस्तु पटत गवा। कपिलवस्तु पहिलेव जङ्गल रहा। फिर वहीं समय के साथ जङ्गलै विकसित होत गवा।

शब्दार्थ

गवाह : साक्षी, देखै वाला

गणतान्त्रिक : गणतन्त्र के सिद्धान्त अनुरूप

महाजनपद : बड़ा राज्य

दुःसाध्य : समाधान न कइ मिलै वाला

विमर्श : छलफल, परिचर्चा

अधिनस्थ	:	अधिन मे रहा
बुद्धत्व	:	बुद्ध कै पद
अनुयायी	:	चेला, शिष्य
बहपट	:	बाढि मे बहिकै आवा खरपतवार सहितकै लेवामाटी

शब्द भण्डार

१. नीचे दिहा पर्यायवाची शब्द पढ़ा जाय औ छलफल करा जाय :

जगत	संसार, लोक, दुनियाँ
साहस	बल, हिम्मत, शक्ति
बिस्तार	फइला, पवढ़ा, पसरा
सूर्य	भाष्कर, रवि, दिनकर
ताल	पोखरा, सरोवर, झिल
नित्य	दैनिक, रोज, प्रतिदिन

२. नीचे दिहा पर्यायवाची शब्द बीच जोड़ा मिलावा जाय :

चन्द्रमा	क्रोध
नदी	बयारि
जङ्गल	गृह
चलाख	शशि
घर	निरझरणी
हावा	बन
रिस	चतुर
	झाडी

३. नीचे दिहा अर्थ आवै वाला शब्द 'समय कै गवाही' कथा से खोजिकै लिखा जाय :

(क) निर्जन, अन्कण्टार (ख) पेड़, पवधा

(ग) विचार, राय (घ) आदर, सम्मान

(ङ) लड़ाई, झगड़

बोध औ अभिव्यक्ति

१. दिहा शब्द कै शुद्ध से उच्चारण किहा जाय :

सभ्यता, गणतन्त्र, अनुयायी, विरुद्धक, विजारोपण, बनविहार, कुष्ठरोग

२. 'समय कै गवाही' कथा वसरीपारी सस्वर वाचन किहा जाय ।

३. 'समय कै गवाही' कथा पढ़िकै दिहा प्रश्न कै मौखिक उत्तर बतावा जाय :

(क) कपिलवस्तु मे कइसन शासन व्यवस्था रहा ?

(ख) सब लोग केतकै सदस्य रहत रहें ?

(ग) पिया केकर बिटिया रहीं ?

(घ) राजा राम कहा कै राजा रहें ?

(ङ) प्रसेनजित केकर अनुयायी रहें ?

३. 'समय कै गवाही' कथा कै दूसरा अनुच्छेद शिक्षक से सुनिकै लिखा जाय ।

४. 'समय कै गवाही' कथा पढ़िकै दिहा प्रश्न कै सङ्क्षिप्त उत्तर लिखा जाय :

(क) कपिलवस्तु कै पहिला राजा के रहें ?

(ख) ओक्काक कवने वंश कै राजा रहें ?

(ग) केकरे सुझाव से कपिलवस्तु नगर बसाय गै ?

(घ) राजकुमार विडुडभ कवने देश कै राजकुमार रहें ?

५. 'समय कै गवाही' कथा के आधार पर प्राचीन कपिलवस्तु के बारे मे लिखा जाय ।

६. दिहा चित्र कै वर्णन किहा जाय :

७. व्याख्या किहा जाय :

"इतिहास के प्रत्येक कालखण्ड कै गवाह होय- समय !"

८. 'समय कै गवाही' कथा से मुख्य बाति कै पाँच ठू बुँदा टिपोट करा जाय ।

९. दिहा परिच्छेद पढ़ा जाय औ निर्देशन अनुसार किहा जाय :

जेठ कै महीना ओराय गै । कृषिप्रधान देश के खातिर हरेक महीना महत्त्वपूर्ण होत है । वहू में जेठ, असाढ़ औ सावन महीना तौ अउर महत्त्वपूर्ण होत हैं । यहि घरी

किसान लोग कै ध्यान खेत औ खेती मा केन्द्रित रहत है । नेपाल मा किसान के सङ्हरियै सरकारो के खातिर जेठ महीना महत्वपूर्ण मानि जात है । यही महिना मा सरकार आपन नवाँ आर्थिक वर्ष कै बजेट विनियोजन, नीति औ कार्यक्रम सार्वजनिक करत है । नेपाल कृषि प्रधान देश होय के बावजूद सरकार कै आर्थिक बजेट प्रति कृषक लोग कवनो खास ध्यान नाही देत हैं । येकर मुख्य कारण होय अबहिन तक देखत औ भोगत आवा नैराश्यपूर्ण कृषि नीति औ व्यवस्था । *(शमशाद आदिल)*

१०. शमशाद आदिल के जइसै आपौ कवने महीना का महत्वपूर्ण माना जात है औ काहे ? कारण सहित कक्षा मेसुनावा जाय ।

भाषिक संरचना औ वर्ण विन्यास

१. नीचे अनुच्छेद मे गाढा रङ मे दिहा शब्द पढा जाय औ टिपोट बनावा जाय औ कक्षा मे छलफल करा जायः

असाढ मे जमुवा पाकिकै **करिया** होय जात है । औ अमवो पाकिकै **पियर** होय जात है । राजू पियर पकनारी पियरै झोरा मे लइके आवत रहा । झोरा मे जम्मा **चारपाँच** ठू रहा । अपने गर्मी के मारे **बहँकटिया** पहिरे रहा । आजा **छोट** कै अँगोछा कान्हे पर धरे **लम्मा** कै लाठी लिहे आवत रहें । उनके अगवै एक मिला **नवाँ** मोटर साइकिल पर **एक** जने का लइकै आय । उ एक जने बाबा के **पूरान** चिन्हार रहें ।

२. नीचे दिहा विशेषण पद कै प्रयोग कइकै वाक्य बनावा जाय :

कच्चा, हरियर, छोट, किलोभर, उ, आपन, लाखौं, झकाझोर

३. दिहा वाक्य का सङ्गति मिलाय कै लिखा जाय :

(क) शीला विद्यालय गै है ।

(ख) किसान खेत जोतत हिन ।

(ग) श्याम सडकि पर गिरि पड़ी ।

(घ) कमल के घरे मोटर हिन ।

(ङ) सीता औ कमल नेपालगञ्ज जाई ।

(च) घारी में गाय बम्मात है ।

(छ) काकी औ दीदी घरे आय ।

४. दिहा शब्द का शुद्ध कइकै लिखा जाय :

पढाइ, सुचना, कमपन, ग्यानी, परापुरब, महिना, जबार, शब्दकोष

सुनाई औ बोलाई

सुनाई पाठ २

बाल हठ

यहि वर्ष कै देवारी कै तिउहार बहुतै धुमधाम के साथ मनाय गै । पुड़ी, कचौड़ी, सेल, फिनी, खीर, पिचकिया आदि मेरमेर कै भोजन औ मिठाई कै भरमार । लरिकेबच्चे नयाँ नयाँ कपड़ा औ खेल तमाशा मे मस्त रहें । लेकिन, प्राणनाथ के घरे दुसरै माहौल कै रचना किहे रहें सविनय । रिसियाइकै औ ठुसुकिकै अङना मे बइठा रहा । बहुतै मानमनौती तब्बो मनबै नाही करत रहा । बाति रहा नवाँ सियाइकै आवा कोट कै । प्राणनाथ सदरमुकाम पठाइकै सविनय के खातिर शुद्ध करिया काशमीरा कै कोट सिउवाय दिहे रहें । सात रूपया कै कपड़ा तीन रूपया सिलाई, जम्मा १० रूपया परा कोट के खातिर । नोकरचाकर लोग आँखि फइलाइकै देखिन "दश रूपया ? औ सिलाई तीन रूपया ? हरे भगवान दुइ आना मे ब्लाउज, चार आना कमीज दुइ आना मे जङहिया सिई देत है, यी तो केतना महङा ? कहतै दाँत तरे जीभ दबावत हैं लेकिन सविनय अपने जिद्द पर अड़ा रहा । रङ्ग लाल कहे रहेन, करिया काहे ? वकर यिहै जिद्द रहा । बापमहतारी नोकर केहु नाही मनाय पाइन । यतनै मे हजाम आये । वनही बालक का गोद मे उठाइन औ कोट हाथेम लइकै मनावै के खातिर कनफुस्की करै लागें । दूसर कोट काल्है बनाय देय के कबूलो किहिन । बालक के

मन मे कुछ तिहा भवा औ कोट बुढ़वा के हाथ से अपने हाथेम लइकै “तब हम येका फुकि देइत है ।” कहतै नेरवै जलत रहा चुल्हा पर झप्प से फेकि दिहिस । बेटवा के जिद्द से हैरान होइकै वहीं बइठि रही यशोदादेवी झटपट कोट चुलहा पर से उठाय लिहिन । कमै जरा रहा । काम लागै वाला देखिकै प्राणनाथ ‘हो हो’ कइकै बड़ा जोर से उन्मुक्त हँसी हँसत कहिन “तयँ तो कोटियै भर फुके लेकिन हम, ? पिताजी कै लाय दिहा लाला किनारा कै उज्जर धोती, दुइ आना दाम परा रहा वहि जमाना मे ? बुझत हस, हम दाँतवै से फारिकै दुइ टुका कइकै गदहा का ओढ़या दिहे रहेन ।” कहतै बरबरात बहरे बइठक के ओर चलि दिहिन । वहि घटना से पहिले भाँदव महीना मे दूसरो घटना घटि चुका रहा । *(अयोध्या प्रसाद श्रीवास्तव)*

१. सुनाई पाठ २ सुना जाय औ खाली जगही में कवन शब्द लिखै के परी बतावा जाय ः

(क) यहि वर्ष कै देवारी कै .... बहुतै धुमधाम के साथ मनाय गै ।

(ख) बहुतै .... तब्बो मनबै नाही करत रहा ।

(ग) बापमहतारी .... केहु नाही मनाय पाइन ।

(घ) दूसर कोट काल्है बनाय देय के .... किहिन ।

(ङ) यशोदादेवी .... कोट चुलहा पर से उठाय लिहिन ।

२. सुनाई पाठ २ के आधार पर दिहा प्रश्न कै उत्तर बतावा जाय ः

(क) कइसन पकवान कै भरमार रहा ?

(ख) ककरे खातिर कपड़ा सिउवाय गै रहा ?

(ग) के कनफुस्की करै लाग ?

(घ) चुल्हा पर काव फेकि दिहिन ?

(ङ) बइठक के ओर के चलि दिहिस ?

सिर्जना औ परियोजना कार्य

१. अपने घर के परिवार के कवनो सदस्य से कथा सुनिकै वकरे बारे मे लिखा जाय औ कक्षा मे सुनावा जाय ।

२. पुस्तकालय मे ऐतिहासिक घटना से सम्बन्धित सामाग्री अध्ययन कइकै बुँदागत रूप मे टिपोट किहा जाय औ एक कथा कै रचना कइकै कक्षा मे सुनावा जाय ।

समाजसेवी भगवानदास गुप्ता

- -जीवनाथ पाण्डेय

समाज में कुछ व्यक्ति अइसन होत हैं । जे अपने काम से दुसरे का प्रेरित करत हैं । समाज मे अपने विचार, काम औ **सङ्घर्ष** के माध्यम से पहिचान बनावत हैं । मनई कै चाहना, अठोट औ **लगनशीलता** के सामने तमाम कठिनाई खुद बा खुद हार मानत है । औ वन्है हरेक तहपर सफलता मिलत है । अइसै तमाम अवरोध का पार करत सफलता कै सीढ़ी चढ़ै वाले मध्ये कै एक रहें- भगवान दास गुप्त । जेकरे जीवन कै पल्ला खोला जाय, तो त्रिकोणिय व्यक्तित्त्व देखात है । वहि व्यक्तित्त्व का हमरे एक समाजसेवी, राजनीतिकर्मी औ किसान नेता के रूप में जाना जात पहिचाना जात है ।

भगवान दास गुप्त कै जन्म वि.सं.१९९६ साल पुस १७ गते सोमवार के भवा रहा । यिनकै जन्मस्थान वर्तमान मे कपिलवस्तु नगरपालिका, वार्ड.नं. २ **मउजा** ठुलो बरगदवा होय । यनके मातापिता नाँव रामदुलारी साहु औ पशुपति प्रताप साहु रहा । यनके तीन भाई औ दुइ बहिन रहीं । पाँचो जने मध्ये यन सब से बड़ा रहें । यनकै वियाह उर्मिला गुप्त से भवा रहा । यनके तीन बिटिया औ एक वेटवा रहें । वनकै आपन मुख्य पारिवारिक व्यवसाय औ खेतीपाती रहा । वन एक अच्छा किसान परिवार के रहें । अपने पेशा कै जानकार रहें । वही समय लोगन कै घर माटी, खपड़ा औ छपरा कै रहत रहा । वही घरि वन इटा भट्ठा चलावत रहें । यकरे साथे ठेक्कापट्टा कै काम करत रहें । शिक्षा कै सुरुवात कपिलवस्तु के सदरमुकाम में अवस्थित बुद्धपद्म माध्यमिक विद्यालय से भवा रहा । उच्च शिक्षा भारत के बलरामपुर से सम्पन्न भवा रहा ।

समाज कै भलाई औ जिला कै विकास करै के उद्देश्य लइकै वि.सं. २०२० साल में राजनीति में कदम बढ़ाइन । गावँ से लइकै राज्य कै मुख्य केन्द्र तक पहुचे । राजनीतिक यात्रा कै सुरुवात वडा अध्यक्ष पद से किहिन रहा । यकरे साथै अलग अलग संघसंस्थौ में रहिकै समाज में आपन योगदान दिहिन रहा । नेपाल सरकार के लगानी में बना पहिला सड़क 'मर्यादपुर-तौलिहवा सड़क' बनुवावै में सफल भवा रहें । जिला भर में कइयो सड़क, सिचाई योजना, पुल्ह, विद्यालय, अस्पताल, बाल मन्दिर, कपिलवस्तु बहुमुखी क्याम्पस लगायत कइयौ संघसंस्था कै स्थापना अपने अगुवाई किहिन रहा । यी सब से प्रमाणित होत है- वन हर समाज, हर वर्ग के खातिर काम करत रहें ।

आज के समय में जहाँ लोग गलत तरीका से आय आर्जन कइकै चलअचल सम्पत्ति जोड़त है । वहीं गुप्ता अपने जिला के विकास के खातिर पैतृक सम्पत्ति दान दिहे रहें । सदरमुकाम मे विद्यालय औ अस्पताल बनुवावै के स्थानीय अगुवा लोग से सहकार्य किहिन । लोगन का खेती करै के खातिर सिचाई कै कवनो सुविधा नाही रहा । यिहां के लोगन का भगवान भरोसे खेती करै के परत रहा । गुप्तजी आपन अट्ठाइस विगहा जमीन जगदीशपुर ताल बनावै खातिर दिहिन । यही ताल में वाणगंगा नदी का बान्हि कै पानी लावा गै । ताल के पानी से **योजनाबद्ध** ढंग से वाणगंगा सिचाई योजना कै सुरुवात भै । यहि सिचाई योजना का सुरू करुवावै मे गुप्ता कै विशेष योगदान रहा । यी ताल मानव निर्मित नेपाल कै सब से बड़ा सिमसार होय । यहिमे चिरइन के संरक्षण खातिर युनेस्को के द्वारा '**रामसार क्षेत्र**' घोषित कइ गा है ।

भगवानदास गुप्ता जीवनभर सामाजिक सदभाव कायम राखै औ भेदभाव के खिलाफ काम किहिन । नारी **शिल्पकला** केन्द्र कै स्थापना हुनर सिखावै कै काम कै सुरुवात करवाइन । जवने से स्थानीय महिला लोगन का **स्वावलम्बी** बनावै में विशेष किसिम से योगदान पहुचा । यही किसिम से तौलिहवा औ बरगदवा में रहै वाले मुस्लिम समुदाय कै आपन कव्रिस्तान नाही रहा । अपनै जमिन दइकै **कव्रिस्तान** बनुवाय दिहिन । अइसै कहार जाति के लगे अपने कुलदेवता कै पूजा करै खातिर जमिन दइकै सहयोग किहिन रहा । गुप्ता सब धर्म, जाति औ समाज के प्रति समान व्यवहार करत रहें । सब के आवश्यकता कै खयाल करत रहें ।

वि.सं. २०४६ साल के प्रजातान्त्रिक **जनआन्दोलन**के समय मे सक्रिय सहभागिता जनाये रहें । जन अपेक्षाप्रति यनकै सम्मान औ समर्थन रहा । जनभावना का कवनो लाठी औ बन्दुक कै गोली नाही दबाय सकत है । यहि कथन पर गुप्ता विश्वास करत रहें ।

इमान्दारिता यनके जीवन कै एक महत्त्वपूर्ण पूँजी रहा । जवने कै परिचय अपने जीवन के अलग अलग कालखण्ड में देत आय रहें । सुकुम्बासी समस्या समाधान आयोग दाङ कै अध्यक्ष बनें । बेघर लोगन का जमीन कै व्यवस्था करुवाय कै गाँव बसाइन । यिनकै कथन रहा- "**इमान्दारिता** बिना समाज कै उत्थान औ विकास सम्भव नाही है ।" समाजसेवा के निरन्तरतै के क्रम मे वि.सं. २०५५ साल कातिक २८ गते गुप्ता कै निधन होइ गवा । स्थानीय समाज, कृषि औ राजनीति कै एक खम्बा टुटि गवा । आजौ येकर **आभास** यहिँकै स्थानीय समाज कै लोग करत हैं ।

मनई कै कर्म वनके जीवन का सुशोभित कइ देत है - यी गुप्ता के जीवन से स्पष्ट होत है । आजौ के दिन में गुप्ता कै योगदान कपिलवस्तु जिला के कोना कोना मे लोग महसूस करत हैं । समाजसेवा, राजनीति, इमान्दारी औ त्याग के क्षेत्र मे भगवान दास गुप्ता कै नाँव लोग श्रद्धा से प्रेरणा के रूप मे लेत रहि हैं ।

शब्दार्थ

सङ्घर्ष	:	टकराव, स्पर्द्धा
लगनशीलता	:	एकाग्रता, तल्लीनता
व्यक्तित्व	:	व्यक्ति कै विशेषता या गुण, विशेष गुण, असामान्य विशेषता
त्रिकोणिय	:	जवने में तीन कड़ी होत होय
स्वावलम्बी	:	स्वावलंबन के भावना से युक्त, आत्मनिर्भर
मउजा	:	गाँव
प्रेरणादायी	:	प्रेरणा देय वाला, प्रेरक
योजनाबद्ध	:	योजना में बँन्हा, योजनामय
रामसार क्षेत्र	:	सिमसार औ पंक्षी कै संरक्षित प्राकृतिक सम्पदा क्षेत्र
शिल्पकला	:	दस्तकारी का कौशल
कब्रिस्तान	:	लहासि गाड़ै के खातिर एक नियत स्थान
जनआन्दोलन	:	जनता कै आन्दोलन
इमान्दारिता	:	विश्वसनियता

शब्द भण्डार

१. नीचे दिहा विपरीतार्थी शब्द के बीच जोड़ा मिलावा जाय :

अँजोर	दिन
पूरब	रुकब
दहिना	उत्थान
रात	अन्हियार
बहब	पच्छु
पतन	बायाँ

२. नीचे दिहा शब्द कै विपरीत अर्थ पाठ से खोजिकै लिखा जाय :

जन्म, मउजा, असफल, अन्त, कम, विभेद, चल

३. नीचे दिहा शब्द प्रयोग कइकै वाक्य बनावा जाय :

स्थानीय, भेदभाव, योजना, सुविधा, पैतृक, योगदान, महसूस

बोध औ अभिव्यक्ति

१. दिहा शब्द कै शुद्धता के साथ उच्चारण किहा जाय :

सङ्घर्ष, व्यक्तित्त्व, स्वावलम्बी, शिल्पकला, कव्रिस्तान, पैतृक

२. 'समाजसेवी भगवानदास गुप्ता' जीवनी कै सस्वर पठन किहा जाय ।

३. 'समाजसेवी भगवानदास गुप्ता' के जीवनी के आधार ठीक है कि बेठीक उचित चिह्न लगावा जाय :

(क) '**समाजसेवी भगवानदास गुप्ता**' कै जीवन त्रिकोणिय व्यक्तित्त्व के रूप में देखात है ।

(ख) वि.सं. २०२० साल से केत के ओर कदम बढाइन ।

(ग) सुकुम्बासी समस्या समाधान आयोग दाङ कै अध्यक्ष नाही बनें ।

(घ) नेपाल सरकार कै अपने लगानी में बनावा पहिला पक्की सड़क 'मर्यादपुर-तौलिहवा सड़क' बनुवावै में सफल भा रहें ।

(ङ) यहिमे चिरइन के संरक्षण खातिर युनेस्को के द्वारा '**रामसार क्षेत्र**' घोषित कइ गा है ।

४. 'समाजसेवी भगवानदास गुप्ता' के जीवनी पढ़िकै दिहा प्रश्न कै मौखिक उत्तर बतावा जाय :

(क) गुप्ता के बाल्यकाल कै नाँव काव रहा ?

(ख) भगवानदास गुप्ता कै जन्म कहाँ भवा रहा ?

(ग) गुप्ता समाज सेवा के अतिरिक्त आउर काव काव करत रहें ?

(घ) के करे खातिर कब्रिस्तान बनुवाय दिहिन ?

(ङ) जनभावना के बारे मे गुप्ता कै कथन काव रहा ?

५. 'समाजसेवी भगवानदास गुप्त' के जीवनी का पढ़िकै दिहा प्रश्न कै सङ्क्षिप्त उत्तर लिखा जाय :

(क) गुप्ता कै जन्म कब भवा रहा ?

(ख) गुप्ता के समय के कहाँ कै सडक बना रहा । ?

(ग) '**समाजसेवी भगवानदास गुप्त**' महिला लोगन का स्वावलम्बी बनावै खातिर केतकै स्थापना करुवाइन ?

(घ) वाणगंगा सिचाई योजना कै सुरुवात कइसै भवा ?

(ङ) कहार जाति का केतके खातिर जमीन दिहिन ?

६. भाव विस्तार किहा जाय :

"इमान्दारिता बिना समाज कै उत्थान औ विकास सम्भव नाही है ।"

७. **'समाजसेवी भगवानदास गुप्त' के जीवनी कै सार लिखा जाय ।**

८. **'समाजसेवी भगवानदास गुप्त' के योगादन कै टिपोट बनावा जाय ।**

९. **नीचे दिहा अनुच्छेद निर्देशानुसार किहा जाय ः**

संस्कार

- नागेन्द्र प्रसाद यादव

विद्यालय कै सब से अव्वल छात्र राहुल कक्षा एक से दस तक लगभग प्रथम होतै आवत रहा । गुरुवर्ग कै माया औ ममता रहबै किहा । एसईई परीक्षा मे सबसे ज्यादा नम्बर सामाजिक मे आवा देखात रहा । एक दिन कै बात होय । काम विशेष से राहुल बजार जाय के सोचिस । बजार जाइकै बस मे सवार भवा । बस कै अगिला औ बढ़िया सीट पै बइठा । बस छुटै के कुछ समय बाँकी रहा । ठीक वही समय पे करीब ७०-८० वर्ष कै बुढ़िया आजी बजार जाय के खातिर बस मे चढ़ीं । आदमिन से बस भरा रहा । यानि की बस कै सीट खाली नाही रहा । राहुल यी तमाम बातिन का लगातार देखत रहा । आजी कइहाँ बइठै कै जगही नाही रहा । वन बड़े मुस्किल से सीट कै डन्डी पकरे खड़ि रहीं । आजी कै समस्या देखै के बादौ राहुल आजी के खातिर जगह नाही छोड़िस । स्कुल में सामाजिक विषय मे ए प्लस नम्बर लावै वाला राहुल मे यी समझ नाही पाय कि आजी के खातिर जगह छोड़ै के चाहीं ।

१०. **आप के सामने अइसन अवस्था आवै तो काव करै के चाहीं औ काहे ? कारण सहित कक्षा में सुनावा जाय ।**

भाषिक संरचना औ वर्ण विन्यास

१. **नीचे दिहा अनुच्छेद पढ़ा जाय औ लेख्य चिह्न पहिचान कइकै वकर नाँव लिखा जाय ः**

अमरुत के पेड़ पर धँवरखा कै खोता रहा । खोता के किनारे डारि पर साँप चढ़ि गवा । खोता बचावै के खातिर राम दउरा । वका दउरत देखिकै श्याम पुछिस,"ए,

राम काहे दउरत हौ ?" बाप रे बाप ! अब्बै सपँवा धँवरखा कै अण्डा खाय लेई । "धँवरखा कै अण्डा !" श्याम आश्चर्य चकित भवा । उहौ राम के पाछे दउरा हाथ मे डण्डा लइकै । श्याम के हल्ला सुनिकै राजू, रतन, औ घनश्यामो दउरे । यतनै मे बाबा आइकै कहिन, "साँप का नाही मारै के चाहीं; डेरुवाइकै भगाय देव ।" साँप औ धँवरखा दुनौ बचि गये, गजब ! कै बाति ।

२. **पूर्णबिराम, अल्पबिराम, प्रश्नवाचक, अर्धबिराम, औ उद्धरण चिह्न कै प्रयोग कइकै अनुच्छेद लिखा जाय ।**

३. **शब्द के सुरु, बीच औ अन्तिम मे ह्रस्व उकार प्रयोग भवा शब्ब्ल अलगअलग तालिका बनाइकै लिखा जाय :**

सुपारी, कपुरी, जलवायु, लहसुन, भावुक, सुनहरा, पल्लु, बटुला, भुरुकी, सुहावन, खराउँ, उपटन, बगुली, बिजुरी, पुल्ह, कबुतर, खुरपी, कचुर, कुन्दन, पखुरा, गरजु, लोहरू

सुनाई औ बोलाई

सुनाई पाठ- ३

अवधी संस्कृति मे सावन महीना

- दिग्विजयनाथ मिश्र

सावन कै महीना अवधी संस्कृति मे विशेष धार्मिक औ सांस्कृतिक महत्त्व राखत है । सावन महीना भगवान शिव के सब से प्रिय महीना होय । यहिसे उपासना के खातिर अत्यन्त पवित्र मानि जात है । सावन महीना वर्षा ऋतु के दौरान आवत है । जब प्रकृति मे हरियाली भरपूर रहत है । मनोवैज्ञानिक हिसाब से सब ओर सकारात्मक ऊर्जा प्रदान करत है । सावन मे शिवलिङ्ग पर जलाभिषेक करब अत्यन्त शुभ मानि जात है । भक्त गंगा जल, दूध, शहद, औ अन्य पवित्र सामग्री से शिवलिङ्ग कै अभिषेक करत हैं । अइसन मान्यता है कि यहिसे भगवान शिव प्रसन्न होत हैं औ भक्तन कै सब मनोकामना पूरा करत हैं ।

सावन महीना मे प्रत्येक सोमवार के विशेष रूप से व्रत राखि जात है । यहि दिन भक्त निराहार रहिकै भगवान शिव कै आराधना करत हैं औ शिवमन्दिर मे जाइकै जल चढ़ावत

हैं । यी व्रत शिव भक्तन के खातिर अत्यन्त महत्त्वपूर्ण होत है औ अइसन करत के विशेष पुण्य प्राप्त होत है उलोग कै विश्वास है । सावन मे कांवड़ यात्रा कै विशेष महत्त्व है । यहि यात्रा मे भक्त लोग नदी से जल कांवड़ मे भरिकै लम्मा यात्रा करत हैं औ येका शिवलिङ्ग पर चढ़ावत हैं । यी यात्रा भक्ति औ समर्पण कै प्रतीक होय ।

सावन कै महीना धार्मिक दृष्टि से भर नाही महत्त्वपूर्ण है, यकर हमरेन के समाज मे सांस्कृतिक महत्त्व वतनै है । यहि महीना मे तमाम मेर कै सांस्कृतिक कार्यक्रम, मेला औ उत्सव कै आयोजना होत है । विशेष रूप से नागपञ्ची, रक्षाबन्धन जइसन तिउहार यहि महीना मे मनाय जात है । जवन प्रकृति औ पारिवारिक एकता कै परिचायक होय । सावन के अन्तिक हप्ता मे रक्षाबन्धन तिउहार परत है । यहि दिन बहिन लोग अपने भाइन के हाथ मे राखी अर्थात रक्षासुत्र बान्हत हीं औ लम्मा आयु औ सुख-समृद्धि कै कामना करत हीं । एक दुसरे कै रक्षा करै के संकल्प लेत हैं ।

सावन कै महीना वर्षा ऋतु कै समय होय । जवने समय प्रकृति अपने पूरे यौवन पर होत है । यहि महीना मे पेड़-पवधा हराभरा होय जात हैं । चारौ ओर हरियाली छावा रहत है । साल भर खाय वाला अन्न उगावै के यी मुख्य महिना होय । सावन के महीना मे होय वाला वर्षा से भूमि कै उर्वरता बढ़त है औ फसल का आवश्यक पानी मिलत है । यी महीना किसान के खातिर अत्यन्त महत्त्वपूर्ण होत है काहेकी यहि दौरान फसल कै रोपाई औ देखभाल करत हैं । साल भर खाय वाला धानबाली उत्पादन करत हैं ।

सावन के महीना मे पर्यावरण संरक्षण के प्रतिउ लोग कै जागरुकता बढ़त है । यहि दौरान वृक्षारोपण जइसन कार्यक्रम कै आयोजना होत है । जवने से पर्यावरण कै सुरक्षा औ हरियाली का बढ़ावा मिलत है । सावन महीना हमरेन के अवधी समुदाय मे विशेष धार्मिक औ सांस्कृतिक महत्त्व राखत है ।

१. सुनाई पाठ-३ के आधार पर दिहा प्रश्न कै उत्तर बतावा जाय :

(क) सावन महीना कै कइसन महत्त्व है ?

(ख) रक्षाबन्धन पर्व केकर केकर पर्व होय ?

(ग) पर्वतिउहार केतकै परिचायक होय ?

(घ) सावन महीना कै कइसन महत्त्व है ?

२. **अवधी समुदाय मे सावन महीना मे काव काव कइ जात है बतावा जाय ।**

सिर्जना औ परियोजना कार्य

१. **नीचे दिहा बुँदा के आधार पर छोट कै जीवनी तइयार करा जाय :**

नाम :	श्यामानन्द सिंह ठकुरी
उपनाम :	वर्तमान
जन्म मिति :	वि.सं. २०१२ असाढ २१ गते
जन्मस्थान :	नेपालगञ्ज उपमहानगरपालिका-५, (अहिले-७)
मातापिता :	स्व. लक्ष्मीदेवी सिंह/स्व. विष्णुदत्त सिंह
शिक्षा :	हाई स्कूल बोर्ड
योगदान :	मेलेरिया विभाग, जनस्वास्थ्य, कोष तथा लेखा नियन्त्रक विभाग, नापतौल कार्यालय, नेपालटेलिकम
रुची :	संगीत, चित्रकला, हस्तकला, गायन, नाटक
सम्मान :	- वि.सं.२०७० मा विशेष पुरस्कार, नेपाल ललितकला प्रज्ञाप्रतिष्ठान -वि.सं. २०७१ म क्षेत्रीय पुरस्कार संस्कृति तथा नागरिक उड्डयान मन्त्रालय
आवद्धता :	सरस्वती संगितालय नेपालगञ्ज

२. **अपने परिवार के एक जने सदस्य कै जीवनी लिखिकै कक्षा मे सुनावा जाय ।**

सपना पुस्तक सदन

लुम्बिनी, वा.नं. १, रूपन्देही

पत्र सं. ११५ मिति २५/१२/२०८१

श्री बिक्री कक्ष,

नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठान, कमलादी, काठमाडौं ।

विषय : पुस्तक भेजि देय के सम्बन्ध मे ।

महोदय,

हमरे विगत पाँच वर्ष से रूपन्देही औ कपिलवस्तु जिला में, वहि **प्रतिष्ठान** से **प्रकाशित** अवधी भाषा औ **संस्कृति** से सम्वन्धित किताबिन का बेचत आवा गा है ।

आप के यिहा से अवधी भाषा औ संस्कृति पर आधारित प्रकाशित किताबिन कै माग **अत्यधिक** होय के नाते, तपसील अनुसार कै पुस्तक लुम्विनीं आवै वाले सिद्धार्थ यातायात के बस से **यथाशीघ्र** भेजै कै अनुरोध करित हन ।

प्रतिष्ठान कै पुस्तक बिक्री कै नियमानुसार यी सबकै मूल्य वापत कै **पेश्की रकम** ३५,५६० (पैतिस हजार पाच सय साठ) यहि संस्था के खाता से प्रतिष्ठान के खाता में भेजा जाय चुका है । वहि रकम कै बैङ्क भाउचर यही के साथ संलग्न किहा है । बाकी कै भुक्तानी रकम सामान पावै के बाद **शीघ्रातिशीघ्र** भुक्तानी किहा जाई ।

सहयोग के खातिर धन्यवाद !

भवदीय

सपना चौधरी

संस्थापक

तपसिल

क्र.सं.	पुस्तक	लेखक	थान
१.	प्रज्ञा अवधी नेपाली अङ्ग्रेजी शब्दकोश	-	२००/-
२.	अवधी लोकसाहित्य	विक्रम मणि त्रिपाठी	२५०/-
३.	अनुदित अवधी कथा	विक्रम मणि त्रिपाठी	२००/-
४.	अनुदित अवधी निवन्ध	विक्रम मणि त्रिपाठी	२५०/-
५.	दवङरा वर्षिक पत्रिका		१००/-

लिफाफा कै नमुना

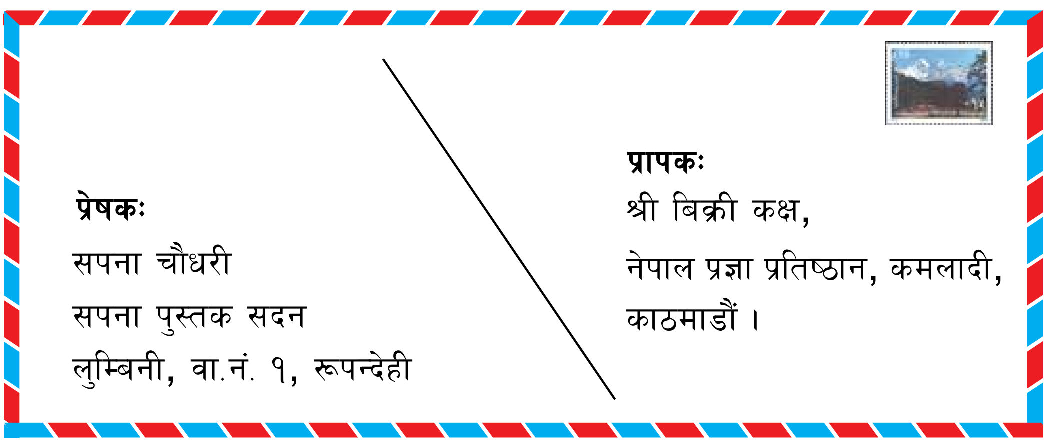

शब्दार्थ

प्रकाशक : प्रकाशित करै वाला

प्रतिष्ठान : संस्थान

अत्यधिक : हद से ज्यादा

यथाशीघ्र : जेतना जल्दी होइ सकै वतना जल्दी

लिफाफा : चिठ्ठीपत्र धइकै भेजै वाला कागज से बना थैली

शीघ्रातिशीघ्र : बहुत जल्दी, अविलंब

प्रापक : पावै वाला, प्राप्तकर्ता

संस्थापक : स्थापना करै वाला व्यक्ति

शब्द भण्डार

१. नीचे दिहा शब्द कै अर्थ लिखा जाय :

दवङरा, लोकसाहित्य, अनुरोध संस्कृति, भुक्तानी, भउचर

२. कोष्ठक में दिहा शब्दन मध्ये उचित शब्द चुनिकै खाली जगही में भरा जाय :

(क) हमरे प्रतिष्ठान से प्रकाशित अवधी भाषा औ .... से सम्वन्धित किताबिन का बेचत आवा गा है । (साहित्य, संस्कृति, समाज)

(ख) हमरे यिहा से अवधी भाषा औ संस्कृति पर आधारित प्रकाशित किताबिन कै माग ....है ।

(अत्यधिक, शीघ्रातिशीघ्र, व्यापक)

(ग) यहि संस्था के खाता से प्रतिष्ठान के खाता में ....भेजा जाय चुका है । (भुक्तानी रकम, जम्मा रकम, पेश्की रकम)

(घ) यी ....लुम्विनीं आवै वाले सिद्धार्थ यातायात के बस से यथाशीघ्र भेजै कै अनुरोध करित हन ।

(ङ) वहि रकम कै बैङ्क........यही के साथ संलग्न किहा है ।

(भाउचर, वैङ्क स्टेटमेन्ट, जानकारी)

३. नीचे दिहा वाक्य मे रहा वइसै वइसै सुनि मिलै वाला लेकिन फरक अर्थ देय वाला शब्द कै टिपोट करा जाय :

(क) राम नदी तिर खड़ा होइकै तीर चलाइन ।

(ख) बीस रूपया दइकै तरकारी लिहिन, आवत के रास्ता बिष कै डब्बा परा रहा ।

(ग) खाली बाल्टी दुवारा पर न धरौ, उ खालि अपने बाति करत है ।

(घ) वकर जाति नाही पुछेन, हम घरे जात रहेन ।

बोध औ अभिव्यक्ति

१. दिहा शब्द कै शुद्ध उच्चारण किहा जाय :

प्रतिष्ठान, यथाशीघ्र, शीघ्रातिशीघ्र, संस्थापक, संस्कृति, प्रकाशित, प्रेषक

२. 'व्यवसायिक चिठ्ठी' पाठ कै संरचना के बारे मे कक्षा मे सुनावा जाय ।

३. 'व्यवसायिक चिठ्ठी' पाठ पढ़िकै दिहा प्रश्न कै मौखिक उत्तर बतावा जाय :

(क) चिठ्ठी कवने मिति में लिखा गा है ?

(ख) अवधी भाषा औ संस्कृति से सम्वन्धित किताबिन का के बेचत आ है ?

(ग) पाठ कै व्यवसायिक चिठ्ठी के का लिखि गा है ?

(घ) कवन कवन किताबिन का यथाशीघ्र भेजै कै अनुरोध किहे हैं ?

४. नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठान के तरफ से सपना पुस्तक सदन का जबाबी चिठ्ठी लिखा जाय ।

५. नीचे दिहा शुभकामना के ढाँचा पढ़िकै अपने साथी के खातिर जन्मदिन कै शुभकामना पत्र तयार किहा जाय :

रङ्ङ कै तिउहार होली के यहि पावन अवसर पर लुम्विनी सांस्कृतिक नगरपालिका निवासी समस्त महानुभाव लोगन के सुख, शान्ति, समृद्धि के साथै उत्तरोत्तर प्रगति कै हार्दिक मंगलमय शुभकामना व्यक्त किहा जात है ।

नगरपालिका प्रमुख औ समस्त नगरपालिका परिवार
लुम्विनी सांस्कृतिक नगरपालिका, लुम्विनी
रूपन्देही, लुम्विनी प्रदेश

६. दिहा अनुच्छेद पढ़िकै पुछा प्रश्न कै उत्तर लिखा जाय :

काठमाडौं, २३ पुस २०८० : राष्ट्रिय समाचार समिति (रासस)समाचार सामग्री कै समावेशीकरण औ विविधीकरण करतै आज से अवधी भाषा(मातृभाषा)मा समाचार सेवा सुरू किहिस है। रासस केन्द्रीय कार्यालयमा आयोजित कार्यक्रममा सञ्चार तथा सूचना प्रविधि मन्त्री रेखा शर्मा अवधी समाचार सेवा कै सुरुवात किहिन।

नेपालगञ्ज उपमहानगरपालिका के सहकार्य मा अवधी भाषा कै समाचार सेवा सुरू करै कै बात रासस कै महाप्रबन्धक सिद्धराज राई जानकारी दिहिन। वन मातृभाषा मा समाचार सम्प्रेषण कइकै रासस राज्य कै समावेशी नीति कइहा प्रवर्द्धन करै के उद्देश्य से यहि कार्यक्रम का आगे बढ़ाए है,बताइन।

राष्ट्रिय जनगणना २०७८ मुताबिक नेपालमा १२४ मातृभाषा हैं। मध्य पश्चिम तराई मा बोली जायवाली अवधीभाषी नेपाल के कुल जनसङ्ख्या कै २.९६ प्रतिशत हैं।

प्रश्न

(क) राष्ट्रिय समाचार समिति कबसे अवधी भाषा (मातृभाषा) मा समाचार सेवा सुरु किहिस है ?

(ख) अवधी समाचार सेवा कै सुरुवात के किहिन ?

(ग) राष्ट्रिय समाचार समिति कै कार्यकारी अध्यक्ष धर्मेन्द्र झा का बताइन ?

(घ) केकरे सहकार्य मा राष्ट्रिय समाचार समिति अवधी भाषा कै समाचार सेवा सुरूवात किहिस ?

७. नीचे दिहा सन्दर्भ पढ़ा जाय औ सांस्कृतिक गतिविधिन का बचाये राखै खातिर आज के युवा पीढ़ी का काव काव करै के चाहीं ? छलफल कइकै कक्षा मे प्रस्तुत करा जाय :

हरेरी

हरेरी प्रथा धान बइठउनी के वरन्ता मे होय वाला एक पारम्परिक और सामुहिक कृषि गतिविधि होय। यी प्रथा धान रोपाई के समय किसानेन कै सामुहिक प्रयास औ सांस्कृतिक समृद्धि कै प्रतीक रहा। हरेरी प्रथा कै मुख्य तत्त्व सामुहिक सहयोग

रहा । हरेरी मे परिवार गांव कै मित्र, औ पड़ोसी मिलिकै एक-दुसरे का मदत करत रहें औ नाच गान करत खेत से जल लावत रहें औ गाव के मन्दिर मा चढ़ाय कै समापन करत रहें ।

हरेरी के दौरान बइठउनी करै वाली महिला औ हरवाह, बीयाँ काटै वाले पुरुष लोग लोक गीत गावत रहे औ पारम्परिक नाच करत रहे । हरेरी मे गावा गीत मे विशेष रूप से कृषि, प्रकृति, औ भगवान के महिमा कै वर्णन किहा जात रहा । हरेरी का धान के बइठउनी कै एक उत्सव के रूप में मनावा जात रहा । हरेरी मे सहभागी लोग कै सामुहिक भोजन होत रहा, जवन कि शाकाहारी रहत रहा ।

हरेरी प्रथा से सामाजिक एकजुटता समाज में सहयोग कै भावना बढ़ै के सथवै समुदाय में भाईचारा का मजबूत बनावत रहा । यी प्रथा किसानेन कै मनोबल बढ़ावत रहा औ मेहनत करै के लिए प्रोत्साहित करत रहा । हरेरी प्रथा धान कै बइठउनी भर न रहिकै एक सांस्कृतिक औ सामाजिक उत्सव में रूपमा देखात रहा जवने से किसानेन कै मेहनत औ लगनशीलता आउर ढेर महत्त्वपूर्ण होइ जात रहा ।

अब जनशक्ति के अभाव होतै कृषि क्षेत्रमा आवा आधुनिकता से कृषि उपज तो बढ़ा है, लेकिन हरेरी लगायत तमाम लोक गीत, सवनही कजरी, बइठउनी गीत आदि बिधा हेरात जात हैं ।

भाषिक संरचना औ वर्ण विन्यास

१. नीचे दिहा वाक्य पढ़ा जाय औ सङ्गतिके बारे मे छलफल करा जाय :

सङ्गति मिला वाक्य	सङ्गति न मिला वाक्य
(क) राधा खीसा कहत हीं ।	(क) राधा खीसा कहत है ।
(ख) बछियवा जात रहा ।	(ख) बछियवा जात रही ।
(ग) आप काव खाये ।	(ग) आप काव खावा गै ।
(घ) वन्हरे जात रहा ।	(घ) वन्हरे जात रहें ।

२. नीचे दिहा वाक्य कै सङ्गति मिलाइकै लिखा जाय ः

(क) रीता बुद्धिमान लड़िकी है ।

(ख) बिक्रम पैसा खाइस ।

(ग) भउजी कहत रहा ।

(घ) मोहन जात हीं ।

(ङ) भालू जात रहें ।

३. नीचे दिहा अनुच्छेद पढ़ा जाय औ शब्द के सुरु, बीच औ अन्तिम मे दीर्घ ऊकार प्रयोग भवा शब्द कै पहिचान कइकै टिपोट बनावा जाय ः

ऊर्जा पूजा कै थाली सजाइन । फूल, कपूर औ बाती अलगेअलगे धरिन । चन्दन, केशर औ अबिर कागज मे पुडिया बनाइन । एक सूप फल धोइके लाईं । पण्डितजीका फोन कइकै सूचना दिहिन । थाली ससजावत के उनका अपूर्व आनन्द आय । रङ औ चाउर के पिसान से शुभ कै सूचक रङ्गोली बनाइन । उनके घरे त्रिशूल है उहौ लाइकै धरिन । पण्डितजी आइकै पूर्व दिशा के ओर घुमिकै अपने अनुकूल बइठे ।

सुनाई औ बोलाई

सुनाई पाठ- ४

सच्चा मित्र

यहि दुनियाँ मे हम्मन कै बहुत रिश्ता बनत है । कुछ रिश्ता जन्म से ही होत है जइसै महतारी, बाप भाइ बहिन औ कुछ रिश्ता हमरे लोग खुद बनावा जात है । अइसै रिश्तन मे एक रिश्ता होय सच्चा मित्र कै ।

वास्तव मे खूनी रिश्ता के बावजूद हम्मन के जीवन मे एक सच्चा मित्र कै जरूरत रहत है । काहे कि कभी कभार अइसन समय आइन जात है । एक सच्चा मित्र आपक कष्ट

वा समस्या से बचाय सकत है । कुछ अइसन मोड़ मनई के जीवन मा आइ जात है कि वहि अवस्था मे परिवार से बेसी, एक सच्चा मित्र आप कै समस्या बुझिकै, आप का सही सलाह देत है औ मदत करत है । एक असल मित्र हमेशा सही रास्ता देखावै मे तल्लीन रहत है । ऊ मित्र के बारे मे सिर्फ अच्छा सोचत है । एक सच्चा मित्रै आप का आगे बढ़ै के प्रेरणा देत है । ऊ आप मे कइ सुधार लाय सकत है । हमरे लोगन का सोच समझि कै सच्चा मित्र बनावै के चाहीँ ।

१. सुनाई पाठ ४ सुना जाय औ दिहा प्रश्न कै उत्तर बतावा जाय :

(क) कवने कवने किसिम कै रिश्ता जन्म से होत हैं ?

(ख) खूनी रिश्ता के बावजूद हम्मन के जीवन मे आउर केकर जरुरत रहत है ?

(ग) एक असल मित्र हमेशा का देखावै मे तल्लीन रहत है ?

(घ) हमरे लोगन का का कइकै सच्चा मित्र बनावै के चाहीँ ?

२. एक सच्चा मित्र कवने कवने किसिम से सहयोगी होत है ? सुनाई पाठ ४ के आधार पर बतावा जाय ।

सिर्जना औ परियोजना कार्य

१. सीता स्टेशनरी, नेपालगञ्ज के खातिर तपसील अनुसार कै पुस्तक कै मांग करत जनक शिक्षा सामाग्री केन्द्र लिमिटेड का चिट्ठी लिखा जाय :

क्र.सं.	पुस्तक कै नाव	प्रकाशक	कक्षा	आवश्यक प्रति
१.	हमार भाषा अवधी	पाठ्यक्रम विकास केन्द्र, सानोठीमी	कक्षा १	२००० थान
२.	हमार भाषा अवधी	पाठ्यक्रम विकास केन्द्र, सानोठीमी	कक्षा २	१८०० थान

क्र.सं.	पुस्तक कै नाव	प्रकाशक	कक्षा	आवश्यक प्रति
३.	हमार भाषा अवधी	पाठ्यक्रम विकास केन्द्र, सानोठीमी	कक्षा ३	१६०० थान
४.	हमार भाषा अवधी	पाठ्यक्रम विकास केन्द्र, सानोठीमी	कक्षा ४	१५०० थान
५.	हमार भाषा अवधी	पाठ्यक्रम विकास केन्द्र, सानोठीमी	कक्षा ५	१५०० थान

२. **अपने गाँव के दुकान मे मिलै वाला सामान कै सूची बनावा जाय औ कक्षा मे प्रस्तुत किहा जाय ।**

महाकाव्य : रामचरितमानस

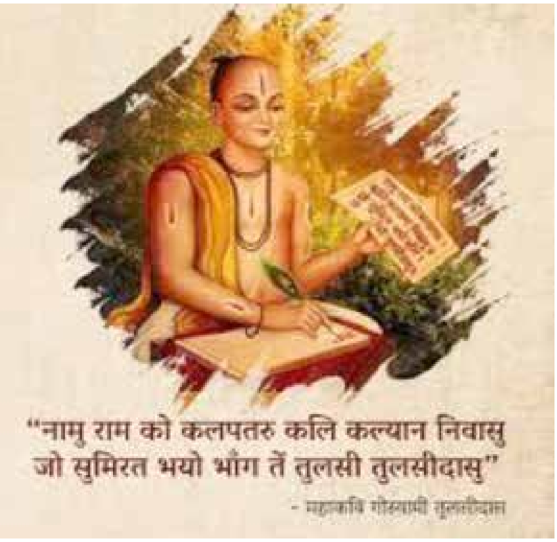

साहित्य मनई के एकरस जीवन कै उत्तम सङ्‌रिहा होंय । यी सच्चा मित्र के रूप में हमेशा पथ प्रदर्शन करत हैं । अच्छा साहित्य मानव के खातिर वास्तविक **पथ-प्रदर्शक** होय । मनई का साहित्य पढ़ै से आनन्द कै प्राप्ति होत है । हरेक भाषा के साहित्य में कुछ यइसन **कालजयी** रचना होत है, जवन अपने विषयवस्तु औ रचनाशैली के नाते जनता कै **कन्ठहार** बनि जात है । वहि भाषा कै लोग अपने वहि कृति पर गर्व करत हैं । अवधी भाषा में गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित रामचरितमानस अइसनै एक कालजयी कृति होय । जवने पर हरेक अवधीभाषी गर्व करत हैं । यी कृति जन जन का प्रभावित किहे है । येकर प्रत्यक्ष प्रमाण यी होय कि हरेक हिन्दू परिवार के घर में यहि कृति का स्थान मिला है । यिहै भर नाही, अपने **अमंगल** का **मंगलकारी** बनावै के खातिर यहि पुस्तक कै **अखण्ड पाठ** किहा जात है । श्री रामचरितमानस भक्ति काल के महाकवि गोस्वामी तुलसीदास के द्वारा रचित **महाकाव्य** होय । यहि पुस्तक कै रचना गोस्वामी तुलसीदास के द्वारा वि.सं. १६३१ में रामनवमी के दिने सुरु किहा गै औ दुइ वर्ष सात महिना छब्बिस दिन में वि.सं. १६३३ मार्गशीर्ष के शुक्ल पक्ष में यी पूरा भै । रामचरितमानस **मर्यादापुरषोत्तम** भगवान श्री राम के जीवन पर आधारित महाकाव्य होय । यहिमा राम कथा का सात काण्ड अर्थात बाल काण्ड, अयोध्या काण्ड, अरण्य काण्ड, किष्किन्धा काण्ड, सुन्दर काण्ड, लंका काण्ड औ उत्तर काण्ड मे पेश है ।

रामचरितमानस मे भले रामकथा होय, लेकिन कवि कै येका लिखै कै मूल उद्देश्य राम के चरित्र के माध्यम से नैतिकता औ सदाचार कै शिक्षा देब होय । तुलसीदास खुद स्वीकार किहे हैं कि यहमा अलग अलग पुराण, वेद औ शास्त्रन कै सार है :

'नाना पुराण निगमागम सम्मतं यद रामायणे निगदितं क्वाचिदन्यातो'ऽपि' ।

तुलसीदास जी के द्वारा येकर रचना लोक कल्याण औ **स्वान्तः सुखाय** के दृष्टि का **हृदयांगम** कइकै किहा गा है । यनकै यी मान्यता है कि राम वही के हृदय में निवास करत हैं जे नैतिक मुल्यन कै समर्थक औ सदाचारी होय । काम, क्रोध, लोभ, मोह औ दम्भ से दूर होय । दुसरे के दुःख में दुखी होयवाला औ दुसरे के सुःख में खुसी होय वाला मनइयै के हृदय में ईश्वर कै निवास होत है :

काम कोध मद मान न मोहा ।
लोभ न छोभ न राग न दोहा ॥

वस्तुतः रामचरितमानस सदाचार कै शिक्षा देय वाला एक महान ग्रन्थ होय । जवन हम्मन का सिखावत है कि हम्मन का **रावणत** आचरण नाही करै के चाहीं, **रामवत** आचरण करै के चाही ।

रामचरितमानस कै रचना लोक कल्याण के भावना से किहा गा है । तुलसीदास जी चाहत है कि लोग वनके ग्रन्थ का पढ़िकै सदाचारी बनैं । वनके हृदय कै कलुषपन नाश होय । वन में विश्व वन्धुत्त्व, सदभाव, सहयोग औ प्रेम के भावना कै विकास होय । तुलसीदास के यहि ग्रन्थ कै मूल भावना लोक कल्याण होय । ऊ कहत हैं :

कीरति भनिति भूति भल सोई ।
सुससरि सम सब कहँ हित होई ॥

तुलसीदास जी **लोकनायक** रहें औ वनकै रामचरितमानस समन्वय कै **चेष्ठा** करै वाला एक महान ग्रन्थ होय । जवने समय तुलसीदास कै जन्म भवा, वहि समय समाज में विषमता फइला रहा । समाज मे भेदभाव आदि तो रहबै कीन । यकरे साथै निर्गुण सगुण कै संघर्ष, शैव वैष्णव कै संघर्ष, ज्ञान भक्ति कै संघर्ष अपने चरम सीमा पर रहा । तुलसीदास जी दार्शनिक क्षेत्र में समन्वय के खातिर रामचरितमानस में कइउ प्रसङ्ग दुसरेव ग्रन्थ से लिहे हैं । भगवान राम जे खुद भगवान विष्णु कै अवतार होंय, कहत हैं :

शिव-द्रोही मम दास कहावा ।

सो नर मोहिं सपनेहुं नहि पावा ॥

यही किसिम से ज्ञान औ भक्ति कै समन्वय करत वन कहत हैं :

रामचरितमानस व्यवहार कै दर्पण होय । मनई का कइसन आचरण करै के चाहीं । येकर आदर्श स्वरूप रामचरितमानस में अलग अलग चरित्र के मार्फत दर्शावा गा है । आदर्श भाई, आदर्श पिता, आदर्श पत्नी, आदर्श पुत्र, आदर्श माता, आदर्श सेवक, आदर्श राजा औ आदर्श परजा कै स्वरूप रामचरितमानस में देखै के मिलत है । भरत आदर्श भाई हैं तो राम आदर्श पुत्र हैं । लक्ष्मण औ हनुमान आदर्श सेवक कै उदाहरण होंय तो कौशल्या आदर्श माता । यहमा राम आदर्श राजा हैं तो अयोध्या कै जनता आदर्श जनता होंय । तुलसीदास जी रामचरितमानस का एक अइसन दीपक के रूप में पेश किहे हैं, जवन अन्हियार पथ पर हम्मन का प्रकाश देत है ।

रामचरितमानस मे तुलसीदास जी रामराज्य कै परिकल्पना करत एक आदर्श शासन व्यवस्था कै स्वरूप पेश किहे हैं । कलयुग कै चित्रण करत वन अपने वहि युग कै बुराई कै चर्चा किहे हैं, तो वहि समय कै रामराज्य कै चित्रण करत आदर्श शासन व्यवस्था कै स्वरूप चित्रित किहे हैं । रामराज्य कै चित्रण करत आदर्श शासन व्यवस्था कै स्वरूप चित्रित किहे हैं । रामराज्य में राज्य के व्यवस्था कै चित्रण यहि पंक्ति में देखि सका जात है :

दैहिक दैविक भौतिक तापा ।

रामराज्य काहूहिं नहि व्यापा ॥

रामचरितमानस में नीति, भक्ति औ वैराग्य कै अदभुत सङ्गम है । व्यवहारिक ज्ञान कै जवन शिक्षा यहि ग्रन्थ में मिलत है ऊ आउर जगही नाही मिलत । मित्र के दुःख का दुखी न होय वाला स्वरूप आउर जगही नाही मिलत । मित्र के दुःख का देखिकै दुःखी न होय वाला व्यक्ति नीच है :

जे न मित्र दुख होहि दुखारी ।

तिन्हनिं विलोकत पातक भारी ॥

यही किसिम से एक जगही पर तुलसीदास कहत हैं कि यदि मन्त्री, वैद्य औ गुरू कवनो लोभ लालच या भय के नाते चापलुसी करत हैं औ ऊ लोग सत्यवचन नाही बोलत हैं,

तो वहि राजा कै राज्य, रोगी कै देहिं औ व्यक्ति कै धर्म अतिशीघ्र नष्ट होइ जात है :

सचिव वैद गुरु तीनि जो प्रिय बोलहिं भय आस ।

राजधर्म तन तीनि कर, होइ बेगही नास ॥

रामचरितमानस में तुलसी कै भक्ति दास्यभाव कै है । वन खुद का सेवक औ प्रभु राम का आपन स्वामी मानत हैं । साथै वनके चरण में निरन्तर रत रहै कै बरदान माङ्त हैं :

अरथ न धरम न काम रुचि, गति न चहौं निरवान ।

जनम-जनम रति राम पद, यह बरदान न आन ॥

रामचरितमानस अवधी कै श्रेष्ठतम महाकाव्य होय । यहि महाकाव्य में हरेक किसिम कै लक्षण विद्यमान है । कथा पौराणिक औ विस्तृत है । भगवान राम धीर वीर नायक हैं । यहमा श्रृङ्गार औ शान्त रस कै प्रधानता है । यी ग्रन्थ अवधी भाषा में लिखा उद्देश्यपूर्ण रचना होय । येकर कथा सात काण्ड में लिखा है । प्रवन्ध सौष्ठव, भाषा सौष्ठव, छन्द औ अलङ्कार विधान के दृष्टि से यी अद्वित्तिय ग्रन्थ होय । यहि कथा के मार्मिक जगहिन पर कवि कै विशेष पकड़ है ।

यहि विवेचना के आधार पर यी कहा जाय सकत है कि रामचरितमानस एक अद्वितिय ग्रन्थ होय । जवन सबके खातिर उपयोगी औ शिक्षाप्रद है । यिहै कारण होय कि आज से लगभग ३९२ वर्ष पहिले लिखा यी महाकाव्य आजौ के दिन में पूर्ण रूप से प्रसांगिक है । यिहै कारण होय कि आजौ यी काव्य बड़े चाव से पढ़ा सुना जात है ।

शब्दार्थ

पथ-प्रदर्शक	:	राहि या रस्ता देखावै वाला, मार्गदर्शक, रहनुमा
कालजयी	:	जे कब्बो न मरै या मृत्यु का जीति लिहे होय
कन्ठहार	:	गले कै हार
अमंगल	:	अकल्याण
मंगलकारी	:	कल्याणकारी
अखण्ड पाठ	:	कवनो धार्मिक ग्रंथ कै लगातार औ बिना रुके पाठ करब

महाकाव्य	:	बहुत बड़ा/ विस्तृत काव्य ग्रंथ
मर्यादापुरषोत्तम	:	मर्यादा युक्त चरित्रवान पुरुषन में जे उत्तम व सर्वश्रेष्ठ पुरुष
स्वान्तः सुखाय	:	जिससे स्वयं को आनंद प्राप्त होता हो
हृदयांगम	:	मर्मस्पर्शी, हृदयगत
रावणत	:	रावण जइसन व्यवहार करै वाला
रामवत	:	राम जइसन व्यवहार करै वाला
लोकनायक	:	लोक समाज कै नायक
चेष्ठा	:	प्रयास, कोशिश

शब्द भण्डार

१. 'महाकाव्य : रामचरितमानस' निबन्ध से नीचे दिहा अर्थ बुझावै वाला शब्द लिखा जाय :

(क) कवनो दुःख या कष्ट न रहा मानसिक अवस्था

(ख) नीति पर आधारित चेतना

(ग) असल आचरण या चालचलन

(घ) कवनो वस्तु या क्रियाकै पूर्णता

(ङ) चित्र उतारै वाला काम

२. नीचे दिहा शब्द पढ़िकै समावेशक औ समावेश्य शब्द बारे छलफल करा जाय :

(क) फल : अमरुत, केरा, लिची, आम, अङ्गुर

(ख) तरकारी : लौकी, कोंहड़ा, भिण्डी, तरोई, अरुवी

(ग) अनाज : धान, गोहुँ, जोन्हरी, धनकोदवा, जौ

(घ) बर्तन : थरिया, लोटा, गिलास, कटोरी, बटुला

(ङ) नदी : राप्ती, बाणगङ्गा, तिनाउ, दानव, बबई

(च) भाषा : अवधी, थारु, भोजपुरी, नेपाली, तामाङ

३. **नीचे दिहा उपयुक्त समावेशक औ समावेश्य शब्द के बीच जोड़ा मिलावा जाय :**

चिरई	वर्षा
धातु	विज्ञान
खेल	चुनरी
नदी	तामा
ऋतु	गुल्लीडण्डा
विषय	नारायणी
कपड़ा	नीलकण्ठ
	पहिया

बोध औ अभिव्यक्ति

१. **नीचे दिहा शब्द कै शुद्धता के साथ उच्चारण किहा जाय :**

पथ-प्रदर्शक, भगतिहिं, ग्यानहिं, वन्धुत्त्व, मार्गशीर्ष, काहूहिं, सौष्ठव, श्रृङ्गार

२. **'महाकाव्य : रामचरितमानस' निबन्ध का वसरीपारी सस्वर वाचन किहा जाय ।**

३. **'महाकाव्य : रामचरितमानस' निबन्ध का पढ़िकै पुछि गवा प्रश्न कै मौखिक उत्तर दिहा जाय :**

(क) मानव के खातिर वास्तविक पथ-प्रदर्शक का होय ?

(ख) रामचरितमानस कवने भाषा में लिखा है ?

(ग) जवने समय तुलसीदास कै जन्म भवा, वहि समय समाज में का फइला रहा ?

(घ) रामचरितमानस में तुलसीदास जी केतकै परिकल्पना किहे हैं ?

(ङ) रामचरितमानस कथा कै काण्ड में लिखा है ?

४. 'महाकाव्य : रामचरितमानस' निवन्ध कै "रामचरितमानस व्यवहार कै............हम्मन का प्रकाश देत है ।" अनुच्छेद का मनही मन पढ़ा जाय औ पुछि गवा प्रश्न कै उत्तर लिखा जाय :

(क) रामचरितमानस केतकै दर्पण होय ?

(ख) रामचरितमानस में काव देखै के मिलत है ?

(ग) रामचरितमानस में के आदर्श माता हिन ?

(घ) रामचरितमानस अन्हियार पथ पर हम्मन का काव देत है ?

५. 'महाकाव्य : रामचरितमानस' निबन्ध का पढ़िकै दिहा प्रश्नन कै सङ्क्षेप में उत्तर लिखा जाय :

(क) रामचरितमानस केकरे जीवन पर आधारित महाकाव्य होय ?

(ख) तुलसीदास कइसन शासन व्यवस्था कै स्वरूप पेश किहे हैं ?

(ग) रामचरितमानस केतकै शिक्षा देय वाला कइसन ग्रन्थ होय ?

(घ) तुलसीदास केतकै केतकै अदभुत सङ्गम कै बाति किहे हैं ?

(ङ) रामचरितमानस अवधी कै कइसन महाकाव्य होय ?

६. 'महाकाव्य : रामचरितमानस' निबन्ध के अन्तिम दुसरा अनुच्छेद से चार प्रश्न बनावा जाय ।

७. व्याख्या किहा जाय :

रामचरितमानस व्यवहार कै दर्पण होय ।

८. “रामचरितमानस में तुलसीदास जी रामराज्य कै परिकल्पना करत एक आदर्श शासन व्यवस्था कै स्वरूप पेश किहे हैं” यहि कथन का निबन्ध के आधार पर स्पष्ट किहा जाय ।

९. “तुलसीदास जी लोकनायक...........सपनेहुं नहि पावा ।” निबन्ध से मुख्य पाँच बुन्दा टीपा जाय औ सारांश लिखा जाय ।

१०. ‘महाकाव्य : रामचरितमानस’ निबन्ध कै सार सङ्क्षेप में लिखा जाय ।

११. ‘महाकाव्य : रामचरितमानस’ निबनध के आधार पर भगवान राम का मर्यादापुरुष काहे कहा जात है, समिक्षा किहा जाय ।

भाषिक संरचना औ वर्ण विन्यास

१. नीचे दिहा अनुच्छेद पढ़ा जाय औ गाढा रङ मे रहा शब्द के बारे मे छलफल करा जाय :

जयराम कै मुख्य पेशा पशुपालन **होय** । वन व्यवसायिक रूप मे पशुपालन **किहे हैं** । उनके हियाँ दश भइँसि **हीं** । छ ठू दूध देत हीं तो पाँच ठू नाही देत ही । उनके लरिकेन का दूध बढ़िया **लागत है** । भइँसि के खातिर एक बिगहा मे घास **बोये हैं** । जयराम दूध **बेचै** अपनेन **जात हैं** । कुछ पैसा जमा **कइकै** दुग्ध संकलन केन्द्र खोलै के योजना **बनाये हैं** ।

२. नीचे दिहा तालिका पढ़ा जाय औ तीनौ काल कै अउर पाँचपाँच ठू क्रियापद कै सूची बनावा जाय :

वर्तमान काल	भूत काल	भविष्यत् काल
जात है	गवा	जाई
आवत है	खाइस	आई
पढ़त है	पढ़िस	पढ़ी
लिखत है	लिखिस	लिखी

३. **कोष्ठक मे दिहा निर्देशन अनुसार वाक्य परिवर्तन कइकै लिखा जाय :**

(क) श्याम गेंदा खेली । (वर्तमान)

(ख) मामा घरे अइ हैं । (भूत)

(ग) काकी बेना बीनत हीं । (भविष्यत)

(घ) फुआ लालमोहन बनाइन । (भूत)

(ङ) भइया गाँव से आयें । (भविष्यत)

(च) कमला खेल देखै जाई । (वर्तमान)

सुनाई औ बोलाई

सुनाई पाठ- ५

उदास घर

वर्षों बिति गवा रहा छहरदिवारी बन्द रहा औ घर कै पल्ला नाही खुला रहा । राममिलन अङ्ना दुआरा बहारि जात रहें । एक ठु बत्ती सन्झा के आइकै बारि जात रहें । राममिलन अवधराज चौधरी के घर कै सिरवार रहें । खेतीपाती, गाय भँइस वनही के जिम्मा मे रहत रहीं । सुभद्रादेवी घरव्यवहार सम्हारे रहीं । लरिके बच्चे पढ़िलिखिकै सहरवै मे बसि गवा रहें । आपनआपन गृहस्थी सुरु कइ दिहे रहें । बिटियै अपने घरे चलि गइँ रहा ।

एक जने बाबु गाड़ी लइकै अवधराज से मिलै आयें । गाँव के वहि मोहल्ला मे गाड़ी आवै के नाते सब लोग देखै आयें । राममिलन वही भीड़ मे सामिल रहें । वय बाबु अवधराज के बारे मे पुछिन कि उलोग कहाँ चला गयें ? बहुत दिन के बाद मिलै के साइत बना तो केहु घर पर नाही है ।

कुछ देर उनकै बाति राममिलन ध्यान दइकै सुनिन औ कहिन,"अवधराज बाबु कै मलकिन अपने चलि बसीं औ अपने बिमार रहै लागें । लरिके गाँव मे आवै के नाही चाहिन तो वनहु सहर चलि गयें । हमहीं जवन रेखदेख कइ पाइत है कइ देइत है । हमरो जियै के

यिहै सहारा रहें । लेकिन अब कइ दिन तक देखि पाइब । हमहुँ अब अपने भीतर अकेलै रहित है । हवा डाकिया बनिकै धूरि, औ सुखान पातन कै लिफाफा दइ जात है । पता नाही कवनेकवने पेड़न कै पाता बटोरि लावत है ।"

सहरिया बाबु अङना मे चक्कार काटत यहरवहर निहारिन । पता नाही काव देखिन मनैमन मुस्कियाने औ कहिन,"सायद सबकै बुढ़ापा मे एक दिन अइसै लिखा रहत है ।"

सबेरा होय के बाद अङना के रास्ते घमनिया आपन दरी बिछाय देत है औ बन्द कोठरिन पर दस्तक देत है- केहु है भीतर ? फिर अपने आप थकि कै लउटि जात है । पल्ला पर लटका ताला चाभी कै राहि जोहत हैं । जइसै चाभिन से गले मिलै के खातिर बेचैन भवा होयं ।

१. सुनाई पाठ- ५ सुना जाय औ दिहा वाक्य ठीक है तो ठीक औ बेठीक है तो बेठीक बतावा जाय :

(क) एक ठु बत्ती सन्झा के आइकै बारि जात रहें ।

(ख) राममिलन अवधराज चौधरी के घर कै सिरवार नाही रहें ।

(ग) लरिके गाँव मे आवै के चाहिन तो वनहु सहर चलि गयें ॥

(घ) हमहुँ अब अपने भीतर अकेलै रहित है ।

(ङ) सबेरा होय के बाद अङना के रास्ते घमनिया आपन दरी बिछाय देत ह

२. सुनाई पाठ- ५ के आधार पर दिहा प्रश्न कै उत्तर बतावा जाय :

(क) घर कै पल्ला न खुले केतना दिन होय गवा रहा ?

(ख) सुभद्रादेवी काव समहारे रहीं ?

(ग) राममिलन केकर सिरुवार रहें ?

(घ) बन्द कोठरिन पर कवन चीज दसतक देत है ?

(ङ) पल्ला पर लटका ताला केकर राहि जोहत है ?

सिर्जना औ परियोजना कार्य

१. आप का बढ़िया लाग कवनो निबन्ध या कथा पर १५० शब्द मे निबन्ध लिखा जाय ।

२. रामचरितमानस सम्बन्धी आप कइसन बाति सुना गा है, सब बाति समेटिकै लिखा जाय औ कक्षा मे पेश किहा जाय ।

गुलर कै फूल

कार्तिक महीना मा पुन्वासी के दिन रहा । हरेक साल जेस अबकिरो गुरुवा गाँव के बाबाकुट्टी स्थान मा मेला कै चहलपहल रहै । बहुत दूरदूर से लोग मेला देखै आवत रहे । जहाँ मेला लागत रहा । वहीँ एक बहुत बड़ा तलाव औ बगिया रहा । बगिया मा मेला कै दुकान लागै । दुकान मा मिठाई, खेलौना, चाट पकौडी सब बिकात रहै । अइसै अउरो सामान कै दुकान लागत रहा । कुट्टी मा बाबारामदास पूरा **अलख** जगाये के धुनी लगाये बइठि रहत रहे । उनकै जटा बहुत लम्मा रहा । देहीं पूरा सुखान लकड़ी जस लेकिन आवाज बहुत तगड़ा रहै । उनका देखके लागै कि बहुत बड़े ज्ञानी, **तपस्वी** औ त्यागी हैं । मेला जात के हमहुँ देखे रहेन बाबा अपने चेला औ सेवक लोगन के साथे बइठि रहत रहें । मेला चलै तक कुट्टी मा भण्डारा बराबर चला करत रहा । लोग दानदक्षिना औ रासनपानी चढ़ावै आवत रहे । लोग कहत रहे- मेला मा बाबा कवनो मेरकै कमी होय नाही देत हैं । चाउर, दाल, घिउ, तेल, नोन, तरकारी सब भण्डारा के बद जुटि जाय । कुछ लोग कहैं कि बाबा बड़े **प्रतापी** हैं । वनही कै प्रताप से कवनो कमी नाही होत है ।

मेला वाली बगिया मा गुलर कै बहुत बड़ा पेड़ रहा । बगिया मा अउरो फलफूल कै पेड़ रहा लेकिन गुलर जस **झलार** कवनो नाही रहा । उ मेला मा कातिक नहान मे आवै वाले लोग तालाब मा नहाइकै गुलर कै फूल ढुढ़ै आवत रहे । यहि **वजह** से **उथिर** बहुत गुल्जार रहत रहै । बाबा रामदास के एक चेला रहे उनकै नाम दिलबिहारी रहा । उ वही

पेड़ थिर रहत रहे । उ सबसे कहत रहे “जो कर्म कै भाग्यशाली मनई होई उका गुलरी कै फूल मिली । उके घरे कवनो कमी नाही रही ।” यही के मारे बहुत लोग दिनरात आस लगाइकै गुलरी कै फूल पावै के चक्कर मा बइठि रहत रहे । बहुत से मनई अपने भाग्य का अजमावै के खेल मा लाग रहै । लेकिन अबहिन तक कोई गुलरी कै फूल देखै के नाही पाइस रहै । बहुत लोग मेला मा बियाह कै **मउर** यही तिथिके दिन शुभ मानिकै तालाब मा सेरुवावत रहे । दान, दक्षिना कुट्टी पर चढ़ाय जात रहे । बहुत से लोग मेला घुमै के बहाने आपनआपन नातेदारी, रिस्तेदारी मा पहुनई कै लेत रहे ।

गुलरी के फूल अबहिन तक कोई नाही पाइस रहै । कुछ लोग **हक्कानी** उड़ाये रहे कि रमवापुर के चौधरी भइया के बड़का दादा फूल पाइन रहे । यही से अबहिन तक उनके घरे कवनो कमी नाही है । उनके घरे सब गुलर के फूल के प्रताप से बढ़ि गवा है । उनके मेहनत का सब **नजरअन्दाज** करत रहे । जतने आदमी वतनेन मेर बात । गुलर मा सदामास फल लागत है । बहुत लोग फल बटोरि के लइ जात रहे, तरकारी खात रहे । कुछ लोग गुलर के पेड़ मा खोचा लगाये के बताशा पर दूध निकार के खात रहे । यी विश्वास के साथ कि यी कइयो मेर के रोग से बचावत है । पेड़ पर बहुत मेर कै चिरईचिरङ्गन आपन झोंझ बनाये रहत रही । उ गुलर के पेड़ कै बहुतै **महतम** रहा । वहीँ जे आवत रहा **उकै** कुछ ना कुछ अंश लइकै जात रहा । मानो उ मेला वही पेड़ के फूल पावै के आस मे लागत रहै । उ पेड़ कोई का निराश नाही करत रहै । कुछ न कुछ सब का देत रहै । कोई का छाँह, कोई का फल तो कोई का आश तो कोई का सन्तोष देत रहा । बाबा के कुट्टी कै भण्डारा वही पेड़ के प्रताप औ सहारे से चलत रहै । बरसात के महीना मा बहुत मेहरारू पेड़ तरे **जुड़ात** रहीं । बरदान माङत रहीं- सुख सम्पन्नता पावै के बद । कबहूँ कबहूँ उ इलाका मा हल्ला होय कि गुलर के पेड़ से दूध गिरत है । उकै **माने** जस मनई तस बात- अपनेअपने लंग से लगाय लेयं ।

कुछ कहनाव रहै- अबकिस बढ़िया से अन्नअनाज होई ।

कुछ लोग कहैं- अबकिस अनिष्ट होई । प्राकृतिक प्रकोप बढ़ी ।

अइसनै मेरमेर बाति सुनै के मिलत रहै । पेड़ कै चर्चा सबदिन कुछ न कुछ बाति लगाइकै होन करै । उ गुलर पेड़ का कब को लगाइस रहै यिकै कोइका जानकारी नाय रहै । बहुत पुरानिया लोग कहत रहे यहि पेड़ कै महतम देख के बाबा रामदास कुट्टी बनाय के बइठे और बगिया लगवाईन और तलवा खोदाईन । यही गाव के लोग मदत किहिन रहय । बाबा

बगिया लगवाय के कुवा से बगिया कै बिवाह कराईन रहे । हमका लागत है बिना पानी के पेड़ लगावाब मुस्किल काम है यहि के लिए कुवा चाही और पेड़ लागे से बाताबरण सुधरी यहि से कुवा और बगिया कै बिवाह बाबा कराईन होइहै । समाज मा बगिया लगावे कै काम का धरमात्मा कै काम मान जाति है । यी सब काम बाबा रामदास किहिन और उनकै नाम यी इलाका मा प्रशिद्ध होइ गवा रहै । एक साल मेला मा खचाखच भीड़ रहा । दुकान, खटाईमिठाई औ झलुवा, झुलै में सब लाग रहै । दान दक्षिना खुब उठा ।

वहि साल एक मेलहा कहु दूर से आवा रहै । उ बड़ा चतुर, धूर्त औ जानकार रहै । अपने लोगन से बाति फइलाइस कि- उ गुलर कै फूल फटाफट पाय सकत है । उका यी बातिकै ज्ञान है । बाबा हम का कहैं तो हम फूल निकारिकै देखाय देई । यी पेड़ कै बस एक पुजैया करै के परी । उका **भुइहारी** आवत है । यी बात मेला से गाँव तक चारो लंग भूसा मा आग लागै **तना** फइल गवा । मेला मा आवै वाले सब सुनिन सब का आस होइ गवा । अब गुलरी कै फूल मिली । बर्षो से लोग फूल देखै के तड़फत रहे । उ चालक आदमी सब का ठगै के चाहत रहा । सब से कहिस- अपनेअपने घर से सीधा औ नगद चढ़ावा लावो । हम पूजापाठ करबै औ गुलर से **अरदास** कइके फूल निकारब । सब कोई बाट लेव । सब के घरे सम्पति बढ़ि जाई । सोझवा किसान औ गाँव के लोग उके **बत्कही** मा परि गये । बाबा तक बाति पहुचा । बाबा सोचिन- यी आदमी मेला के भीड़ का **बेवकुफ** बनाइकै **रफुचक्कर** होय के चाहत है । पता नाही कहाँ से दनदनात चलि आय ।

प्राकृतिक रूप से अबहिन तक कोई गुलर कै फूल नाही देखिस है औ न पाइस है । यी कहा से लाई । यी कवन **फटाही** काम करा चाहत है । बाबा उका कुट्टी पर बोलाइन । उसे कहिन, “देख भाई अगर तु सच्चै केर ज्ञानी होव तो पहिले परिक्षा लीन जाई । तब तुका पुजैया, भण्डारा सब करै के मिली ।” उ बहुतै चालाक रहा । कुछ देर सोचिकै कहिस, “हमरो एक शर्त है मन्जुर करै के परी बाबा लेकिन यी गुप्त बाति है, सिर्फ आप के तक यी बाति रहै के चाहीं ।” बाबा कहिन, “ठीक है, बतावो ।”

उ कहिस,“गुलर के पेड़ पर फूल तो हमहू नाही देखे हन । यी ईलाका कै आदमी वइसै तो बहुत सम्पन्न हैं । यी लोग से धन बटोरिकै आप कै **तीर्थजात्रा** कराय देब औ हम अपनो गरिबी दूर कइ लेबै ।” बाबा सुट्ट से लालच देखाय दिहिस । बाबा बहुत सोचविचार मा परि गये । एक तरफ उकै बाति मानै तो बहुत लोग ठगा जइहैं । यदि न मानैं तो उनके एक दबी इच्छा रहै तीर्थ घुमै जाय केर, उ पूरन होइ पाई । बाबा बहुत विचार मा परि गये । मन उनकै धरै-उठावै लाग । लोभ पयदा भये पर सब लोग असमन्जस मा परि जात

हैं। बाबा सोच विचार किहिन- जग हँसाई कराये से आपन कर्म बिगड़ी जाई। गुलर कै फूल अबहिन तक जब कोई नाही देखे है तो यी प्रकृति कै लीला होय सकत है। फूल औ फल साथेन लागत होई।

बाबा उ मेलहा से कहिन," देखौ तोहरे मन मा लालच है। यी नीच विचार से समाज का बेवकुफ बनाइब ठीक नाही है।" वहि मेलहा कै नियत खराब रहै। उ कवनो मेर लोगन का लूटै के चाहत रहा। बाबा औ मेलहा के बीच खुबै बतकही भवा। बाबा लोकलाज औ समाज कै बाति सोचिकै एक निर्णय पर पहुचे। छोट लोभ जीवन मा कलंक लागि जाई। यी काम उचित नाही है। दूसरे दिन बाबा मेला वाले गाँव के **जानेमाने** लोगन का बोलाइन। वनही लोग का कहिन,"हम एक बाति बतावै के चाहित है।"

सब लोग कहिन,"बाबा बतावा जाय।"

बाबा कहिन "यी गुलर कै पेड़ बहुत परोपकारी है। देखो अपने छाँह शान्ति देत है, बरसात मा सुरक्षा, अपने फल से भोजन, पातडाँठ सब काम मा आवत है। यिके नाम से मेला लागत है। लोगन का मेला के बहाने कइयो मेर कै रोजगार मिलत है। यिके फूल का लइकै लोभी लालची लोग सिर्फ भ्रम बनाये हैं। कुछ लालची लोग आपन लालच पूरा करै के चाहत हैं। लालची ढोंगिन कै चाहना अइसै है। जब तक संसार है तब तक आपन लोभ पूरा करै के खातिर लाग रहत हैं। यी नियत से बचै के खातिर **संसारिक,** व्यहारिक औ सामाजिक ज्ञान कै जरुरत है।" समाज मा अइसै कुछ **प्रचलित** भ्रम है। जवन गुलरी के फूल तना है। उ सत्य नाही है तब्बो वही के लोभ मा लोग फासि जात हैं। अइसन बनावटी बातिन कै बतङ्गड़ बनाइकै फायदा उठावै वाले बहुत लोग मिलि जइहैं।

आजौ उ गुलर कै पेड़ अपने जगह पर **अटल** खड़ा है। उकै महिमा चारो लंग **विख्यात** है। उ निरन्तर अपने तरफ से उ ईलाका मा वही मेर से छाँह देत है। सुरक्षा औ फल देत है। रोजगार सहितकै स्नेह सब का बराबर देत है। लोग वकरे बदले मा पेड़ौ का प्रेम देत हैं। अब तो बहुत कुछ बदलि गवा है। कुवाँ कै **जगति** पक्का बनि गवा है। तालाब के चारो तरफ से सिढ़ी सहित घाट बनि गवा है। उ बगिया मा मेला औ गुलर कै पेड़ औ उकै फूल ढुढ़ै वाले अबहिन तक भटकत मेला मा आवत है।

शब्दार्थ

अलख	:	ईश्वर कै नाम, भिक्षा माङत कै उच्चारण करे वाला शब्द
तपस्वी	:	तपस्या करै वाला व्यक्ति
प्रतापी	:	शक्ति औ सामर्थ्य रहा व्यक्ति
झलार	:	डारिपात फइला
वजह	:	कारण
उथिर	:	वहि जगह पर
मउर	:	रङ्गिन कागज औ अन्य श्रृङ्गार के साधन प्रयोग कइकै बनाय गवा मुकुट, अवधी समुदाय मे दुलहा का बियाह मे पहिराय जात है ।
हक्कानी	:	हल्ला चलाइब या फइलाब
नजरअन्दाज	:	अनदेखा, बेवास्ता
महतम	:	महत्त्व, ख्याति
उके	:	उनकै, वनकै
जुड़ात	:	ठण्डात, छहाँत
माने	:	अर्थ
भुइहारी	:	स्थानीय देवीदेवता सवार होय वाला तन्त्र साधना
अरदास	:	बिन्ती, मानमनौती
बत्कही	:	कुछ लम्मा समय तक चलै वाला बातिचित
बेवकुफ	:	मूर्ख, बिना बुझेसमझे बोलै या करै वाला
रफुचक्कर	:	चुप्पे से भाग खड़ा होय ।
फटाही	:	दूसरे का गुमराह मा कइकै आपन फायदा सोचै वाला
तीर्थजात्रा	:	धार्मिक स्थल कै भ्रमण
जानेमाने	:	नाम चला, सब कै आदरणीय

संसारिक	:	संसार के गतिविधि से सम्बन्धित
प्रचलित	:	चलनचलती मा रहा मान्यता विश्वास
अटल	:	अड़िग, स्थिर
विख्यात	:	नाम चला, प्रसिद्ध
जगति	:	कुवाँ के चारो ओर बनाय गवा देवाल

शब्द भण्डार

१. पाठ मा दिहा अनुकरणात्मक शब्द औ अर्थ मिलै वाले अर्थ कै जोड़ा मिलावा जाय :

शब्द	**अर्थ**
सुट्ट	जल्दी से चलब, करब
चहलपहल	बाति बढ़ाइबचढ़ाइब
फटाफट	चुप्पै से करब
दनदनात	भीड़ होब
खचाखच	आवाजाही होब
बतङ्गड़	बिना रोकटोक आइब
	बिना बताये करब

२. दिहा शब्द कै अर्थ लिखा जाय :

भटकत, तालाब, भ्रम, लालची, नियत, परोपकारी, पुजैया, सदामास

३. नीचे दिहा अनुकरणात्मक शब्दन कै प्रयोग कइकै वाक्य बनावा जाय :

सरसारत, झमझम, टुकुरटुकुर, पचरपचर, गबगब, फटरफटर, झम्मझम्म

बोध औ अभिव्यक्ति

१. दिहा शब्द कै शुद्ध से उच्चारण करा जाय :

प्रतापी, पुजैया, भुइहारी, हक्कानी, संसारिक, जगति, जानेमाने, प्रचलित, गुलर, विख्यात

२. 'गुलर कै फूल' कथा वसरीपारी सस्वरवाचन करा जाय ।

३. 'गुलर कै फूल' कथा पढ़िकै नीचे प्रश्न कै मौखिक जबाब दिहा जाय :

(क) कथा कवने सर्न्दभ मे लिखि गा है ?

(ख) कथा मा कइ जने पात्र बीच बातचीत होत है ?

(ग) मेला मे लोग कवने बाति पर विशेष ध्यान दिहे हैं ?

(घ) कवने बटना पर आइकै कथा समाप्त होत है ?

(ङ) कुवाँ के चारो ओर बना देवाल का काव कहि जात है ?

४. 'गुलर कै फूल' कथा पढ़िकै के पाँच ठू घटना कै टिपोट बनावा जाय ।

५. 'गुलर कै फूल' कथा कै दूसरा अनुच्छेद पढ़िकै पूछि गवा प्रश्न कै जबाब दिहा जाय ।

(क) बगिया मा केतकै पेड़ रहा ?

(ख) तालाब मा नहाय कै काव खोजत रहें ?

(ग) अबहिन तक काव देखै के, कोई नाही पाइस है ?

(घ) तालाब में लोग काव सेरुवावत रहें ?

(ङ) मेला घुमै के बहाना काव होय जात रहा ?

६. **'गुलर कै फूल' कथा पढ़िकै दिहा प्रश्न कै संक्षिप्त उत्तर लिखा जाय :**

(क) कथा मा कवने जगह पर मेला लागत है ?

(ख) मेला मा लोग कइसन उद्देश्य के साथ आवत हैं ?

(ग) बाबा गाँव वालेन का कइसै सम्झाइन ?

(घ) कथा कै मुख्य सन्देश काव होय ?

७. **व्याख्या करा जाय :**

गुलर कै पेड़ अपने जगह पर **अटल** खड़ा है ।

८. **बाबा कवने बाति कै विचार कइकै गाँव वालेन का सम्झाइनः तर्क दिहा जाय ।**

९. **'गुलर कै फूल' कथा कै प्रमुख पात्र बाबा औ एक मेलहा के चरित्रकै तुलना कइकै एक अनुच्छेद लिखा जाय ।**

१०. **'गुलर कै फूल' कथा कै सार लिखा जाय ।**

११. **नीचे दिहा अनुच्छेद पढ़ा जाय औ नविन जेस आपो कब्बो पश्चाताप महसुस करा गा है, अपने पश्चाताप किहा कवनो घटना कक्षा मे सुनावा जाय :**

नविन के घरे के किनारे नीब कै पेड़ रहा । वहि पर गउरैया खोता लगाये रही । नविन का गउरैया कै खोता देखै के मन लाग । नविन नीब के पेड़ पर चढ़िकै खोता देखै लाग । खोता मे छोट छोट चुजा रहें । जवनेन कै पाँख नाही जाम रहा । नविन का वन्हरेन का उठाइकै देखै के मन लाग । उ चुजा उठाइकै देखै लाग । यतनेन मे अम्मा बोलावै लागीं । उ जल्दी जल्दी चुजा का खोता मे धरै के चाहिस लेकिन हाथ से गिरा परा औ मरि गै । नविन का अपने कारण चुजा कै जान जाय के नाते पश्चाताप भवा । उ गउरैया से माफी माङै के चाहिस लेकिन वकर भाषा गउरैया नाही बुझत रही । उ मनैमन पश्चाताप कै बोध कइकै रोवै लाग ।

भाषिक संरचना औ वर्ण विन्यास

१. दिहा अनुच्छेद पढ़िकै काल कै अपूर्ण पक्ष कै क्रियापद टिपोट करा जाय :

रामु आम बीनत रहे। बयारि जोर से चलत रहा। शिला झोरा लइकै आवत रहीं। रमेश भइया बगिया मे घुमत रहें। सूरजमन एक आम उठाइकै खात हैं। रमुवा झोरा मा आम धइके जात हैं। काल्ह बयारि चली तो आम गिरबै करी। अब व्यापारी आइके खरिदबै करी।

२. कोष्ठक मे दिहा धातु के आधार पर खाली जगह पर क्रियापद भरिकै वाक्य पूरा करा जाय :

(क) हमरे गाँव मे कुलवा । (बन् वर्तमान, अपूर्ण पक्ष)

(ख) अम्मा खाना । (खः भूत, अपूर्ण पक्ष)

(ग) खेत मा पानी । (चल् वर्तमान, अपूर्ण पक्ष)

(घ) कपड़ा । (सि भविष्यत, अपूर्ण पक्ष)

(ङ) बाबु किताब । (पढ्, भूत अपूर्ण पक्ष)

३. दिहा अनुच्छेद पढ़िकै गाढा रङ मे रहा शब्द के बनावट कै प्रक्रिया देखा जाय :

हमरे हियाँ **घरघर** मे इन्टरनेट है। **रास्ताबाट** कै सुविधा कै। अपने साथे **खर्चवर्च** रहै तो कवनो समस्या नाही है। **खेतीपाती** अब मशिन से होत है। सब **अपनेआपन** काम मे **मस्तव्यस्त** रहत हैं। केवकेहु से **रीसराग** नाही राखत है। पहिले नगदी काम नकरै वाले अब **हजारहजार** कै बाति करत हैं।

४. 'गुलर कै फूल' कथा से पाँच ठू द्वित्व प्रक्रिया से बना शब्द टिपोट कइकै वाक्य मे प्रयोग करा जाय।

५. 'गुलर कै फूल' कथा से 'य', 'ए' प्रयोग भवा पाँच ठू शब्द खोजिकै लिखा जाय।

६. नीचे दिहा वाक्य शुद्ध कइकै लिखा जाय :

(क) इकठू कहानी यकू जने सुनाइन । हम घरे काका आए ।

(ख) मामा के घरे यकाह कै एज्ञ करै जात हैं । अपने साथे यकाङ्गी कै किताब लाए ।

सुनाई औ बोलाई

सुनाई पाठ - ६

कारोबार

खेतिहर किसान रहे फेरन । उनका गाँव के लोग अब फेरे दादा कहै लाग रहैं । उनकै उमिर करीब चालिस के आसपास पहुँच गवा रहा होई । अब उ खेती के साथेन गल्लही करे लागे रहे । ऊ अपन कारोबार कै जगह तराई जहाँ खूब अनाज पैदा होत रहै । हुवाँ लगानी लगाय के गल्लही करें लागे रहे । कुछ दिन तक दुइ चार लढ़िया लाही, चना अउर मसुरी खरीद के लावत रहें । बाद मा अउर कारोबार बढ़ाय के महीनोमहीना लढ़िया लदवावत रहें । यहि कारोवार से उनका अब सब लोग महाजन कहै लागे रहैं । उनकै परिवार छोट रहै । यक्कै लरिका रहै । राजिन्दरवा कहिस "बप्पा पढ़िलिखिकै कवन काम चली तुहरे साथै हमहू गल्लही करबै ।" वही दिन तो फेरे दादा बहुत खुश भये अब तो लरिको साथ देई खूब पैसा कमाई होई ।

तराई मा गल्ला खरीददारी करै बाप पूत साथेन जाय लागे । फेरे दादा कै नाउ बजार भरेम बड़े सम्मान से लीन जाय लाग । यी काम मा कवनो खास पढ़ाईलिखाई कै जरूरत नाय महसूस भवा । थोरबहुत हिसाबकिताब जाने से मने होई जात रहै । यहि से राजिन्दर का पढ़ावै मा फेरे दादा मन नाही लगाइन । दुनो जने मिल के बढ़िया पैसा कमाय लागे लेकिन कुछ समय बाद व्यापार बन्द करै के परा ।

१. सुनाई पाठ ६ सुना जाय औ खाली जगह पर मिलै वाला शब्द कहा जाय :

(क) फेरन का क गाँव के लोग.......कहै लागे ।

(ख) महीनोमहीना लदावत ......लदावत रहे ।

(ग) यहि कारोबार से उनका सब ....कहै लागे ।

(घ) दुनौ जनिकै मिलिकै ....पैसा कमाय लागे ।

२. सुनाई पाठ ६ के आधार पर दिहा प्रश्न कै उत्तर कहा जायः

(क) फेरे दादा कै उमिर केतना रहा ?

(ख) उ काव करत रहें ?

(ग) रजिन्दरवा काव कहिस ?

(घ) 'कारोबार' कथा से काव शिक्षा मिलत है ?

सिर्जना औ परियोजना कार्य

१. अपने गाँव मे घटा कवनो घटना का आधार बनाइकै कथा लिखा जाय ।

२. अपने पढ़ा कथा से वकर परिवेश औ पात्र के बारे में टिपोट बनाइकै कथाा मे प्रस्तुत करा जाय ।

गाँव कै जिन्दगी

(रुची औ विकास अपन बिटियवा अनु का औ लारिका विनोद का अपने गाँव आजा औ आजी से भेट करावै गाँव लइकै आये रहें । घरे पहुचतै खन अनु औ विनोद अपने आजी कै अँचरा पकरिकै प्यार से झुमै लागे । रुची औ विकास दुनौ **परानी** अपने बाप कै नेरवै बइठिकै बतुवाय लागे । आज घर कस **चहुकियात** है । सब के चेहेरा पर उजेर देखात रहै । लारिके अपने आजी से घर मा राखा समान देखिकै बतुवाय लागे ।)

अनु : आजी, गाँव मा आप से मिलै के केतना मन लाग रहा । फोन पर भिडियो कालिंग पर मजा नाही आवत रहा । आज तो मन कै बाति पूरा होय गवा । (अनु अपने आजी से लिपटि गई)

विनोद : आजा आप औ आजी केतना आनन्द से रहा जात है । घर के अङ्ना मे फूल औ केतना समान राखा है । यहि समान कै नाँव काव काव होय ? औ कवने कामे आवत है ।

रुची : आप सब लोग बतुवावा जाय, खाना हम बनाइत है, अम्मा । अब जब तक हिया हम रहिब हम खाना बनाइब । (कहतै रसोई घर मा घुसै लागि)

आजी : नाही बहुरिया, तुमका सब समान ढुढ़ै के परी। अब्बै परेसान होइहो। सब लोग मिलिकै बनाय लिहा जाय।

विकास : अम्मा, आप लरिकेन का घुमावा जाय। हम औ रुची मिलिकै खाना बनावा जात है, पापा आपो साथेन जावा जाय।

अनु : आजा हम का देत जावा जाई औ सब सामान कै नाम बताय दिहा जाय न। हम्मै जानै के मन है।

आजी : हमार पोती, केतनी चलाक है। जब से यी सामान देखिस है, सब जानै के खातिर **उतावली** भइ ही।

अनु : नाही, पहिले बतावा जाय तब अउर काम ?

आजी : अच्छा , अब हम बताये जाइत है। देखो यी धान से चाउर निकारै बद ओखली होय, यी **चक्की** होय जिमा अनाज पीसि कै पिसान, आटा बनत है। यी **सूप** होय यिसे अनाज साफ करा जात है।

आजा : यी यहर देखो, यी सब हमार सामान होय। यी **फरुवा** होय। यहिसे खना खोदा जात है। यी हल है, पहिले लोग यही से जोतै के काम करत रहें। अब ट्रक्टर से खेत जोता जात है। यी सब खेती किसानी के कामे प्रयोग होत है। यी सब समान से **गृहस्थी** औ खेतीबारी के काम होत है।

विनोद : आजा, यी सामान के बनावत रहा ?

आजा : यी सब गाँव मे **बढ़ई** बनावत रहें। उलोग आपन **परम्परागत हुनर** कै प्रयोग कइकै बनावत रहे।

अनु : औ, आजी के बतावा सामान के बनावत है ?

आजी : उ सामान सब यक्कै जने नाही बनावत हैं। सूप धरिकार बनावत हैं। चक्की पत्थरकट्ट समुदाय के लोग बनावत हैं। ओखली औ ढेकी बढ़ई बनावत रहें।

विनोद : बढ़ई लोग हुन्नरी रहत रहें, न आजी ?

आजा : देखो हम लोग गाँव मा अपने खाय के खातिर सब काम खुद करा जात है। टोलपरोस मा आपस मा मिलिकै कइ लिहा जात है।

आजी : हम सुबह सुबह उठिकै घर कै सब काम कइ लेइत है । तुम्हरे आजा फरुवा लइके खेत मा चला जात हैं । चक्की चलाइकै आटा बनाय लेइत है । यहिसे हमार कसरत होय जात है । सुबह से शाम तक शरीर चलयमान रहत है ।

अनु : अरे, आजी यी सामान सब तो बड़े काम कै है । लोग सहर मा पैसा दइकै कसरत करै जात हैं । आप तो घर कै कमवो कइ लिहा जात है । कसरतो होय जात है । हमरे अम्मा तो स्वास्थ्य के खातिर पता नाही का का करत हीं । (यी बाति सुनिकै सब लोग हँसै लागत हैं ।)

रुची : ओहो, अनु तो आज सब बाति बताय दिहिस अपने आजाआजी का । सहर मे यी सब काम के खातिर फुर्सत कहाँ है । यहिसे सहरी जिन्दगी मा सबेरे चलै के कहत हैं । अउर ज्यादा कसरत के खातिर लोग जिम खाना चलि जात हैं । यी सउक नाही बाध्यता होय गवा है ।

अनु : अम्मा, आप सम्झौ न, यहिँ तो रोजाना के कमवै मे कसरत है । यी स्थानीय प्रविधि जे बनाइस होई, ऊ केतना चलाक रहा होई ?

आजी : बेटा, यी सब का **स्वावलम्बी** बनाय दिहे है । सब काम जब खुद से होय जात है तो केहु से **गिलाशिकवा** नाही रहत है । आपसी सम्बन्धौ अच्छा रहत है ।

विकास : अनु औ विनोद सुनौ, यी यतनै भर काम नाही देत है । यहिसे गाँव मा रोजगारी सिर्जना होत है । यी तो एक पन्थ बहु काज करत है ।

विनोद : पापा, हमरे तो कसरत के खातिर साइकिल चलावा जात है । आजा तो फरुवा चलाइकै आपन कमवो निप्टाय लेत हैं औ कसरतो कइ लेत हैं । आजा कै देंहि देखा जाय । कुस्ती के खेलाड़ी जेस है । (सबलोग फिर हँसत हैं) तुम्हरे आजा कै काम एक पन्थ दुइ काज जेस है ।

रुची : यी दुनौ के बाति सुनिकै लागत है, बहुत जानकार होय गा हैं । आज काल्ह के बइठारू काम का औ कम मेहनत वाले काम का आराम कै जिन्दगी बुझे हैं । यही से गाँव से सहर के ओर भागत हैं । कहूँ जाय के सउक है तो कहूँ बाध्यता ।

विनोद : पापा, हम्मै तो कब्बो लागत है- आजा के समय मा पयदा भवा होइत तो हमहूँ आजा जइसै होइत । आजा जइसै पहलवान रहित । हम लोग के उमिर के बच्चे मोबाइल मे आवश्यक से ढेर अनावश्यक बाति सब देखत हैं ।

अनु : हाँ आजी, भइया सही कहत है । हम तो सोचित है । अब हमरेव छतै पर सही तरकारी लगावा जाई । थोरबहुत कसरत हमरेन कै होय जाई औ ताजा तरकारी खाय के मिलि जाई । अबकिर तो हमहूँ खुरपी लइकै जाबै । यहिं रहै तक आजा से सब बाति सिखि लेबै ।

आजी : हमरेन के जमाना मा अइसन आधुनिक सुबिधा नाही रहा । यहि घरी तो सब बनाबनावा मिलत है । यहू से लोगन का काम नाही करै के परत है । मशीन से लोग कै काम कम होय गवा है । यी सुविधा कै सही तरिका से प्रयोग करै चाहीँ ।

विकास : हाँ, अम्मा । आज के समय संयमित स्वस्थ जीवन शैली, स्वस्थ रहन-सहन गम्भीर विषय बनि गवा है । सामाजिक **उत्तरदायित्व** सब निर्वाह करै के खातिर जिन्दगी संघर्षमय होत जात है ।

रुची : सहियै आधुनिकीकरण से सहजता बढ़ा है तो समस्या नवाँ नवाँ उत्पन्न होत जात है । अइसै वातावरण कै प्रदूषण नवाँ पुस्ता के खातिर चुनौती बढ़ाये है ।

आजा : हाँ, हमरेव समाचार मा सुना जात है । प्रविधि कै विकास जीवन सहज बना है । लेकिन सन्तुलित आहारबिहार कै खातिर चिन्ता बढ़ा है । यी मेर कै अवस्था गाँव औ सहरी जीवन सब जगह देखात है ।

अनु : आज, आजा के बाति से लागत है । अपने रहनसहन मा आधुनिकता का अपनावत के उचित औ अनुचित बातिकै विचार करै के परी । लम्मा समय तक जीवन सहज बनावै के पूर्खन से अपनाय गवा प्रविधि मा आधुनिकता लावै के परी ।

विनोद : सही बाति कहेव अनु । अब हमरे यी बाति साथी लोग से करै के होई । औ अम्मा औ पापा के काम मा हाथ बटाइकै सहयोग करबै । हमरो कसरत होय जावा करी ।

रुची : चलो खाना तयार होइ गवा है । सब लोग हाथ मुह धोवा जाय । खाना खाय के दादा जी के साथ सब लोग खेत औ बगिया मा घुमै चला जाई । (सब लोग खाना खाय कै तयारी करे लागत है)

शब्दार्थ

परानी	:	परिवार
चहुकियान	:	अँजोर, प्रकाशमय
उतावली	:	हलबुलई, आतुर
चक्की	:	चकिया, जाँता
फरुवा	:	बड़वार कुदरा
गृहस्थी	:	पारिवारिक व्यवस्था
बढ़ई	:	अवधी समुदाय मा काठ कै काम करै वाले शिल्पी जाति
परम्परागतहुनर	:	पुस्तान्तर होत आवा ज्ञान औ शिल्प
स्वावलम्बी	:	आत्मनिर्भर
गिलवाशिकवा	:	शिकायत, मनमुटाव
उत्तरदायित्व	:	जिम्मेवारी

शब्द भण्डार

१. नीचे दिहा शब्द औ अर्थ बीच जोड़ा मिलावा जाय :

तीर	हाथ, राजस्व
साँचा	धन, तात्पर्य
गोल	किनारा, बाण
कर	ढाँचा, बीज अंकूर पूर्वकै अवस्था
अर्थ	समूह, आकार
	पोखरा, नाच कै ढङ्ग

२. नीचे दिहा शब्दन कै अर्थ साथी से छलफल कइकै लिखा जाय :

फरुवा, आधुनिकता, रहनसहन, संघर्षमय, सन्तुलित, बाध्यता, बइठारू

३. नीचे दिहा शब्दन कै अनेकार्थी शब्द लिखा जाय :

तर, जाल, नसा, वर, सुर, हाथ, उत्तर, काल

बोध औ अभिव्यक्ति

१. नीचे दिहा शब्द शुद्ध से उच्चारण करा जाय :

संघर्षमय, बाध्यता, बइठारू, परानी, गिलाशिकवा, उतावली, चहुकियान

२. 'गाँव कै जिन्दगी' संवाद अभिनय सहित सस्वरवाचन करा जाय ।

३. 'गाँव कै जिन्दगी' संवाद पढ़िकै पूछि गवा प्रश्न कै मौखिक उत्तर दिहा जाय :

(क) 'गाँव कै जिन्दगी' संवाद मा कवने पक्ष कै जानकारी मिलत है ?

(ख) 'गाँव कै जिन्दगी' मा गाँव कै वर्णन कइसै कीन है ?

(ग) गाँव मा लोग कै कसरत कइसै होय जात है ?

(घ) गाँव मा लोग कै कइसन सम्बन्ध होत है ?

(ङ) प्रविधि के विकास से जीवन कइसन होय गवा है ?

४. नीचे दिहा वाक्य 'गाँव कै जिन्दगी' संवाद मे कवने कवने पात्रकै होय, कहा जाय :

(क) सब लोग हाथ मुह धोवा जाय ।

(ख) लेकिन सन्तुलित आहारबिहार कै खातिर चिन्ता बढ़ा है ।

(ग) अबकिर तो हमहुँ खुरपी लइकै जाबै ।

(घ) यी सउक नाही बाध्यता होय गवा है ।

(ङ) यी सब समान से गृहस्थी औ खेतीबारी के काम होत है ।

५. 'गाँव कै जिन्दगी' संवाद पढ़िकै दिहा प्रश्न कै उत्तर लिखा जाय :

(क) खेतीकिसानी मा प्रयोग होय वाला सामान कै सूची बनावा जाय ?

(ख) गाँव के लोग कइसै स्वावलम्बी होत हैं ?

(ग) शारीरिक कसरत कइसै पूरा होय जात है ?

(घ) अनु औ विनोद बिदा मा कहाँ के से मिलै गवा रहें ?

(ङ) स्थानीय प्रविधिकै प्रयोग कइकै जीवन कइसै सहज बनि सकत है ?

६. व्याख्या करा जाय :

रहनसहन मा आधुनिकता का अपनावत के उचित औ अनुचित बातिकै विचार करै के परी ।

७. 'गाँव कै जिन्दगी' संवाद मा गाँव कै वर्णन कइसै कीन गा है, वर्णन करा जाय ।

८. "मशीन से लोग कै काम कम होय गवा है । यी सुविधा कै सही तरिका से प्रयोग करै चाहीँ ।" यहि कहनाव का पुष्टि करा जाय ।

९. 'गाँव कै जिन्दगी' संवाद कै मुख्य सार लिखिकै कक्षा मा प्रस्तुत करा जाय ।

१०. नीचे दिहा अनुच्छेद कै मौन पठन करा जाय औ नीचे दिहा प्रश्न कै उत्तर लिखा जाय :

साधना बनिया पशु प्राविधिक होयं । सियारी गाँवपालिका २ मे नोकरी करत हीं । उनका पशुपंक्षी कै दबाई औ रेखदेख कै काम व्यस्त कइ दिहे है । आप कब्बो

पशुपंक्षी कै दबाई करत मिलत हीं तो कब्बो भ्याक्सिन लगावत देखात हीं । साधना कै काम बहुतै किसान का मने बइठा है । साधना प्राविधिक होयं लेकिन किसान लोग डाक्टर कहिकै बोलावत हैं । किसान लोग से देखाय गवा स्नेह साधना उत्साहित किहे है । काम कै चापाचाप रहत है । किसान लोग बहुतै माया करत हैं, दूरदूर से बोलावत हैं बनिया कहत हीं ।

बनिया गाँव के किसानन कै विश्वास जीतै के बहुतै कोशिश किहिन । सुरूसुरू मे तो महिला, वहू पर तराईमधेश मुल कै उनका पशु प्राविधिक कहिकै केहु विश्वासै नाही करैं । किसान लोग पशुपंक्षी बिमार होइकै आवत के मधेशी महिला देखै के बाद तो केतना बिना इलाज करायन चला जात रहें । केतना लोग तो आपो का आवत हैं कहिकै पुछबो करत रहें । मधेशी महिला पशु इलाज कइ पइहैं कहै वाला सोच के नाते होई । भ्याक्सिन लगावत के केतनापय किसान लोग आप के नाही आवत होई, रुका जाय सर बोलाइत है कहिकै रोकत रहें । हम कइ लेबै, आप चिन्ता न लिहा जाय कहिकै चुपचाप आपन काम करत रहेन, साधना कहत हीं । लेकिन अब वइसन नाही है । हम अपने मेहनत से किसान कै मन जिते हन । साधना रूपन्देही के सियारी गाँवपालिका -२ सेमरा मे जन्मी रहीं । उनके परिवार मे सब लोग पढ़ा लिखा हैं ।

मझिली बिटिया के रूप मे पयदा भई बनिया पशु प्राविधिक के सङहरियै विज्ञान संकाय से कक्षा १२ पास किहे हीं । यहि लोकसेवा कै तइयारी करत हीं । लोकसेवा के तइयारी के साथसाथ पढ़ाई का निरन्तरता देतै आगे बढ़ै के उनकै सोच है ।

(क) साधना कै घर कहाँ होय औ काव करत हीं ?

(ख) किसान लोग उनका काव कहत हैं ?

(ग) सुरुसुरु मे उनका कइसन समस्या आय ?

(घ) साधना अबहिन कइ कक्षा मे पढ़त हीं ?

(ङ) भविष्य मे उनकै काव करै लक्ष्य है ?

भाषिक संरचना औ वर्ण विन्यास

१. नीचे दिहा अनुच्छेद से पूर्ण पक्ष कै क्रियापद पहिचान कइकै छलफल करा जाय :

राममिलन नेवता करै गवा रहें । उनके सङहरियै रचना गई रही । रमेश दिन भर घरही रहे । अम्मा आमा समूह के बइठकी मे गई हीं । काल्ह आजी का सबेरे भागवत वाले जगह पर पहुचै के है । आप सन्झा कै लउटि अइ हैं । रमेश आजी के साथे जइ हैं ।

२. कोष्ठक मा दिहा सङ्केत के आधार पर खाली जगह पर लिखा जायः

(क) उ लोग खेत कै रोपनी.......। (करः वर्तमान काल, पूर्ण पक्ष)

(ख) खेल मा लखन कै समूह.......। (जित् : भूतकाल पूर्ण पक्ष)

(ग) काका बजारे ....। (जा : भविष्यत काल)

३. नीचे दिहा अनुच्छेद पढ़िकै अज्ञात औ अभ्यस्त पक्ष कै क्रियापद पहिचान कइकै लिखा जाय ।

शिवमन्दिर पर एक जने बाबाजी आये । उनके साथे एक ठू खझड़िव रहा । खझड़ी बजाइकै भजन गावत रहे । यतनै मे पूरान बातिव सुनाइन । पहिले पहिले गाँव कै जीवन कष्टकर होत रहा । गठरी बान्हिकै सामान लावै लइजायके परतरहै । इलाज न पाइकै लोग अकालै मा मरि जात रहैं । लरिके उनकै बाति सुनिकै चकुवाय गवा रहै । यतनेन मा सुनैना कहिस- हमरे आजा अइसै मेर के बाति सुनावत रहैं ।

३. कोष्ठक मा दिहा सङ्केत के आधार पर खाली जगह पर लिखा जायः

(क) बुआ हमका खातिर पहुरा......। (लाः अज्ञात पक्ष)

(ख) रजनी छोट कहानी ....। (लिखः अभ्यस्त पक्ष)

(ग) पकनारी चुवत.......। (रहः अज्ञात पक्ष)

(घ) नदी मा बाढ़ि......। (आः अभ्यस्त पक्ष)

४. **नीचे दिहा अनुच्छेद पढ़ा जाय औ 'ऋ' 'रि' प्रयोग भवा शब्द टिपोट करा जाय :**

ऋषभ औ ऋषिका मामा के घर से आवत रहें । रास्ता मा रिक्सा मिला औ वही पर बइठे गये । उतरत के झोरा गिरि परा औ ऋषभ रिसियाय गये । घरे आये रिता दिदी बा सब बाति बताइन । दिदी रिस से नोक्सानी के बाति सम्झाइन । सन्झा के ऋषि आये । ऋण औ धन के बारे मा खीसा सुनाइन ।

५. **'ऋ' औ 'रि' कै प्रयोग भवा पाँच पाँच ठू शब्द सङ्कलन कइकै वाक्य मा प्रयोग करा जाय ।**

सुनाई औ बोलाई

सुनाई पाठ - ७

भयानक जङ्गल

एक सघन बन मा दुइ शिकारी पहुचे । दुनौ पूरान शिकारी रहे । शिकार के टोह मा घुमत रहे । लेकिन अइसन घना जङगल नाही मिला रहा । देखतै देंहि मा दहशत होत रहा । एक ठू बड़ा वरगद के नीचे आपन बसेरा किहिन औ बतुवाय लागे ।

"कइसन भयानक जङ्गल ।"

"बहुतै घना है ।"

कुछ देर सम्थाय के बाद शिकार के खातिर आगे बढ़े । उलोग के जाय के बाद शीशम कै पेड़ वरगद के पेड़ से कहिस- दादा, अब्बै तोहरे छाँह मे कवन लोग आय रहे ?

"हाँ, चला गये । तू नाही जानत हौ ?"

"नाही बड़े अजब लागत रहें, कवन लोग रहे दादा ?"

वरगद कहिस," जब छोट रहेन तो देखे रहेन । यी लोग का आदमी कहत हैं । यी लोग मा पाता नाही होत है, तना भर होत है । देखेव नाही कइसै चलत हैं । अपने तना के दुइ शाखा के पर चलत हैं ।

शीशम,“यी लोग यतना नाटा होत हैं, काहे उँच नाही होय पावत हैं दादा ?”

वरगद, “हमरेतुम्हरे जेस यी लोग मा जड़ नाही होत है। कवने सहारे बाढ़ैं। यहिसे यहरवहर चला करत हैं। उपर के ओर बढ़ै के नाही आवत है। पता नाही बिना जड़ के कइसै जियत हैं।”

यतने मा बबुरि कहिस,“दादा, ए दादा। आप तो बहुत दिन देखे हौ। बतावो कवनो बन का देखे हौ ? यी आदमी कवनो भयानक बन कै बाति करत रहे। आव वही भयानक बन का देखे हौ ?

शीशम,“हाँ, दादा सुने तो हन, लेकिन उ कइसन बन होय ?”

वरगद दादा कहिस,“सहियै मा भाई, यतना उमिर होय गवा। हमहुँ भयानक बन नाही देखे हन। सब जानवर देखे हन : बाघ, भालू, हाथी, चितवा, बिगवा, खरहा, हरिन। लेकिन बन नाम कै कवनो जानवर नाही देखे हन।

शीशम कहिस,“लागत है, उ बाघ, चितवो से डरावना होई।”

वरगद दादा,“पता नाही, डरावना तू के का कहत हौ। हमार तो सब से प्रीत है।”

बबुरि कहिस,“दादा प्रीत कै बाति नाही है। हम तो अपने पास काँटा राखित है। लेकिन यी लोग का आदमी का भयावना बतावत हैं। जरुरै बाघ औ चितवा से बढ़िकै होइ हैं।

वरगद दादा,“उ तो है, आदमी एक ठू लुक्की से आगि लगाइकै सारा जङ्गली जानवर का मारि सकत है। उलोग का अइसन करत हम बहुत बेर देखे हन। लेकिन बन कै लाश नाही देखे हन। उलोग जरुरै कवनो बड़ा खतरनाक जीव होइ हैं।”

१. सुनाई पाठ ७ सुना जाय औ दिहा वाक्य ठीक है तो ठीक औ बेठीक है तो बेठीक कहा जाय :

(क) दुनौ पूरान शिकारी नाही रहे।

(ख) लेकिन बन नाम कै कवनो जानवर नाही देखे हन।

(ग) हमार तो सब से प्रीत नाही है।

(घ) हम तो अपने पास काँटा राखित है ।

(ङ) लेकिन बन कै लाश नाही देखे हन ।

२. सुनाई पाठ ७ के आधार पर दिहा प्रश्न कै उत्तर कहा जाय :

(क) जङ्गल मा के आय ?

(ख) जङ्गल देखिकै काव होत रहा ?

(ग) आदमी कै तना काहे नाही उँच होत है ?

(घ) केकर सब से प्रीत है ?

(ङ) आदमी काहे भयावना है ?

सिर्जना औ परियोजना कार्य

१. कवनो एक 'स्थानीय कला' के बारे मा संवाद लिखा जाय ।

२. आप का बढ़िया लागै वाला कवनो खीसा सुनिकै वकर मुख्यमुख्य विषयवस्तु कै टिपोट कइ कै कक्षा मा सुनावा जाय ।

नेपाली होई

- हंसा

यहिंके माटी औ **रीत** कै
गीत गावत हम
बुद्ध के विचार सँगे
चलै वाला हम
स्वाभिमानी औ **श्रमशील**
नेपाली होई ।
माटी के खुश्बु से
रो**मान्चित** होय जात है
रोम रोम हमार
कजरी औ चइता कै धून
रङ्गि देत है अङ्ग अङ्ग
खुशी मे न मातै वाला
दुःख से न हारै वाला
नेपाली होई ।
चलनचल्ती कै रिवाजन मा
छिपा **दर्शन,** औ ज्ञानविज्ञान
पुर्नलेखन कइकै हम
पूर्खन कै **विरासत** जोगवै वाला
नेपाली होई ।

उब्जाउ मैदानी जेस
छाती है चउड़ा हमार
नदियन के बहाव जेस
गतिशिल है हमार
जीवन नइया
पसिना से सिचिकै
मोती उब्जावै वाला
मेहनत से मोतियन मा
सुगन्ध भरै वाला
नेपाली होई ।
विरता कै इतिहास
विर कै गौरव गाथा
हमरे पथ कै **मार्गदर्शक**
भटकै न देय वाला
हिमाल पहाड़ कै **धैर्यता**
लइकै, नीला आसमान नीचे
वसन्ती फूलन सँग मुस्कियात
श्रम औ पसिना से
आज कै युग गीत लिखै वाला
नेपाली होई ।

शब्दार्थ

रीत : समाज मा चलत आवा चालचलन, परम्परा

श्रमशील : मेहनती

रोमान्चित : खुशी से गदगद

दर्शन : कवनो विषय कै मूलभूत सैद्धान्तिक अवधारणा

विरासत	:	आनुवंशिक रूप मा पुस्तान्तरण होत आवा स्वभाव औ अइसन विशेषता
जीवन नइया	:	जिन्दगी कै दैनिक गतिविधि
मार्गदर्शक	:	रास्ता बतावै वाला
धैर्यता	:	धीर स्वभाव कै, स्थिर चित्त कै
श्रम	:	मेहनत, काम

शब्द भण्डार

१. नीचे दिहा शब्द औ अर्थ कै जोड़ा मिलावा जाय :

कजरी	समथर जमिन
गाथा	रास्ता
मैदानी	सावन महीना मे गाय जाय वाली लोक गीत
पुर्नलेखन	गीतात्मक कथा
पथ	फिर से लिखै वाला काम
रिवाजन	स्तुती
	चलन, परम्परा

२. नीचे दिहा अनुच्छेद मा लघुतावाची शब्द टिपोट करा जाय :

जेठ कै महीना गरमी बहुत है । चउवाचाङर एक बूँद पानी कै तरसत हैं । सब पल भर बिना बेना के नाही रहि पावत हैं । यतनेन मा काकी खीरा कै फाँकी लइकै आईं । चुटकी भर नोन, मिरचा औ एक जवा लहसुन पिसिन । बनाहे बाबा टेकनी टेक आये औ खटोली पर बइठे । अपने समय कै बाति बतुवाय लागें ।

३. नीचे दिहा लघुतावाची शब्द वाक्य मा प्रयोग करा जाय :

डारि, बूँद, दाना, पाई, मेटिया, सूत, खुरपी

बोध औ अभिव्यक्ति

१. नीचे दिहा शब्द कै शुद्ध से उच्चारण करा जाय :

धैर्यता, मार्गदर्शक, मैदानी, श्रमशील, गाथा, रिवाजन, कजरी

२. 'नेपाली होई' कविता गति, यति, लय मिलाइकै वाचन करा जाय ।

३. 'नेपाली होई' कविता पढ़िकै दिहा प्रश्न कै मौखिक उत्तर दिहा जाय :

(क) कवि कवन गीत गावत हैं ?

(ख) कविता मा के का याद कइ गा है ?

(ग) कवन विषय मार्गदर्शक बना है ?

(घ) केह मा सुगन्ध भरै के बाति कइ गा है ?

(ङ) श्रम औ पसिना से काव लिखै के है ?

४. 'नेपाली होई' कविता पढ़िकै दिहा प्रश्न कै सङ्क्षिप्त उत्तर लिखा जाय :

(क) हमरेन का केकर विचार लइकै चलै के है ?

(ख) कवन चीज धैर्यता सिखावत है ?

(ग) हमरेन केत कै पुर्नलेखन करै के है ?

(घ) कवि के छाती काव जेस चउड़ा है ?

(ङ) कवि कवने बाति पर गर्व करत हैं ?

५. व्याख्या करा जाय ।

उब्जाउ मैदानी जेस

छाती है चउड़ा

नदियन के बहाव जेस

गतिशिल है हमार

जीवन नइया

६. **'नेपाली होई' कविता कै सारांश लिखा जाय ।**

७. **नीचे दिहा कविता पढ़िकै पाँच ठू प्रश्न बनावा जाय :**

"पढ़ाई से वापसी घरे"

- राघवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव
कपिलवस्तु

(१)

चल दिहिन मसोस मना सुदामा जी अपने घरे ।
राही भर श्याम जी कै याद बहुत आवै ॥
सोचैं विचारैं औ मन ही मन गुनै धुनै ।
कहाँ तलक पहुचे होइहैं हूलि हूलि आवैं ॥

(२)

सोचत बिचारत औ मगन होत अपनेनि मा ।
चलत चलत शाम ढला सुरजो लुकानें ॥
रुकैक परा कउनो ठौर राति भवा राही मा ।
रहिया कटाय भिनही चलब सुरुज के उगाने ॥

भाषिक संरचना औ वर्ण विन्यास

१. **नीचे दिहा विषयवस्तु पढ़ा जाय औ छलफल करा जाय :**

क्र.सं	कारक	विभक्ति	विभक्ति चिह्न	अर्थ
१.	कर्ता	प्रथमा	शुन्य (....)	काम सम्पन्न करै वाला
२.	कर्म	द्वितीय	क, का, कइहा	क्रिया मा असर करै वाला भोक्ता
३.	करण	तृतीय	से, सेती, द्वारा, सन्	काम करै वाला माध्यम, साधन, जरिया
४.	सम्प्रदान	चतुर्थी	का, खातिर, के लिए, लागी	काम, क्रिया, करण, केर, उद्देश्य, प्रापक(संयोग)
५.	अपादान	पञ्चमी	से, ते	हद, स्थान, समय, अलग, (वियोग)
६.	सम्बन्ध	षष्टी	आर, री, कै, केर, के, हार	मलिकाना स्वामित्व
७.	अधिकरण	सप्तमी	म, पर, प, म, महियाँ, ओर	आधार
८.	सम्बोधन		हे, ओ,	बोलावट

स्रोत : पाठक (२०७०: १११)

२. **नीचे दिहा वाक्य मा रेखाङ्कित पद के साथ आवा विभक्ति कै नाम लिखा जाय :**

(क) बच्चे अङना मा खेलत हैं ।

(ख) वन के हाथे भेज दिहा जाय ।

(ग) राम का देय के है ।

(घ) अम्मा खातिर लाय हन ।

(ङ) राधा से कहौ बताय देई ।

३. नीचे दिहा वाक्य मा रेखाङ्कित पद के साथ आवा कारक कै नाम लिखा जाय :

(क) उ पेन्सिल से चित्र बनाइस ।

(ख) राधा का जाय के है ।

(ग) कृष्ण द्वारा शिशुपाल कै वध भवा ।

(घ) यी सामान केकरे लागी होय ।

(ङ) यी वकरे खातिर होय ।

४. का, के, खातिर, द्वारा, कै, केर विभक्ति कै प्रयोग कइकै १०० शब्द कै एक ठू अनुच्छेद लिखा जाय ।

सुनाई औ बोलाई

सुनाई पाठ- ८

घरघरौंदा

- नागेन्द्र प्रसाद यादव

भैंइस कै पडरु, औ गाय कै बछरु
दुध दुहेन है, तानि तानि लेचरु
दुध औ रोटी, मिज मिज खायन्
धिरे धिरे हमहु, सग्ज्ञान भयन् ॥

साथी संघरी मिलि, खेलित् छुर
सभे कोइ मिता , आयो जरुर
औरौ खेलित् , गुल्ली डन्डा
बोकि बोकि कै, देश कै झण्डा ॥

सुबेरे दुपहरे , खेलित् घुच्ची
बात होय साहेब, सच्ची मुच्ची
धप्पच औ खेलेन् , घरघरौंदा
बनका जाय कै, खायन् करौंदा ॥

मिलि दाँहीजोटिया , खेलेन् चिभे
सावन कै बारिसमा, सभे कोइ भिजे
कबड्डी खेलत् , बहुत मजा आवा
ततलामतुल मे , सभे कोइ छावा ॥

१. सुनाई पाठ ८ सुनिकै पूछि गवा प्रश्न कै उत्तर कहा जाय :

(क) कविता मा कवि काव याद किहे हैं ?

(ख) कवि केकरे साथे खेल खेले हैं ?

(ग) कवि काव करत संग्यान भये ?

(घ) यहि कविता कै सार काव होय ?

२. कविता मे बताय गवा बाल खेल औ खाय वाले चिज नाम कहा जाय ?

सिर्जना औ परियोजना कार्य

१. नीचे दिहा शीर्षक पर कविता लिखा जाय :

(क) बगिया (ख) दशहरा

२. कवनो दूसरे कवि कै कविता पढ़ा जाय औ आप का कइसन लाग आपन विचार लिखिकै कक्षा मा सुनावा जाय ।

नदी कै आत्मकथा

- *आनन्द कुर्मी*

हम नदी होई, निरन्तर गतिशिल होब हमार खास परिचय । वइसै तो हमार नाम अनेक है जइसै : सरिता, प्रवाहिनी, तटिनी, वाहिनी, तरङ्गिणी, निर्झरिणी, शैलजा आदि । हमार स्वाभाव अति चन्चल है । होय के तो कब्बोकब्बो कुछ सुस्त होय जाइत है । कलकलात बहा करित है, निरन्तर- बिना रुके, बिना अटके, बस चल करित है । हमार जन्म, सोता, पर्वत औ हिमालय मे भवा है । वहीं से झरना के रूप मे आगे बढ़ित है । कब्बोकाल धीरेधीरे विशाल रूप धारण कइ लेइत है । जगह अनुसार हमार चेहरामोहरा बदलि जात है । अइसै बहतैबहत सागर मे जाइकै मिलि जाइत है । यही नाते केहुकेहु कहत हैं- सागर से हमार पूरान रिस्ता है । औ, सागर से मिलै के खातिर हम हरदम भागत रहित है ।

हमार बहाव हरदम यक्कै मेर कै नाही रहत है । हमार बहाव कब्बो तेज, तो कब्बो धीमा होय जात है । हम जगह अनुसार कब्बो सिकुरि जाइत है तो कब्बो सीना तानिकै पसरिकै बहित है । हमरे रास्ता मे बहुतै **अड़चन**, अवरोध आवत है । हमरे रास्ता मे कब्बो पाथर, कब्बो कंकड़ औ कब्बो चट्टान आय जात है । लेकिन, वहीँ हम नाही ठहरित है । अपने का अनुकुल होय के मेर से रास्ता बनावत चला करित है । झरझर बहा करित है अपने धुन मे गीत गावत !

मनई कै जीवन शैली हम से बहुत तरह से जुड़ा है । सहियै कही तो हम हम मनई के खातिर या कहा जाय जीवन औ जगत के खातिर अति उपयोगी हन । मनई के खातिर काहे के नाते उपयोगी हन ? हमरे भीतर जीव जन्तु रहत हैं, यहि नाते हम मनई के खातिर भोजन कै स्रोत होई । अइसै पता नाही हम केतने लोग कै पेट भरित है । हमरेन कारण से सब लोग का पानी कै सुविधा उपलब्ध होय पावत है । मनई जीवन मे पानी से अनगिनत काम करत है ।

हम पर्यावरण मे **पारितन्त्र** का सन्तुलन बनाये रहति है । हमरेन पानी से मनई बिजली पयदा करत है । वहि बिजली कै प्रयोग कइकै मशीनरी काम सब करत हैं । हमरेन नीर से खेतन कै सिंचाई कइकै फसल मे जान आवत है । अनाज लहलहाय लागत है । बगैचा मे लाग पेड़ फल से लदि जात है । सब ओर हरियाली छाय जात है ।

हम कवनो एक क्षेत्र, एक प्रदेश या कवनो एक देश से नाही बन्ही रहित है । हम्मै कवनो सरहद नाही रोकि पावत है । हमरे खातिर सब खुला है- हर जगह, हर क्षेत्र, प्रदेश, देश-अलगअलग रूप मे, भिन्नभिन्न प्रकार से, विभिन्न नाम के साथ ।

हमरे अस्तित्व का देखा जाय तो हमरेव भीतर भावना है, **एहसास** है; लेकिन हम कब्बो नाही कहि पाइत है । आप लोग येका हमार कमजोरी कहि सका जात है । चुप यहि नाते हन कि सायद प्रकृति, जे हमार माताश्री होयं, उनकै यिहै नियम है । हम यहि सीमा भीतर रहिकै आगे बढ़ित है । प्रकृति बहुत कुछ, बहुतो से कुछ ढेरै देत हीं । यी सब कइउ कै मूक रहत हीं । कब्बो कवनो चीज कै लेखाजोखा, हिसाबकिताब नाही माङत हीं । हाँ, लेकिन हम्मै यहि सन्दर्भ मे तकलीफ महसुस होत है । हमरो एहसास है, हमहूँ का दुःख औ सुख महसुस होत है । यही में प्रकृति कै महानता छिपा है ।

सहियै कही तो मनई हम्मै मुख्यतः प्रलोभी जान परत हैं । बस, आपन स्वार्थ पूरा करै के खातिर कवनो हद पार कइ सकत हैं । अइसन कहत के हम आप का बहुत उदाहरण औ कारण दइ सकित है । यी एक ठु उदाहरण बताइत है- मनई हम्मै देवी के रूप मे पूजत हैं, हमार पूजाअर्चना करत हैं । लोग हमरे जल भीतर हलिकै मन्नत माङत हैं । आपन इच्छा पूरा करै के खातिर व्रतउपवास करत हैं । फूल, प्रसाद चढ़ावत हैं । दान करत हैं । बछिया छुवत हैं । हमरे जल से सूर्य का या अपने पितृ या इष्ट देव का **अभिषेक** करत के बहुत बढ़िया लागत है ।

फिर वहीं दूसरे ओर हमरे भीतर गन्दगी फेंकत हैं, हम्मै प्रदूषित करत हैं । अब आपै लोग बतावा जाय देवी का भला केहु गन्दा करत है ! बस अइसै गतिविधि के कारण मनई कै दोहरा मानक सामने आय जात है । यदि हम्मै सच्चे मन से देवी मानत हैं तो, हमरे उपर कूड़ा या गन्दा नाही फेंकतें ।

आज परिस्थिति अइसन है कि नदी कै पानी अत्यन्त दूषित होय गवा है । उद्योग, कलकारखाना से निकरा जहरीला पदार्थ, कचरा, मलबा कै नाला मिलाय देत हैं । घर कै कूड़ा से निकरा प्लाष्टिक, गन्दगी, पर्वतिउहार कै जमा कचरा औ न मालुम केतना चीज नदी के पानी मे मिलिकै प्रदुषण फइलाये है । जवन अनेकन महामारी कै कारण बनि गवा है । कब्बोकाल आपन दुखरा सुनावै के मन लागत है ।

यतना दुखद अनुभव औ भोगाई के विपरीत कुछ अच्छा पल है, लम्हा है हमरे झोली मे । सुनसान खूबसूरत जङ्गल मे बहत जाइत है । वहीं कवनो थका बटोही के प्यास बुझाइत है । वहिसे बहुत अच्छा औ सुकुन महसूस होत है । बगैचा मे खेलत रहे नानमुन लरिके जब माटी से सना आपन छोटछोट हाथ हमरे पानी मे धोवत हैं । छपछप कइकै हमरे पानी के साथ खेलत हैं तब बहुतै आनन्द आवत है ।

पर्वतिउहार के समय मे गाँव के महिला लोग लोक गीत गावत जब नहाय आवत हीं । कलशा मे जल भरै आवत हीं । गङ्गा दशहरा के दिने सब लोग मिलिकै स्नान, दान औ भण्डारा करै आवत हैं । वहि दिन अउर बढ़िया लागत है । पूर्णिमा, अमावास्या औ **संक्रान्ति** मे जब लोग स्नान दान करै आवत हैं । मृत्यु संस्कार के वकत हमरेन तीरे आइकै सब काज करत हैं । यहिसे लागत है- आदमी के जीवन के हरेक गतिविधि कै गवाह औ सारथी होई । उलोग हमरे जल मे आइकै आपन अधिकारपूर्वक चाहे जेतना काम करैं । हम्मै यहिमे खुशी लागत है ।

खुशी होइकै हिलोरा लेत हम बहित है । आज कै मनई एक ओर खुशी देत दुसरे ओर कुछै देर मे दुःखी कइ देत हैं । हमरे जल मे औ किनारा पर फूहर करब तनिकौ भर बढ़िया नाही लागत है । यहिसे हमरे आत्मा मे उलोग के प्रति कवनो **आत्मीयता** नाही रहि जात है । हम अपनत्व के महसुस नाही कइ पाइत है । यहिसे सब खुशी फुर्र से उड़ि जात है ।

पर्व तिउहार के वकत, जब हमरे आसपास भीड़ **उमड़त** है । मेला लागत है । खूब रौनक होत है । सब के चेहरा पर मुस्कान होत है, तब बहुत अच्छा लगता है । तिउहार मे अलगै खुशी होत है । समुदाय कै छोटछोट बच्चे, बूढ़, जवान औ औरत सब जने बनठनिकै एक जगह एकत्रित होत हैं । भिन्नभिन्न प्रकार कै पकवान बनावत हैं । लोक शैली मे गावत हैं । हर्ष उल्लास के साथ हमरे तीरे पर्व मनावत हैं तो बहुत खुशनुमा लागत है ।

आज के आदमी से यक्कै अनुरोध है- हमरे जल कै शुद्धता कायम राखै के हर सम्भव प्रयास करा जाय । यहिसे आपै लोग कै जीवन सहज रही, स्वस्थ रही । हम यी सब आज तक के अनुभव से सिखे हन । अनुभव से मिला सीख कब्बो गलत नाही होत है । आपन जीवन सहज बनावै के अपनेन हाथेम है ।

शब्दार्थ

अड़चन	:	समस्या, बाधा
पारितन्त्र	:	पर्या व्यवस्था, पर्यावरणीय सन्तुलन
एहसास	:	महसुस
अभिषेक	:	जल छिटै वाला काम, सिञ्चन
संक्रान्ति	:	महीना कै पहिला दिन
आत्मीयता	:	हार्दिकता, आपन पन
उमड़त है	:	फइलत है, विस्तार होत है

शब्द भण्डार

१. नीचे दिहा शब्द औ अर्थ बीच जोड़ा मिलावा जाय :

आत्मकथा	मनौती, चाहना पूरा होय के कइ गवा बिनती
सहज	हार्दिकता
प्रयास	सन्तुष्टि, चिन्ता रहित
अपनत्व	परिवेश, चारोओर फइला जलवायु
सुकुन	कोशिश
मन्नत	आत्मचरित्र, अपनै कथा
पर्यावरण	आसान
	खुशनुमा

२. खाली जगह पर उपयुक्त शब्द पाठ से खोजिकै लिखा जाय :

(क) हमार जन्म, सोता, पर्वत औ .... मे भवा है ।

(ख) आपन .... सहज बनावै के अपनेन हाथेम है ।

(ग) सुनसान खूबसूरत जङ्गल मे .... जाइत है ।

(घ) मृत्यु संस्कार के वकत हमरेन .... आइकै सब काज करत हैं ।

(ङ) पर्व तिउहार के वकत, जब हमरे आसपास भीड़ .... है ।

३. 'नदी कै आत्मकथा' निबन्ध से पाँच ठू पारिभाषिक/प्राविधिक शब्द खोजिकै वाक्य मा प्रयोग करा जाय :

जइसै : नदी पारितन्त्र का सन्तुलन मे राखत है ।

बोध औ अभिव्यक्ति

१. नीचे दिहा शब्द शुद्ध से उच्चारण करा जाय :

तरङ्गिणी, निर्झरिणी, शैलजा, निरन्तर, आत्मीयता, निरन्तर, पारितन्त्र

२. 'नदी कै आत्मकथा' निबन्ध वसरीपारी सस्वर वाचन कइकै सुनावा जाय ।

३. 'नदी कै आत्मकथा' निबन्ध पढ़िकै पूछि गवा प्रश्न कै मौखिक उत्तर दिहा जाय :

(क) नदी कै पर्यायवाची शब्द कहा जाय ?

(ख) नदी के तीरे काव काव होत है ?

(ग) बच्चेन कै काम नदी का कइसन लागत है ?

(घ) नदी का केह मा खुशी लागत है ?

(ङ) अनुभव से सीखा ज्ञान कइसन होत है ?

४. 'नदी कै आत्मकथा' निबन्ध कै दूसरा अनुच्छेद शिक्षक से सुनिकै लिखा जाय ।

५. 'नदी कै आत्मकथा' पढ़िकै पूछि गवा प्रश्न कै सङ्क्षिप्त उत्तर लिखा जाय :

(क) नदी के उत्पत्ति कहाँ कहाँ से होत है ?

(ख) नदी के तीरे काव काव होत है ?

(ग) नदी केत कै सन्तुलन कायम राखत है ?

(घ) जल प्रदुषण कइसै बढ़ा है ?

(ङ) मानव जाति से नदी कै काव अनुरोध है ?

६. 'नदी कै आत्मकथा' निबन्ध कै तिसरा अनुच्छेद पढ़िकै पाँच ठू प्रश्न बनावा जाय :

७. व्याख्या करा जाय :

हमरे जल कै शुद्धता कायम राखै के हर सम्भव प्रयास करा जाय । यहिसे आपै लोग कै जीवन सहज रही, स्वस्थ रही ।

८. नदी कै महत्त्व पर एक अनुच्छेद मा आपन विचार लिखा जाय ।

९. 'नदी कै आत्मकथा' निबन्ध कै सार लिखा जाय ।

१०. नीचे दिहा अनुच्छेद से पाँच ठू बुँदा टिपोट कइकै सारांश लिखा जाय :

एक विशाल जङ्गल रहा । वहिमे पशुपक्षी औ जानवर रहत रहें । यहि जंगल मे मेर मेर कै वनस्पति रहा । जब वनस्पति मे फूल लागत रहा तब जंगल सुगन्धित होय जात रहा । अइसै फल पाकिकै भदरात रहें, वोकर बातै कुछ दूसर रहत रहा । शाकाहारी पशु फल खायकै अङिराय लागत रहें । अइसै कुछ मांसाहारी जानवर जवन दूसर छोट छोट जानवर का मारिकै खात रहें ।

यी बन एक जने न्यायी राजा के राज्य मे परत रहा । यहि नाते आदमी शिकार करै नाही आवत रहें । कब्बोकाल राजा राजकाज से उबिकै घोड़ा पर सवार होइकै सयर करै आवत रहें । बन हरियाली औ नदी झरना किनारे बइठिकै प्राकृतिक सौन्दर्य कै आनन्द लेत रहें । उनके साथे कुछ भारदार औ कर्मचारिउ आवत रहें । नदी कै पानी अपने गति मे बहत रहा, नदी मे जलीय जन्तु मछरी, मेघा, खचुहा निर्भय होइकै जलक्रिडा करत रहें । पेड़न पर चिरइन कै चिरबिर, बानर ढेढ्ढु कै चतुर चपलता बन मे संगित भरि देत रहा । खरहा, मोर उछल कूद करत रहें । बरसात के समय मे फिर दुसरेन रूप मे देखात रहें । यी कहा जाय ऋतु अनुसार उलोग के क्रिड़ा मे फरकपन आवत रहा ।

यहि जंगल के एक ठु गछनार पेड़ पर गरुड़ कै खोता रहा । गरुड़ मांसाहारी पक्षी होय । यी लोग साँप, बिच्छी, लगायत छोट न छोट जानवर, कीरा मकोड़ा का मारिकै खात रहें ।

जब जंगल मे उनके आहार वाले जीव कै कमी होय गवा । तब गरुड़ दूसरे बन मे चलि गवा । गरुड़ी बेचारी अकेली होय गई । खोता मे नान नान बच्चे रहें । वन्हरे

उड़ि नाही पावत रहें । बापमहतारी से लाय गवा खयका पर निर्भर रहें । अब गरुड़ी बेचारी अकेलै होय गई । बच्चेन का पालैपासै मे कठिनाई होय लाग ।

११. नीचे दिहा संवाद कै अंश पढ़ा जाय औ यात्रा मे जात के कवने कवने बाति पर ध्यान देय के चाहीँ कक्षा मे प्रस्तुत करा जाय :

अगहन कै महीना स्वर्गद्वारी कै यात्रा

भइया : सुनौ, काल्ह सबेरवै चलै के है ? आपन आपन सामान जतनियाय लेव ।(याद करावत)

पूनम : भइया, वहीँ घुमै जावा जात है तो, काव सामान लइ जाय ?

राशि : हम तो सामान नाही धरबै, झोरा लइकै चलै के परी ।

(यी लोग कै बाति सुनत रहीं अम्मा कमरा मे आवत हीं)

अम्मा : तोहरे लोग कै कवने बाति पर चिकचिक होत है ? चलै के है तो सब लोग तइयारी करौ न । हम तो हमरे जिम्मा के तइयारी मे लाग हन । खाय वाला सुखा चीज चिउरा-मोमफली भूजी लिहे हन, खजुरी औ गोझिया बनाय लिहे हन । थोरै के सुखा आलु कै तरकारी औ दलभरी पुड़ी बनाय लिहे हन ।

पूनम : अब अउर कइसन तइयारी अम्मा ?

अम्मा : हमरे वहीं दुइ दिन रुका जाई । बदलै के खातिर कपड़ा धइ लेव ।

राशि : अउर काव धरै ?

अम्मा : उ पहाड़ी जगह होय । अगहन के महीनो मे वहिं ठण्डी रहत है । सबेर औ सन्झा के बयारि चलत है ?

पूनम : अच्छा अब बाति मे समझ मे आय । अउर बतावा जाय ?

भइया : कहु खरोचपरोच लाग सकत है, थकान होय सकत है । यहिसे प्राथमिक उपचार के खातिर 'फ्रस्ट एड बक्स' धइ लिहा जाय ।

अम्मा : अपने दादी के खातिर मालिश वाला तेल धइ लेव। उपर चढ़ाइ पर चलत के गोड़ मे दर्द होय सकत है।

राशि : हम तो सोचत रहेन, घुमै जाय के है तो फटाफट जाय औ घुमघाम कइकै चलि आवै।

पूनम : हाँ राशि, अम्मा सही कहत हीं।

राशि : हमहुँ जानि गयेन।

भइया : अम्मा यी लोग का सम्झाय नाही पावत रहेन।

भाषिक संरचना औ वर्ण विन्यास

१. नीचे दिहा अनुच्छेद से गाढ़ा रङ लगाय गवा औ क्रियायोगी पद पहिचान कइकै लिखा जाय :

बुआ **काल्ह जल्दियै** आय गईं। मामी आज सबेरवै आईं। राघव **आकस्मात्** देखिन तो कुछ नाही बोलि पाइन। खबर पाइकै अम्मा **सरासर** आईं। घर **भरि** पहुना देखिकै धन्य होय गईं। काकी घारी **पिछवारे** बेह्रा से काँकरि लइकै आईं। सब लोग **आसपास** बइठिकै काँकरि खाइन। काँकरि बढ़िया **पाकि** नाही रहा। राघव कै घर औ खेत **आमनेसामने** है। राघव के कहनाव **अनुसार** दुइ दिन बाद छोटकी बुआ कै बियाह है।

२. 'नदी कै आत्मकथा' निबन्ध पढ़िकै पाँच/पाँच ठू नामयोगी औ क्रियायोगी कै टिपोट कइकै वाक्य मा प्रयोग करा जाय।

३. नीचे दिहा वाक्य पढ़ा जाय औ रेखाङ्कित शब्द कै पदवर्ग पहिचान कइकै लिखा जाय :

(क) शर्मिला <u>लाल</u> फ्राक पहिरे <u>रहीं</u>।

(ख) <u>अवधी</u> समुदाय <u>सांस्कृतिक</u> विविधता से <u>सुन्दर</u> है।

(ग) लरिके आज जल्दी विद्यालय गये ।

(घ) अबकिर बड़ा बड़ा कटहर फरा है ।

(ङ) बाबा बिमार होय के बाद कमजोर होय गवा हैं ।

४. श, ष औ स प्रयोग भवा पाँच/पाँच ठू शब्द लिखा जाय ।

सुनाई औ बोलाई

सुनाई पाठ -९

महोखा चिरई

एक ठू गाँव मा एक छोट के घर मा महतारी बेटवा रहत रहें । चइत-बैशाख महीना लगतै महतारी रोज सबेरवै महुआ बीनै जात रही । महुआ बीनिकै लाइकै अङनवै मा सुखुवावत रही । बेटवा का कवनो ओर जाय के नाही देत रही । अङना मा बइठिकै महुआ देखै के कहत रही । एक दिन उ महुआ कै सुखवन देखै गई । महुआ तो आधा से कम रहा । उ सोचिस- बेटवा रखावत के खाय लीन करत है । वोका बड़े जोर कै रीस लाग । आपन रिस नाही थाम्हि पाइस । बेटवा का मारै लाग । मरतैमारत बेटवा मरि गवा । बेटवा मरै के बाद रोवै लाग । परोसी लोग आये । पहिले तो सम्झाइन लेकिन अजब असली बाति जानि पाइन तो वनहू लोग वसरीपारी चला गये । अब रोज सबेरे महुआ बीनै जात के बेटवा कै चिन्ता करै लाग । चिन्ता करतै एक दिन उहौ मरि गई । मरै के बाद महोखा चिरई भई । वकरे बाद जइसै चइत- बैशाख कै महीना सुरु होत है । सबेरवै से बोलै लागत रही- पूत कहाँ...पूत कहाँ..पूत । जवन आजो सुनै के मिलत है ।

१. सुनाई पाठ ९ सुनिकै खाली जगह, पर मिलै वाला शब्द राखिकै कहा जाय :

(क) घर मा.......रहत रहें ।

(ख) ....बिनिकै लाइकै अङनवै मा सुखुवावत रही ।

(ग) आपन रीस नाही .... पाइस ।

(घ) चिन्ता करतै एक दिन उहौ ...... गई ।

(ङ) मरै के बाद महोखा .... भई ।

२. **सुनाई पाठ ९ के आधार पर दिहा प्रश्न कै मौखिक उत्तर दिहा जाय :**

(क) कवने महीना मा महुआ चुअत रहा ?

(ख) महुआ कहाँ फइलावत रही ?

(ग) बेटवा का काव किहिस ?

(घ) मरै के बाद ऊ काव भई ?

(ङ) महोखा चिरई कवने महीना मा बोलत ही ?

सिर्जना औ परियोजना कार्य

१. **नीचे दिहा शीर्षक पर निबन्ध लिखा जाय :**

(क) आम्दानी कै महत्त्व

(ख) पढ़ै वाला आदत

२. **आप के घरपरिवार के सदस्य कै काम औ पेशा के व्यवसाय के बारे मा पूछिकै लिखा जाय औ कक्षा मा सुनावा जाय ।**

मनई के जिन्दगी मे प्रविधि

- भगवान दास यादव

(जिन्गी के चार दशक कै यात्रा तयँ कै चुके हैं अवधराम । खेती किसानी औ पशुपालन करत । सयगर तौ नाही पढ़ै लिखै के मवक्का पाइन लेकिन स्कुल मे अठई दर्जा तक कै विद्या उनके नसिब होई गा । बचपनै से खानपान कै ज्यादा समस्या न रहै । आदमी नजायज कै सोँच गुन्ना न करै वाले मनमउजी रहहुक नाते अवधराम का अबही चालिस नाही छुये है । जबकी उनके दाँयाजोटी साथीबराती सब पुरनिया होइ गये । लेकिन आज पछिलहरेन नीँद टुटै के बाद अवधराम सोँच मंगन हैं । घर कुटिया, खटिया गोनरी तौ नीकनोहरै है । लेकिन लाख कोशिस करै के बादौ नीँन नाही परत है । वय सोँचिन शाम कै खाना खाय कै सउँकेरेन, पउँढ़ि गये । यहीसे होई आधिरात के बाद नीद हेराय गवा । लेकिन अंधेरेन मे सामाजिक घटना रंगीन फिल्मी तस्विर नेहाइत एक के बाद एक दृश्य उनके दिमाक का हिलोर कै राखि दिहिस है । उनके मन मे मेर मेर कै विचार परेड खेलत है । खास कइकै प्रविधि कै उपयोग औ दूरुपयोग पे ।)

राति कै समय, लुम्बिनी प्रदेश कै एक परम्परागत घर कै आपन कमरा ।

रान परोस मे सबके घरे वाईफाई जोड़ा है । मोबाइल मे हरहरउवा नेट दउरत है । गाँव कै सब से नीबर रामहेतौ असौं नेट (इन्टरनेट) जोड़ाय डारिन । कहत हैं यी तौ सूचना प्रविधि कै जमाना होय, समय के साथे नाही चलेव तौ बाल बच्चे आगे नाही बढ़ि पइहैं । कुँवा कै मेंघा कुँवा मे रहि जइहैं । कोरोना आवा तब तक इन्टरनेट कै पहुँच गाँव तक

रहबै नाही करा । विद्यालय कुल अनलाइन पढ़ाई चलाइस, धनीमनीन कै लड़के मोबाइलै से पढ़िन । उनके बच्चेन के पढ़ाई का कोरोना नाही छुइ पाइस लेकिन हमरे गरीब दुखिया कै कवन औकात ? गरीब दुखिया यहि नाते होइ गवा गा कि आय आर्जन कै कवनो बढ़िया श्रोत नाही है । **निर्वाहमुखी** जीवन खाय पहिरै के ठिक्कै होइ जात है । नतिजा लड़के आजतक पढ़ाई मे अव्वल नाही उतरि पाइन । सोँचा कुछ कमाई धमाई होइ तौ आगे सोँचब । मन मे तौ संवृद्धि औ विकास कै लालसा केकरे अन्दर नाही रहत है भला ? बच्चे **मुराहेल** नेहाइत ओही मोबाइल के कारन कहुँ यिनके घरे घुसरा रहत हैँ कहुँ उनके घरे । औ हम आज के यय जबानौ मे एक ठू टुकटुकही बटन मोबाइल के सहारे दश साल बिताय डारेन । नाही, अब तौ अत्ति होइ गवा । घर मे बिना नेट जोड़े उपाय नाही है । एक ठू स्मार्ट, स्क्रिन टच मोबाइल तौ खरिदहिक परा । चाहे कर्जा काहे न लेय के परै ? बेसी से बेसी एक टेम दूध न खाय के मिली । (अवधराम करवट बदलत हैँ)

अरे है बड़ा काम कै यी मशिन । अन्हरौ का हरेरी देखाय जात है । बताओ कहाँ है अमेरिका, कहाँ है वेलायत, यूरोप, दुबई, कतर, मलेसिया । सिकन्ड मा सन्देश पहुँचि जात है । वतना दूर रहे आदमीन से आमने सामने नेहाइत बतकही होइ जात है । आउर तौ अउरै है कहत रहे भइया अमेरिका तौ भगवान है । उपर से सब देख लेत है । आज नतिजा अपने सामने है । आदमी बन्द कमरा मइहा सिसिटिभी लगाये दुनिया देखत हैं । तब भगवान न कइ पाइन उ काम मनई कइ डारिन । (अवधराम बगल मे धरा करवा महिसे पानी पियत है)

बतावो जबाना कहाँ से कहाँ पहुँच गवा । विकास तौ भबै करा, बहुतै विकास भवा । बाप दादाके साथे रामायण सुना जात रहा तौ सोँचा जाय कि हाँ लंका कै रावण पुष्पक बिमान चढ़त रहा । आज हमही लोग बिमान चढ़ि सका जात है । वहीँ रामायण मे एक प्रसंग आवत है । जहाँ भगवान राम कै दूत हनुमान उनकै सन्देस लइकै अशोक बाटिका मे रहीँ माता सीता से भेंट करै जात हैँ । हनुमान जी का माता सीता नाही पहिचान पावत हीँ । वहि घडी हनुमान जी भगवान राम कै दिहा मुँदरी देखावत हैँ । सीता जी वय मुँदरी मे कोशौ दूर रहे भगवान राम का देखत हीं । अइसै हनुमान जी जब भगवान राम का सीता जी कै चुड़ामणी देत हैं । राम वही चुडामणी मे सीता देखत हैं । गजबै लागत रहा कि मने यतना दूर रहे आदमी भला कइसै एक दूसरे कइहाँ देखि सकत है । मन मे जिज्ञासा होय लेकिन यी भगवान कै लीला कहिकै चित बुझाय लिहा जात रहा । आज सोचौ तौ यि सब सहजै सम्भव भवा है । सात समुन्दर पार कमाय गये । अपने परिजन का देखै

के कवन बाति उनसे घण्टौ आदमी बतुवात हैं। काल, भिडियो काल, सब आम बाति होइ गा है।

चिनकना काल्हि बतावत रहा- दादा कवनो यस सवाल नाही जवने कै जबाब मोबाइल बताय न पावै। का कहत हैं दव आर्टिफिसियल इन्टेलिजेन्स। सहियै मे जबाना बहुत आगे निकरि गवा। मरि न जाब तौ अबही न जाने काव काव देखै के सुनै के मिली। अइसन **चमात्कारिक** यन्त्र तौ लेहिक परा। घर बइठे ग्रहदशा तक बताय देत है मने। लेकिन.... जा भला भै यिहौ कवनो बाति भवा। कमाई न धमाई। (**अवधराम करवट बदलत हैं**)

अरे अढाई साल कै लड़के बताओ चस्मा लगावै पे मजबूर होइ गये। यही मोबाइल के कारण यी अपने आँखि देखा हाल होय। मने जगदिश कै बेटवा ननकना पयदा भवा जबसे तबसे मोबाइल परसे आँखि हटिबै नाही करा। खाना खाय के होय तौ मोबाइल बिना अनाज भितर जातै नाही है। खेलकुद वही मोबाइल, गानाबजाना वही मोबाइल, उठतबइठत मोबाइल, शौचालय तक मोबाइल। बताओ कवन जमाना आय गवा। अरे बच्चे हौंय तौ कहौ अनारी हैं। सज्ञान बूढ़ि, जवान सब कै यक्कै हालत है।

आउर तौ अउर मारौ गोली, रिस्तेदारी मे चला गये तौ काइदे से हरहवाल होय के छोड़िन दिहिस। कायदे से बइठका मा बइठे नाही कि जेब से निकारि कै मोबाइल वाईफाई औ पासबर्ड करती इसारा करै लागत हैं। मानो वाईफाई नाही जोड़ा है तौ यी घर घरै न होय। लगिहैं छटपटाय। पहुना कै हालत अइसन रहत है औ घरवालेन कै कवन कमी। चारि परिवार चार ओर मुह किहे हैं। वही बित्ता भरेक मशीन मइहाँ आँखि गाड़े अङुरी घसरत रहिहैं।

दूसरे कै कवन बात, आपन बिती न कही। एक दिन ससुरारि गयेन औ जेस कहत माँगे पानी नाही मिली वहै हाल भवा। पुरनिया सास लड़केन का पचासौं दाँयीं कहिन- भइया अपने फूफ्फा का पानी लाइ देव। लेकिन लड़िके जइसै काने मा खूँटी गड़ा होय, न उठै के रहा न उठे। वही मोबइलिम चिपका रहि गये। बेचारौ बूढ़ा कहिन- जहुलिक करौ पूता पूता तहुलिक करौ अपने बूता। उनही टेकतटाकत पानी भेली लाईं। हमरे गुस्सा कै कवनो सीमा नाही रहि गा। मनही मन कहेन- अब हम ससुरार नाहिन आइब। अब यहु गति पय हम वाईफाई जोड़ाई .....न न हम तौ न जोड़ाइब वाईफाई।

बात यतनेन मा कहाँ ओरात है। हमरे परोसी रामचरित्र एक दिन बजनी भीड़े रहैं अपने दुलहिन से भिन्नही। हल्लाखल्ला सइगर सुना तौ किनराय गयन। बड़े मुस्किल से दूनौ परानी का छुटायन। रामचरित्र कहिन, "मने मेहरारू होइकै मर्द का मुकियावत ही। अइसन मेहरारू से हमार जिन्दगी न कटी।" उनकै दुलहिन कहिन," मने मूड़ **झनझनात** है अबही, मूठाभरि बारि झोटियाय डारिन। तोहरे साथे हम रहब ?" बड़ी किचवापोँई भवा। पहिले तौ कुछ समझै नाही आवा कि झगड़ा कवने बिसे भवा। लेकिन कुछ देरबाद **मामिला** घाम नेहाइत स्पष्ट होइ गा। बाति वही मोबाइलै कै रहा। रामचरित्र का सुबेरेन काम मे निकरै के रहा। नास्ता खाना कइकै जाबै कहिकै मेंधारू से संझइनै सल्लाह भवा। उनकै दुलहिन भली दाल भात चुल्हा पे बइठाय कै मोबाइल मे व्यस्त होइ गई। रसोई मे सगरिउ खाना जरि गा। यहर नहाय धोय के जब वय रसोई मे हलें तौ देखि **माजरा** घग्घाय उठें। जरुरी काम मे समय से न पहुचि पाइब सोंचिकै रामचरित्र झन्नाय गये औ मेहरारू के हाथे से छोड़ाइकै मोबाइल बहाय दिहिन। मोबाइल **चुनीमेरखुनी** होइ गा। उनकै दुलहिन रिस के आगि का आँखि नाही देखिन औ अपनेन मर्द से बजनी भिड़ गइँ औ लागी मुकियावै। रामचरित्र कवन कम, कसिकै झोंटा हिलोर दिहिन .. बश ..। रान परोस यक्ठ्ठा भये तौ रामचरित्र के दुलहिन का डाँटिन। उनहुँ कारन किहे फफक फफक कै रोवत रहीं। मने, तिल कै पहाड़ बनाय डारिन सब। अब यी तौ घर घर कै कहानी होइ चुका है। (अवधराम नोकिया मोबाइल मे टाइम देखत हैं तौ साढे चार बजि चुका रहत है)

धत्तेरिका यी दिमागो पता नाही काव काव सोचत है। न जाय वाले रास्ता कै केतना तनाव। दुनिया मना होय जवन करै। हम सब जन कै ठेका तौ नाही लिहे हन। मन होय ते तवन करै, हम के होई **बिठोकै** वाले ? चाहे जवन होय आदमी भले अपना गलत रास्ता पे काहे न चलै लेकिन दूसरे कइहाँ निकै रास्ता चलै के सिखावत है। बड़ा मनई बच्चेन का तमाखु खाय के, सिकरेट पिये के या दारू पिये के तो नाहिन सिखावत हैं। हाँ यी सत्य होइ सकत है कि केतना बड़ा मनई अपने पान कुँचे चारिउ ओर पिचकारी मारै से बाज नाही आवत हैं।

गाँव घर से लइकै सहर बजार तक कै बच्चे आज लागू औषध कै दुर्व्यवसन कै शिकार हैं। तमामन बच्चे आज **अनाहक** मे पुर्नस्थापन केन्द्र मे नरक कै जिन्दगी बितावै पे मजबूर हैं। काल्हि के दिन मे खाय वाला नसा। आज प्रविधि बनिकै जीवन मे घुसरा है। लेकिन

आज जब व्यवस्था बदला, लोकतन्त्र आवा तौ सभ्य राजा बनै लागें । नतिजा नसा वाला मसाला कै नेहाइतै दुरुपयोग भवा । अइसै कहै तो येकर अपव्याख्या भवा । होइ सकत है मोबाइलौ अइसै नसा के लत नेहाइत आदमी कइहाँ बरबाद कइ देय । 'जा भगवान ... यी दिमाग होय कि मन, बयारि तो नाही होय गवा .....काव काव छिनै भर मे सोँच ओरुवाय देत है । अरे अब न जोड़ै के होय तौ न जोड़ौ वाइफाई ... होइ गा न ... कोई चिरौरी तौ नाही करत है औ नाहिन बान्हे गाँव बसत है ....।

धत्तेरिका मुरगा बोलै लाग....आज मोबाइल के चक्कर मे सगरिउ राति ओराय गवा । (अवधराम बिछौना छोड़ि देत हैं औ डोल मैदान करै निकरि परत हैं ।)

शब्दार्थ

निर्वाहमुखी	:	गुजारा चलै वाला
मुराहेल	:	हँसीमजाक मे समय बितावै वाले
चमात्कारिक	:	आश्चर्यचकित करै वाला काम
झनझनात	:	रीस से चूर
मामिला	:	विषयवस्तु, बाति
माजरा	:	अवस्था, अवसर
चुनीमेरखुनी	:	छोट छोट टुकड़ा
बिठोकै	:	अवरोध करै
डोल मैदान	:	शौच, झाड़ा पेसाब के खातिर प्रयोग होय वाला शब्द
अनाहक	:	बेमतलब कै

शब्द भण्डार

१. नीचे दिहा शब्द औ अर्थ बीच जोड़ा मिलावा जाय :

अपव्याख्या	बातिबतङ्गड़
तनाव	बिन्ती, अनुरोध
किचवापोँई	कठिनाई
संवृद्धि	चिन्ता
मनमौजी	गलत व्याख्या
चिरौरी	बढ़िबढ़ाउ, विकास
मुस्किल	मन मा आवा विचार अनुसार चलै वाला
	बकठ्ठय

२. दिहा अर्थ बुझावै वाला शब्द 'मनई के जिन्दगी मे प्रविधि 'मनोवाद से खोजिकै लिखा जाय :

(क) आपसी विचार न मिलत कइ जाय वाला बाति

(ख) कवनो काम करै के बाध्य करब

(ग) काम न बनत कै होय वाला मानसिक अवस्था

(घ) जुरा मे लगावै वाला आभूषण

(ङ) खाना बनावै औ खाय वाला जगह

३. नीचे दिहा अनुच्छेद पढ़ा जाय औ गाढ़ा रङ मा रहा शब्द के जगह पर वइसै अर्थ आवै वाला शब्द राखिकै पुनर्लेखन करा जाय ।

आजकाल्ह **मनई** अपने बारे मा ढेर सोचत है । अउर केहु कै **मतलब** नाही करत

है । प्रविधि के विकास **सङ्हरियै** एकाकीपन बढ़ि गवा है । बहरे से सुखी देखात है लेकिन **तनाव** मे रहत है । अइसन **महौल** उ अपनेन बनाइस है । अब सोचै लाग है आवै वाले **लरिके** अइसन न करैं । यहि पर जल्दी **विचार** करै के परी ।

४. नीचे दिहा शब्द कै उल्टा अर्थ देय वाला शब्द पाठ से पहिचान कइकै लिखा जाय ः

शान्ति, व्याख्या, आपन, स्वतन्त्र, अस्पष्ट, विकास, खुशी

बोध औ अभिव्यक्ति

१. नीचे दिहा शब्द शुद्ध से उच्चारण करा जाय ः

मजरा, पुर्नस्थापन, दुर्व्यवसन, चुनीमेरखुनी, तनाव, आर्टिफिसियल, इन्टेलिजेन्स,

२. 'मनई के जिन्दगी मे प्रविधि ' मनोवाद वसरीपारी सस्वर वाचन कइकै सुनावा जाय ।

३. 'मनई के जिन्दगी मे प्रविधि ' मनोवाद पढ़िकै पूछि गवा प्रश्न कै मौखिक उत्तर दिहा जाय ः

(क) मोबाइल से कवन कवन काम कइ सका जात है ?

(ख) गाँव मे केत के कारण झगड़ा भवा रहा ?

(ग) मनोवाद कै पात्र कवन चीज खरिदै के बाति किहे हैं ?

(घ) लरिके केह मा व्यस्त रहत हैं ?

(ङ) कोरोना काल मा कइसै पढ़ाई होत रहा ?

४. 'मनई के जिन्दगी मे प्रविधि' मनोवाद कै चउथा अनुच्छेद शिक्षक से सुनिकै लिखा जाय ।

५. 'प्रविधि कै उपयोग औ दुरुपयोग' मनोवाद पढ़िकै पूछि गवा प्रश्न कै सङ्क्षिप्त उत्तर लिखा जाय :

(क) मोबाइल औ इन्टरनेट से होय वाला तीन ठू फायदा लिखा जाय ?

(ख) मोबाइल औ इन्टरनेट कइसन समस्या खड़ा किहे है ?

(ग) प्रविधि कै उपयोग कइसै कइ सका जात है ?

(घ) लेखक कवने समय कै प्रविधि याद किहे हैं ?

(ङ) प्रविधि का विकास से कइसै जोड़ मिली ?

६. 'प्रविधि कै उपयोग औ दुरुपयोग' मनोवाद कै पँचवा अनुच्छेद पढ़िकै पाँच ठू प्रश्न बनावा जाय :

७. भाव विस्तार करा जाय :

सहियै मे जबाना बहुत आगे निकरि गवा । मरि न जाब तौ अबही न जाने काव काव देखै के सुनै के मिली ।

८. "प्रविधि मनई के जीवन कै हिस्सा बनि गवा है ।" यहि विषय पर पाँच ठू बुँदा तइयार करा जाय औ अनुच्छेद लिखा जाय ।

९. 'प्रविधि कै उपयोग औ दुरुपयोग' मनोवाद कै सार लिखा जाय ।

१०. नीचे दिहा मनोवाद के अंश पढ़ा जाय औ वोकर सारांश लिखा जाय :

सन्झा कै खाना खाइकै बिछौना पर आय गा हन । नीद नाही लागत है । लकडाउन के कारण बहरे नाही जाय के परत है । आज दिनौ मे दुइ घण्टा सोय गवा रहेन वहिसे होई । मोबाइल मे एफएम रेडियो लगायन, वहुँ यहू घरि उहै कोरोना भाइरस कै बाति । मन मे बाति हिलोरा लेय लाग- यहि घरि विश्वभर महामारी के रूप मे फइला कोरोना (कोभिड-१९) के प्रभाव से ढेर जइसन देश मे लकडाउन है । नेपाल

सरकार स्वास्थ्य सुरक्षा का ध्यान मे राखिकै लकडाउन किहे है । दिन बितै लाग, शंका लागै के नाते हमहुँ क्वारेन्टीन मे हन । कइसन आफत कै समय आय गवा । कुछ लोग पता नाही काव काव बोलै ओ सोचै लागें ।

गर्मी वइसै प्रचण्ड है । होय के तो हमरेन कै नेपालगञ्ज अधिक गर्मी होय वाला जगह होय । दिन मे अम्मा बप्पा से भवा बातचीत दिमाग मे आय गवा । वनहु लोग बहुत चिन्ता करत हैं । हरदम आपन सुरक्षा मे ध्यान देव, हमरे तो पाकल आम होइ कहत हैं । उ लोग कै बाति सुनै के बाद तो एक घड़ी हमरो मन घबड़ाय गवा । कमरा में लटका क्लेण्डर पर नजर गवा । वहीं एक ठू पंक्ति लिखा रहा, वोकर आशय कुछ अइसै रहा- जीवन संघर्ष के भठ्ठी से निकरा बहुमूल्य खजाना होय । येकर सदुपयोग करै के चाहीँ ।

भाषिक संरचना औ वर्ण विन्यास

१. नीचे दिहा अनुच्छेद पढ़ा जाय औ संयोजक पद कै पहिचान कइकै लिखा जाय :

रजनी औ रेखा आईं । जब से उलोग आय हीं तब से कमवै मा लाग हीं । काकी नास्ता बनाइन लेकिन रजनी परोसिन । रजनी औ बुआ पहिलेन आय गईं काहेकी उलोग कै काम जल्दी ओराय गवा । काम के साथसाथ संस्कार एवं संस्कृति कै बाति भवा । रजनी कै अइसै सोच है मगर रेखा कुछ दुसरै सोचत हीं ।

२. नीचे दिहा वाक्य पढ़ा जाय औ विस्मयादिबोधक पद पहिचान कइकै लिखा जाय :

(क) उफ् ! आज तो बहुत गरमी है ।

(ख) बाप रे ! केतना बड़ा साँप जात है ।

(ग) अरे ! यतना जल्दी चलि आयेव ।

(घ) ओहो ! कइसन वकत पर घटना घटा ।

(ङ) बेचारी ! बहुतै डेरान हीं ।

३. **नीचे दिहा अनुच्छेद से निपात पता लगाइकै लिखा जाय :**

आपन बाति स्पष्ट कहौ न । हम तो पहिले बताये रहेन । हमहीँ भर से काहे, अरे वनहु से पूछि लेव । हाँ हाँ, तुहुँ चला जावो ।

४. **संयोजक, विस्मयादिबोधक औ निपात कै प्रयोग कइकै मनोवाद लिखा जाय ।**

५. **ग्यँ औ ज्ञ प्रयोग भवा पाँच/पाँच ठू शब्द लिखा जाय ।**

सुनाई औ बोलाई

सुनाई पाठ -१०

पढ़ै के सहज

हम का छोटै से शिक्षक बनै के मन रहा । हम्मै भाषा विषय पढ़ावै के बढ़िया लागत है । अध्ययन पूरा करै के बाद हम अवधी भाषा पढ़ावै लागेन । जवने विद्यालय से हम एसएलसी पास किहे रहेन । हम पाँच, छ औ सात कक्षा मा पढ़ावत रहेन ।

कक्षा मा सब जने विद्यालय कै पोशाक पहिर कै आय रहें । अभिवादन करै के बाद आदरभाव प्रकट किहिन । पाठ पढ़ावै के बाद सवाल जबाब कै सिलसिला सुरु भवा । हम एक एक सवाल के जबाब देत गयन । हम तो जानकार हन कहै वाले सोच के साथ कक्षा मा गई रहेन । लेकिन विद्यार्थी लोग के बातचीत से बहुतै बाति सिखै के बाँकी है जेस लाग । हम से पूछि गवा सवाल कै जबाब विद्यार्थी लोग बहुतै सजग होयकै देत रहें । उलोग कै प्रस्तुती बहुत बढ़िया रहा । हम आपन विगत याद किहेन ।

पहिलो दिन कै शिक्षण अनुभव से बहुत बाति सिखेन । उलोग कुछ अइसन सवाल पुछिन रहै जवने कै जबाब हम नाही दइ पायन । विद्यार्थी के सवाल के आगे हमार यतना वरिस कै पढ़ाई औ तालिम कम परि गै । विश्वविद्यालय स्तरीय पढ़ाई अनुभव औ अध्ययन बडा होय जेस लाग । यकरे साथसाथ अपने से छोटौ से सिखै वाला बाति बहुत रहत है । यिहौ महसुस किहेन । यी अनुभव जीवन मे पहिल दफी किहेन । पढ़ै के सहज होत है लेकिन दूसरे का पढ़ावै के गाह्र होत है !

१. सुनाई पाठ १० सुनिकै दिहा प्रश्न कै उत्तर कहा जाय :

(क) शिक्षक कवन विषय पढावत रहें ?

(ख) शिक्षक कवने विद्यालय मा पढावै गयें?

(ग) पाठ पढै के बाद केत कै सिलसिला सुरु भवा ?

(घ) विद्यार्थी कै लोग कइसै उत्तर दिहिन ?

(ङ) अन्त मा शिक्षक का कइसन महसुस भवा ?

२. सुनाई पाठ १० के आधार पर शिक्षक कै अनुभव बतावा जाय ।

सिर्जना औ परियोजना कार्य

१. नीचे दिहा शीर्षक पर मनोवाद लिखा जाय :

(क) कक्षा कै पहिला दिन

(ख) गाँव मे भवा विकास

२. विद्यालय बन्द रहा समय पर आप के मन मा कइसन विचार आवत है, वका लिखिकै कक्षा मा प्रस्तुत करा जाय ।

जङ्गलवा गावै लाग

जेठ कै महीना रहा । बहुतै दिन से तपन बढ़तै जात रहा । तालपोखरा सुखाय लाग रहा । दुदुरा मे कहुँ कहुँ पानी रहा । वहूँ कै सोता मन्दमन्द साँस लेत रहा पुरनियाँ जेस लागत रहा । नदियौ मे पानी कम होय गवा रहा । आम कै मिहिन मिहिन टिकोरा सुखाय लाग रहें । जमुवाँ कै बतिया **कोम्हिलाय** लाग रहा । महुवा के कुचा डरियै मे झुराय लाग रहा । यी सब देखिकै भरोसे काका का लागत रहा कि अब कवनो अनहोनी होय वाला है । गाँव मे सब के मुँह से यक्कै बाति निकरत रहा- अब तपन बहुत होय गवा दइउ, ढेर परीक्षा **मुनासिब** नाही है । घरघर के लोगन कै यिहै जपना रहा ।

दइउ का तो केहु देखे नाही है लेकिन वय मुँहमुँह कै बाति सुनि लिहिन मनो । आसमान मे बादर देखाय लाग । बादर देखतै भरोसे काका कुदारि उठाइकै खेत के ओर चलि दिहिन । काकिउ काका का जात देखिकै सोचिन- अब बीया कै धान भेवै के परा ।

आन्हीपानी आवै कै मौसम बनत रहा । यहिसे दुपहरवै के गउधुर होय गवा जेस लागत रहा । कवनो बड़वारै आफत कै आशंका होत रहा । **चउवाचाङर** जोर जोर से बोलै लाग रहें । चिरई अपने खोता के ओर दउरै लाग रहीं । कुकुर बिलारि यहर से वहर करत रहें । यतनेन मा बादर गरजै लाग । आन्हीबयारि औ पाथरपानी यक्कै बेर गिरै लाग । बड़े

मुश्किल से भरोसे काका घरे आयें । तब्बो दुइचार पाथर तो लागिन गवा रहा । गायबछरू चिल्लात गाँव के ओर भागत आवत रहें । धान के बीया निकारै गइँ जुमिलाही काकी चुपचाप बादर कै गर्जन औ आन्हीबयारि कै **ताण्डव** सुनत रहीं ।

पहिले पहिले अइसन नाही होत रहा । समय से पानी बरसत रहा औ अनाज पयदा होत रहा- बनाहे बाबा मनैमन सोचत हैं । यतनेन मे राजन पत्रिका मा छपा हाथी देखावत कहत है,“बाबा, बर्दिया के लोग का बहुत समस्या है । उलोग के गाँव मा हाथी आइकै फसल नोक्सान कइ देत ही । बाघ आइकै चउवन का उठाय लइ जात है ।”

“एक ओर समय पर बरखा न होय के नाते चिन्ता है । अब जगह जगह पर बनैया जानवर आइकै फसल चरि जात हैं । हमरेन के हियाँ लीलगाय आइकै पलाट कै पलाट सफाचट्ट कइ देत हीं । एक गनिमत है, वन्हरे घर, कुरिया नाही भहरावत हीं । अइसै न केहू का मारत हीं । न तो बाघ चउवा उठाय लइ जात हैं ।” बाबा कहिन ।

“यी घरघर औ गाँवगाँव कै समस्या होय । एक दिन चेतरादेई वाला रेडियो कहत रहा कि रखवारी के खातिर किसान लोग खेतवै मे मड़ई बनाइकै रहत हैं ।” दादी अपने सुना बाति कहिन ।

जङ्गल औ जीवन कै सम्बन्ध स्थानीय लोग बढ़िया से बुझे रहें । विकास औ प्रविधि कै बाति सुनत के वनहू लोग देश मे होय वाला विकास निर्माण के काम बाधा नाही करै के चाहत रहें । कुछ सालि यहर विकास के नाम पर बन फड़ानी द्रुत गति से भवा रहा । अब येकर असर गाँव वालेन के दैनिकी औ काम मे परै लाग रहा । यकरे बारे मे कवनो सुनवाई नाही होत रहा । काम करै वाला तो बहुत निकाय औ सरोकार वाला रहें । लेकिन यहि ओर केहु कै ध्यान नाही जात रहा । हरेक दिन केहु न केहु बनाहे बाबा का यी समस्या सुनावत रहा औ सुल्झावै के कहत रहा ।

एक दिन तो खैरापुर के पलटू के खेत कै सारा मुङ हाथी चरिकै चलि गइँ । रघ्घु कै एक बिगहा कै केरा तो पूरा तहसनहस कइ दिहिन है । यी बाति के से कहै सोचत बनाहे बाबा के घरे आये । वहीं तो दुइ चार जने अउर लोग बइठा रहें । सब लोग असमय होय वाला बरखा औ बनैया जानवर कै **मनमानी** के बारे मे बात करत रहें । समस्या समाधान के खातिर बनाहे बाबा सब का शिव मन्दिर के चबुतरा पर बोलाइन । गाँव के बूढ़, जवान, महिला पुरुष सब जने समय मिलाइकै जमा भयें ।

“समस्या काव है, के करत है । यी कहै के नाही परी ।” बनाहे बाबा कहिन ।

“यी सब समस्या कइसै बढ़त गवा, यहि पर आपन आपन अनुभव वसरीपारी आप लोग सुनावा जाय ।” बूढ़ पुरनिया के इसारा करत सहदेव कहिन ।

“पहिलेव जङ्गल मे हाथी, बाघ, चितवा, लीलगाय, **चपरहन्नी,** हरिण लगायत अउर तमाम जानवर रहत रहें । बड़ाबड़ा पेड़ रहा । जङ्गल घना रहा । सब मेर के जानवर के खातिर सब मेर फलफूल औ घाँस बनै मे मिलि जात रहा । जङ्गल कै क्षेत्रफल ढेर रहा ।” अचल काका आपन बाति कहिन ।

बइठकी मे आये युवा पुस्ता ध्यान दइकै सुनत रहें । रामलखन कहत हैं,“यी असमय बरसात कै कारण का होय काका ?”

“यहू कै कारण बन विनाश होय ।” काका कहिन ।

“अरे, भइया यतनै भर नाही । बहुत जने कै रोजी चलत रहा बन से । लोग पात तुरिकै पतरी बनाइकै बेचत रहें । **खरखोदवा दवाई** लइ आवत रहें । जलावन, काठ, घाँस, खाद बनावै के पताई सब लावत रहें । मौसम अनुसार पाकै वाला फल, फूल, तरकारी सब मिलत रहा ।” राममिलन बाबा सुनाइन ।

“एक हिसाबे तो गाँव वालेन कै जीवन कै आधार रहा बन औ बनैया उत्पादन !” अयोध्या भइया कहिन औ अउर जने हाँ मे हाँ मिलाइन ।

“जाड़ा खतम होय के बाद मेर मेर कै चिरई बोलै लागत रहीं । कवनो तो पछिलहरवै बोलैं तो कवनो रातिके । बनैया जानवर बोलैं चिघ्घारैं तो लागै कि बन गावत है औ बतुवात है । लेकिन का कहै देखतदेखत कुलि चउपटचार होय गवा ।” दीनानाथ बन के ओर ताकत कहिन ।

सभा मे उपस्थित लोग आपन आपन अनुभव सुनावत रहें । जवने से समाधान नाही निकरत रहा । एक दूसरे कै बाति सुनिकै भावुक होय जात रहें । बाति जहाँ से सुरू होत रहा वहीँ जाइकै खतम होय जात रहा । बन के विनाश के सङहरियै प्राणिन के विनाश सामने रहा । यतनेन मे कुछ युवा लोग यहि पर विचार करै लागें ।

“हाथी कै रुची औ स्वभाव के बारे मे जानकारी संकलन करा जाय ।”

"अकेलैअकेल काम करा जाई तो सफलता नाही मिली।"

"जङ्गल का पहिलेन के अवस्था मे लउटावै के परी।"

"हाथी लगायत के बनैया जानवर आहार के खोजी मा गाँव मे आवत हैं। कुछ दिन के खातिर तइयारी खाना कै व्यवस्था कइ देय के परा।"

"बन इलाका का कँटहा तार से घेरि दिहा जाय औ सन्झा के समय जोड़जोड़ नगरा बजावा जाय।"

"कुछ दिन तक जङ्गल का चरन या अन्य काम के वास्ते प्रयोगै न करा जाय।"

अइसै अइसै तमाम विचार सामने आवा। बूढ़पुरनिया लोग का युवा लोग कै विचार मन भाय गवा। उलोग अपने बलबूता होय वाला साथसहयोग करै के तइयार भये।

दूसरे दिन रघ्घु काका के अगुवाई मे बन इलाका का घेरै कै काम सुरू भवा। हाथी के खातिर गन्ना, पाता सहितकै पिपर कै डारि, औ केरा कै थाम्ह आदि हाथी आवै वाले रास्ता धइ दिहिन। सन्झा के रामखिलावन, भरोसे, सुखराज औ अउर दुइ चार जने नगारा बजावै लागें। राति के एकदुइ बेर हाथी चिघ्घारै के भर सुनि मिला।

कुछ दिन तक हाथी कै खाना धरै के औ नगारा बजावै के निरन्तर चला। यहर गाँव के युवा लोग बन के खाली जगह पे बाँस औ अउर पउधा लगावै लागें। जङ्गल मे टहरत के उलोग जानि पाइन कि हाथी छोट पउधन का नाही खात है। धीरेधीर जङ्गल हरियर कचनार होय लाग। कटान भवा पेड़न से नवाँ डारि हरियाय लाग। अब गाँव मे एक मेर से खुशी छावै लाग रहा।

सबसे ढेर चाख पलटू काका औ रघ्घु देखाये रहें। वनही लोग फिर से युवा लोग कै बइठिकी किहिन। रामखिलावन कहिन,"जङ्गल मे पानी कै व्यवस्था कइ मिलै तो जङ्गल अउर जल्दीजल्दी बाढ़ी।"

यिनके बाति मे अबकिर अउर युवा लोग सहमति जनाइन। यहू विषय पर बहुत जने कै विचार आय।

"जङ्गल मे जगह जगह पर चोड़ा खनि दिहा जाय।"

“नाही, यी नाही ठीक रही । यहिमे जानवर कै बच्चे गिरिकै मरि सकत हैं ।

“जङ्गलवा के बिचवा मे जवन सोइया है । वहि मे से जगहजगह पर कुलवा खनि दिहा जाय । यहिसे जङ्गल मे सिचाई होय जावा करी ।” नन्कू कहिन ।

बइठिकी के बाद सब जने नन्कू के राय पर अमल किहिन । बूढ़वन के सुझाव अनुसार कुलवा खनै के बाति पक्का होय गवा । हप्ता दिन भीतर जङ्गल मे कुलवा खनिकै तइयार होय गवा । कुलवा मे पानी निरन्तर बहै लाग । कुछै महीना बाद जङ्गल तिव्रगति मे हरियाय लाग । जङ्गल मे चिरईचिरङ्गन कै सङ्ख्या बढ़ै लाग । अइसै चपरहन्नी, मृग, हरिण, भालू, चितवा, हुड़ार, लीलगाय, बाघ, बानर ढेढ्ढू कै सङ्ख्या बढोत्तरी होय लाग । नदिया मे स्थानीय प्रजातिकै जलचरो कै आवादि बढ़ि गवा ।

बसन्त औ शरद ऋतु मे गननमनन फूल पेड़न पर लदि जात रहा । चिरइन कै चहचाहट से बन **गुञ्जयमान** होय जात रहा । चिरई सब उड़िकै गाँव मे चलि आवत रहीं । गाँव के बगियन का आपन बसेरा बनाय लेत रही । लरिके मारे खुशी कै कूदै लागत रहें । बूढ़पुरनिया चिरइन के जाति बताय बताय के बहुत दिन बाद देखै के मिला कहिकै बतुवायं । हाथी गाँव मे आइकै नोक्सान करै के छोड़ दिहिन । जङ्गल बीच होइकै बहै वाला सोइया बबई नदी में मिलत रहा । बबई औ कर्णाली नदी में सोंस आवै जाय लागीं । फिर धीरेधीरे जङ्गल से लोग कै गुजारा चलै लाग । बनैया जन्तु कै बोल औ चिरइन कै **कलरौ** से लागै जइसै जङ्गलवा गावत है ।

शब्दार्थ

कोम्हिलाय	:	घाम औ तपन से सुखाब
मुनासिब	:	उचित, उपयुक्त
मनमानी	:	जबरदस्ती
चपरहन्नी	:	कृष्णसार
खरखोदवा दवाई	:	जडीबुटी से बनै वाला दवाई
गुञ्जयमान	:	मधुर आवाज कै फइलावट
कलरव	:	चिरइन कै चिरबिर आवाज

शब्द भण्डार

१. **नीचे दिहा शब्द औ अर्थ पर छलफल करा जाय :**

अर्थ	**शब्द**	**अर्थ**
बाण	तीर	नदी, पोखरा कै किनारा
वरदान	वर	दुलहा
फन्दा	जाल	पासा
पायजामा कै डोरी	नारा	नदी मे मिलै वाला सोता
बल	जोर	जोडी
पन्द्रह दिन कै समय	पाख	पवित्र

२. **दिहा शब्द पढा जाय औ शिक्षक से छलफल कइकै अर्थ लिखा जाय :**

प्रजाति, जलचर, सोंस, बसेरा, बइठिकी, चाख, पाल, जिविका, बनैया, भावुक

३. **नीचे दिहा अनेकार्थी शब्द कै फरक अर्थ आवै के मेर से वाक्य मा प्रयोग करा जाय :**

गोल, कर, उत्तर, मास, हार, ताल, सार, अर्थ

४. **नीचे दिहा शब्द का वाक्य मा प्रयोग करा जाय :**

निरन्तर, बनैया, चउवाचाङर, सोइया, कुलवा, क्षेत्र, पल, बइठिकी, नगारा, चिघ्घारै,

बोध औ अभिव्यक्ति

१. **नीचे दिहा शब्द शुद्ध से उच्चारण करा जाय :**

चउवाचाङर, चिघ्घारै, कर्णाली, चपरहन्नी, ऋतु, गननमनन, बलबूता, व्यवस्था

२. ‘जङ्गलवा गावै लाग’ कथा वसरीपारी सस्वर वाचन कइकै सुनावा जाय ।

३. ‘जङ्गलवा गावै लाग’ कथा पढ़िकै पूछि गवा प्रश्न कै मौखिक उत्तर दिहा जाय :

(क) गाँव मा कइसन समस्या बढ़ै लाग रहा ?

(ख) बन कइसै विनास भवा ?

(ग) गाँव वालेन कै जिविका केह पर निर्भर रहा ?

(घ) गाँव कै समस्या समाधान कै अगुवाई के किहिस ?

(ङ) बन फिर से हरियाय के बाद कइसन महसुस भवा ?

४. ‘जङ्गलवा गावै लाग’ कथा कै सतवाँ अनुच्छेद शिक्षक से सुनिकै लिखा जाय ।

५. ‘जङ्गलवा गावै लाग’ कथा पढ़िकै पूछि गवा प्रश्न कै सङ्क्षिप्त उत्तर लिखा जाय :

(क) बन औ जीवन कै सम्बन्ध कइसन है ?

(ख) समस्या कै समाधान कइसै कइ सका जात है ?

(ग) बन विनास कै असर केह पर केह पर परा रहा ?

(घ) रामखिलावन कइसन सुझाव दिहिन ?

(ङ) गाँव के पुरनिया लोग काव कइकै हउसिला बढाइन ?

६. ‘जङ्गलवा गावै लाग’ कथा कै अन्तिम अनुच्छेद पढ़िकै पाँच ठू प्रश्न बनावा जाय :

७. भाव विस्तार करा जाय :

“एक हिसाबे तो गाँव वालेन कै जीवन कै आधार रहा बन औ बनैया उत्पादन ।”

८. 'जङ्गलवा गावै लाग' कथा मा घटा मुख्य मुख्य घटना कै सूची बनावा जाय ।

९. कथा मे कवने कवने पात्र कै विचार समस्या समाधान मे सहयोग सावित भवा, टिपोट बनावा जाय ।

१०. 'जङ्गलवा गावै लाग' कथा कै सार लिखा जाय ।

११. नीचे दिहा कथा कै अंश पढ़ा जाय औ पूछि गवा प्रश्न कै उत्तर लिखा जाय :

सहजिना गाँव मइहाँ दुलारे मौर्य केर छोट परिवार रहत रहै । एक लरिका सुर्दशन, एक बिटिया कमला औ अपना दुइ परानी रहत रहें । छोट परिवार, थोरै खेतीपाती रहय, भैंइस चार ठउर पाले रहयँ वही के दूध बेचिके घर परिवार खर्चापानी बड़े आराम से चलत रहै । कवनो दुःख कष्ट या समस्या नाही रहै ।

समय बितत जात रहा । साल पर साल कइकै समय आगे बढ़त रहा । देखतैदेखत लरिका बिटिया सयान होई गयें । अब दुलारे कइहाँ बिटिया कै बियाह चिन्ता होय लाग । वय अपने सगीसम्बन्धी से सहयोग लइकै यहर-वहर लरिका देखै जाय लागें । लेकिन वनके मने समझ मइहाँ नाही आवै । सबसे कठिन बाति रहै कि बिटिया पढ़े लिखे नाही रहै । दुलारे कबहूँ बिटिया लरिका कइहाँ पढ़ावै कै बारे मे सोचबै नाही किहिन । औ अपनेव पढ़े लिखे नाही रहैं । पढ़ाई लिखाई कै कदर जनबौ नाही करैं औ करबौ नाही किहिन ।

ढूँढत- ढूँढत उनहिन के गाँव से तीन कोस पर रहा केवलपुर गाँव । वहि गाँव मइहाँ गुरदीन मौर्या के लरिका से अपने बिटिया के बियाह कै बाति चलाइन । उनहु लोग अपने लरिका जोखन मौर्या कै बियाह करै के खातिर राजी भयें । लेनदेन केर बाति दुलारे औ गुरदीन आपस मइहाँ गुपचुप किहिन । केहु का तनिकौ भर पता नाही चलि पावा । जब दुलारे अपने घरे आइकै अपने मल्किन कइहाँ सगरिऊ बाति बताइन तौ उनहूँ चिल्लाय परी - अतना दहेज हम कहाँ से पूरा करबै । यी रिस्ता रहै देव कवनो दुसरे जगह लरिका देखौ । दुलारे कहै लागें "हम बहुत जगह देखेन औ बुझेन हमरेन का यिहै लरिका ठीक है । कर्जा, उधार लइकै बिटिया कै बियाह कइ देबै । अब ढेर देखभाल औ पुछैपछोरै वाला बातिबतकही न करौ ।" अइसै घरपरिवार औ नातबात का समझाइन तौ सब समझि गयें । अब धीरे धीरे बियाह

कै तइयारी होय लाग । अन्तिम समय तक लेनदेन के बारे मे केहु नाही जानि पाइस । कुछ लोग दुलारे से पुछबो कहिन मने लेकिन दुलारे बाति कइहाँ हरकेहु के साथे गोलगोल घुमाय दिहा करैं ।

जब बियाह कै दिन अउर नेरे आवा तौ तब दुलारे एक दिन सकारेन हरिहर ठाकुर के घरे गयें । औ राम राम पाव पयलगी के बाद मइहाँ कहै लागें "हम बिटिया कै बियाह ठाने हन औ पइसा कउड़ी कै कमी है । आप जौ हमका एक लाख रूपया कर्जा दइ देव तौ हमार इज्जत रहि जाय । आप केर पइसा हम दश महिना मइहाँ वापस कै देबै ।" ठाकुर साहेब कहिन "ठीक है दुइ चार दिन मइहाँ हम पइसा केर इन्तजाम कै देबै, लेकिन कागज करै के परी औ कागज कइहाँ गाँवपलिका से प्रमाणित करावै के परी ।" दुलारे यहि बाति मे राजी होय गयें । ब्याज सयकड़ा केर ५ प्रतिशत लागै के कहिन तब्बो दुलारे गरजी रहें सब बात मान लिहिन । कुछ लोग जो दुलारे केर हितैसी रहें । जब जान पाइन कि दुलारे हरिहर ठाकुर से कर्जा लेत हैं । तब सब दुलारे कइहाँ समझाइन- भइया हरिहर ठाकुर से कर्जा न लेव ऊ बहुत जालताल वाला आदमी है । उनके चंगुल मइहाँ न फसौ । नाही तो खेतपात सब लइ लिहैं केतनेन के साथ जालताल कइके अतना जगह बनाइन है । तुमहुँ जनबै करत हौ । अनिस साई केर घर अउर खेत सब कर्जा मइहाँ लइ लिहिन है ।

(क) दुलारे मौर्य के परिवार मे के के रहत रहें ?

(ख) सब से कठिन बाति काव रहा ?

(ग) अन्त मे दुलारे कइसन निर्णय लिहिन ?

(घ) कथांश से पाँच ठू मुख्य घटना कै टिपोट करा जाय ।

१२. नीचे दिहा सन्दंभ पढ़ा जाय औ आपन अनुभव लिखा जाय ।

पहिले के समय मे आज के जेस नापतौल कै आधुनिक साधन नाही रहा । लोग, कुरवा, माना, सेई, अढ़ैया, अध्धा, पवन्ना, सेर, मन, पसेरी आदि नाप कै प्रयोग करत रहें । अइसै लम्बाई नापै के खातिर गज, हाथ, डेवढ़ा आदि रहत रहा । किलो, मिटर, फिट कै चलन अब आय है । अब तो कम्प्युटर कै प्रयोग से नाप तौल होत है । नाप तौल के खातिर प्रविधि कै प्रयोग काम आसान कइ दिहे है ।

भाषिक संरचना औ वर्ण विन्यास

१. नीचे दिहा वाक्य पढ़ा जाय औ छलफल करा जाय :

पुलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
(क) मामा आये ।	(क) मामी आईं ।
(ख) भइया कविता सुनाइन ।	(ख) दिदी कविता सुनाइन ।
(ग) वय गीत गाइन ।	(ग) वय गीत गाइन ।
(घ) बछवा दूध पियत है ।	(घ) बछिया दूध पियत ही ।
(ङ) भइया औ हम मन्दिर गयेन ।	(ङ) भउजी औ हम मन्दिर गयेन ।

२. कोष्ठक मा दिहा निर्देशन अनुसार वाक्य परिवर्तन कइके लिखा जाय :

(क) बहिनी घरे आईं । (पुलिङ्ग)

(ख) उ लोग सबेरे गयें । (स्त्रीलिङ्ग)

(ग) वन्हरे लिखि भये । (स्त्रीलिङ्ग)

(घ) बहिनी हँसत ही । (पुलिङ्ग)

(ङ) मउसी सोहर गावत हीं । (पुलिङ्ग)

३. नीचे दिहा वाक्य पढ़ा जाय औ छलफल करा जाय :

एकवचन	बहुवचन
(क) उ गीत गाइस ।	(क) वन्हरे गीत गाइन ।
(ख) तोहार घर कहाँ होय ?	(ख) तोहरेन कै घर कहाँ होय ?
(ग) हम छोट हन ।	(ग) हमरे छोट हन ।
(घ) चिरई चुन ही ।	(घ) चिरइयै चुनत हीं ।
(ङ) कुकुर भुकत है ।	(ङ) कुकुरवै भुकत हैं ।

४. कोष्ठक मा दिहा निर्देशन अनुसार वाक्य परिवर्तन कइके लिखा जाय :

(क) वय घरे आईं । (बहुवचन)

(ख) काका लोग सबेरे गयें । (एकवचन)

(ग) वय सुनावत हैं । (बहुवचन)

(घ) बहिनी हँसत ही । (बहुवचन)

(ङ) गइयन का चरावत ही । (एकवचन)

५. नीचे दिहा समस्त औ विग्रह शब्द पढ़ा जाय :

समस्त	**विग्रह**
आजकाल्ह	आज काल्ह
सन्भासकारे	सन्भा सकार
नगरपिता	नगर पिता
बड़काभइया	बड़का भइया
दशगजा	दश गजा
पूजासामग्री	पूजा सामग्री
नदीपार	नदी पार

४. समस्त है तो विग्रह औ विग्रह है तो समस्त बनाइकै लिखा जाय :

नदिया के पार, वसरीपारी, गुरुमाँ, चार रास्ता कै समूह, इष्टमित्र, लोक मे प्रिय, दुइचार, भितरबहरे, निर्लज्ज, नवग्रह, चन्द्रविन्दु

५. नीचे दिहा हलन्त औ अजन्त अलग कइकै सूची बनावा जाय :

उफ्, शिकार, जलन, धत्, बादर, पद्, बजार, बयार, सम्बोधन, क्याबात्, स्वागतम्, शिवम्,

सुनाई औ बोलाई

सुनाई पाठ -११

दियवै तरे अन्हियारा

कुबड़ि गवा शरीर औ सयकड़ौं लकिर से सजि गवा चेहरा। देखतै लागत रहा- दैनिक जीवन कै तङ्गी समय से पहिले उनका बुढ़ापा लाय दिहे रहा। हाथ मे एक ठू बोरिया, औ चेहरा पर संकोच औ बेबसी है। कवनो घर के घर मालिक के सामने नम्र बोली। यिहै रहा उनकै दिनचर्या बाति करतै जात के पता चला रहा।

पति कै साथ छुटे पचासौं वसन्त बिति गवा रहा। लाठी के खातिर सँउपि गये बच्चे धीरेधीरे बड़ा होय गयें औ अपने अपने गृहस्थी लाग गये। दिन जेसस बितत गै, परिवार सङ्ख्या बढ़त गवा लेकिन आर्थिक अवस्था मे न सुधार भवा, आसरा रहा झोपड़िउ जर्जर होत चला गै।

येकर यक्कै कारण रहा, उनके पास कवनो सरकारी कागज नाही रहा, अपने पति कै नागरिकता के अलावा। गाँव पञ्चायत, गाँव विकास समिति औ अब नगरपालिका होतै, सत्ता औ शासन बदलि गवा। कागजपत्र के खातिर सीधा औ शालिन होइकै चलतैचलत, अब उहै रास्ता पर ठोकत औ ठेहियात चलै लाग रहीं। जो केहु मिलत रहा, सबसे यिहै कहत रहीं हमार कागजपत्रौ अब हमका शमसान घटवै पर मिली अगिले जन्म के खातिर। न केहु कारन बतावत है, न काम कइ देत है। यी अल्लाह-ईश्वर कवनो परीक्षा लेत हैं हम से। हम तो नेता लोग के खातिर वोट कै झोली होइकै रहि गयन। अबकिर कै प्रमुख हमरेन गाँव कै होयं, तब्बो दियवै तरे अन्हियारा है। अउर का कही, केहु सुनी तो सुनाय दिहेव !

२. सुनाई पाठ ११ के आधार पर ठीक है तो ठीक औ बेठीक है बेठीक कहा जाय :

(क) पति कै साथ छुटे पचासौं वसन्त बिति गवा रहा।

(ख) परिवार सङ्ख्या नाही बढ़त गवा।

(ग) आसरा रहा झोपड़िउ जर्जर होत चला गै।

(घ) नेता लोग के खातिर वोट कै झोली होइकै रहि गयेन ।

(ङ) अब उहै रास्ता पर ठोकत औ ठेहियात चलै नाही लाग रहीं ।

१. **सुनाई पाठ ११ सुनिकै दिहा प्रश्न कै उत्तर कहा जाय :**

(क) कथा के पात्र कै शारीरिक बनोट कइसन है ?

(ख) उनके पति कै कवन कागज भर बाँकी रहा ?

(ग) वय कवन कवन बदलाव देखिन ?

(घ) वृद्धा के का परीक्षा लेय के कहत हीं ?

(ङ) वय अपने काव बनिकै रहि गई रहा ?

सिर्जना औ परियोजना कार्य

१. **नीचे दिहा शीर्षक पर कथा लिखा जाय :**

(क) चिरई कै खोता

(ख) चबुतरा

२. **अपना बढ़िया लाग कथा पढ़िकै वोकर पुनर्लेखन करा जाय औ कक्षा मा प्रस्तुत करा जाय ।**

सचेतना कै धरोहर

- सत्यवती कुर्मी

संघर्ष कै बाट अपनाय जीवन भर लड़त रही ।
अधिकार के खातिर कबहू थकी नही ॥
जब जब न्याय कै जरूरत सम्झिन ।
निरन्तर परिवर्तन पथ पर डटी रहीं ॥

अभाव, चुनौती औ **प्रतिकूलता** के वातावरण मा जीवन गतिवान होत है । कुछ लोग जिन्दगी मा निराशा औ **कायरता** कै प्रभाव नाही परै देत हैं । समाज मा कुछ करै के खातिर कठिन से कठिन डगर अपनाय लेत हैं । औ सफलता के चोटी पर पहुचत हैं । यइसन लोग इतिहास के पन्ना पर अमर बनि जात हैं । उ लोग मा मिलै वाला धीरता औ निरन्तर कै क्रियाशिलता जेस गुण सब के खातिर सदा अनुकरणीय रहत है । अवधी समाज मा न्याय औ समानता के बद सबदिन डटी रहै वाली व्यक्तित्व होयं सत्यवती कुर्मी ।

महिला उत्थान, सामाजिक न्याय औ परम्परगत चलन कै बिकृत रूप का सुधारै के खातिर अडिग होइकै अग्रपंक्ति मा खड़ी रहत रहीं- सत्यवती । समाज **सुधारक** महिला के रूप मा यिनकै नाम बड़े श्रद्धा औ सम्मान से लइ जात है ।

अवधी भाषी औ पूरा मधेसी समुदाय के **तत्कालिन** चलन अनुसार उनकै बियाह दश बर्ष के उमिर मा भवा रहा । विधाता कै बिधानै कहै के परी बियाह भये छवै महीना बाद

उनके पति कै निधन होय गवा। निधन होय बाद बालविधवा होइ गईं। यहि वजह से उनके उपर सामाजिक लान्छना लगावै लागें लोग। कमै उमिर मा उनकै जिन्दगी बोझ जेस बनि गै। गाँवघर, नइहर, ससुरार चारो तरफ अबोध बाल अवस्था मा तिरस्कार औ अपमान सहै के परा। जवन वय मन मसोड़ कै मजबुरी मा सहैं औ सुनैं। जबकी उनकै कवनो दोष नाही रहै।

जिन्दगी के यहि ठेस से कुछ करै के अपनेआप मा उत्साह लिहिन औ **जीवनपर्यन्त** एकल जीवन व्यतित किहिन। तत्कालिन बेलहरी गुरुवागाँव पन्चायत के बक्सपुर्वा गाँव मा पिता राजाराम कुर्मी औ माता चन्द्रकला कुर्मी के दूसरी सन्तान के रूप मा वि.स.२०१० साल मा जन्म भवा रहा। बाल विधवा होय के नाते उनके जिन्दगी मा बहुत उतारचढ़ाव आवा किहिस। अइसन अवस्था मा समय के अनेकन प्रवाह का झेलत अउर निडर औ साहसी होतै चलि गईं। मरता तो का नाही करता वाली कहावत बाँकी पूरा जिन्दगी औ सामाजिक परिवेश सब से भिड़त रहीं। वय अपनेआप मा ठानि लिहिन कि अब कोई महिला कमजोर महसूस न करै। अपने का सामाजिक राजनीतिक क्षेत्र मा सक्रिय करतै गईं। सुरुवाती चरण मा तो अपनेन जिन्दगी के खातिर संघर्ष किहिन। ससुरार वाले **अंश-हिस्सा** नाही देय के तइयार भयें। अपने अंशहक के खातिर वि.सं. २०२९ साल मे ससुरार वालेन के विरुद्ध मुद्दा दिहिन। हकअधिकार के सवाल मा उनकै यिहै पहिला कदम रहा।

समाज मा **पर्दाप्रथा** व्याप्त रहा। उ समय मा घर से बहरे महिला लोग नाही निकरत रहीं। लेकिन वय साइकिल चलावै के सिखि लिहिन। कहूँ आवै जाय के खातिर साइकिल कै प्रयोग करै लागीं। समाज के तानाबाना से मुक्त कइकै स्वस्फुर्त रूप मा काम करै लागीं। खेतीकिसानी परिवार से होय के नाते हरेक काम मा हाथ बँटावै लागीं। खेतीबारी भइसि चरवाही से लइकै खेत मा हल तक चलाइन। वहि समय के अनुसार एक महिला के खातिर यी कवनो सहज कदम नाही रहा। मधेसी समुदाय औ बाल विधवा होय के बावजूद उनके हिम्मत का मानै के परी हमरेन का। काम के सिलसिला मा उनकै हँसी उड़ावत रहें लेकिन कब्बो नाही हार मानिन।

मेहनत कइकै आगे बढ़ै वाला बाति उनके रोमरोम मा बसा रहा। कब्बो फुरसत मा नाही रहत रहीं। सामाजिक चेतना कै स्तर बढ़त गवा। गाँव घर मा कवनो महिला का कवनो समस्या परत के सत्यवती उकै पहिल सहयोगी बनिकै खड़ी होत रहीं। समाज मा उपेक्षा, उत्पीड़न का बहुत नजदिक से देखै वाली सत्यवती वि.सं. २०२८ मा राजनीतिक आन्दोलन

'गाँव फर्क अभियान से' जुड़ गईं। उ समय बेलहरी औ खजुरा तत्कालिन पञ्चायत का एक बनाइके गिजरा गाँव पञ्चायत बना। वही समिति मा उ मनोनीत सदस्य बनै के मवका पाइन। उ गाँव घर के महिला कै नेतृत्व करै लागीं।

यही से उनका लोग उपनाम दइ दिहिन 'मनोनितिन'। औ उ पुरे लगन से समाज सुधारक के रूप मा चर्चित होइ गईं। उनकै राजनीतिक चेतना अउर बढ़त गवा। कोई कै कवनो सामाजिक, प्रशासनिक समस्या होय तो उ साथ देय मा हरदम तइयार रहैं। उनका यहू भावनौ का बल मिला। उनके अनुसार महिला स्वावलम्बी औ सक्षम होय के चाहीँ। अपनेव यहि भावना के साथ आगे बढ़त गईं। बाँके जिला के नेपालगञ्ज बजार मा धान कुटनी, पिसनी उद्योग संचालन किहिन। अपने खुद कमाई कै आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनि गईं। उनकै यी यात्रा निरन्तर बढ़त गवा। कुछ करै के जुनुन उनका आगे बढ़ावत गवा। रास्ता मा आवै हरेक अवरोध कै सामना करतै गईं। वि.सं. २०४० मा ग्रील उद्योग खोलिकै यी क्षेत्र मा पहिला महिला उद्यमी बन गईं। अपने खुद हथौड़ा चलाइकै काम किहिन।

उनकै राजनीतिक यात्रा जब देश मा लोकतन्त्र आय उनके भीतर दबा विचार उजागर भवा। महिला उत्पीड़न, महिला कै अधिकार सब उजागर करै के बढ़िया मवका मिला। वय तत्कालीन सदभावना पार्टी कै संस्थापक नेता गजेन्द्रनारायण सिंह से भेट किहिन। सिंह यिनकै उर्जा औ क्षमता देखिके अपने दल मा सहभागी होय के **आमन्त्रण** किहिन। उनके आग्रह का स्वीकार कइकै राजनीति मा आय गईं। वि.सं.२०४८ मा स्थानीय निर्वाचन मा सहभागी भईं। वकरे बाद वि.सं २०५१ औ २०५६ मा संसदीय निर्वाचन मा उम्मेदवार बनीं। यी सब निर्वाचन मा उन का सफलता नाही प्राप्त भवा लेकिन उनकै जनसेवा कै कदम कबहूँ नाही **डगमगान**। मधेसवादी राष्ट्रिय राजनीति मा उनकै पहुच बढ़ा औ उ सदभावना पार्टी कै केन्द्रीय उपाध्यक्ष पद बनीं। यहिसे उनकै राजनीतिक सक्रियता बढ़त गवा। सत्यवती- हरदम एक बात पर अटल रहीं। समाज चाहे जतना हँसै, खिल्ली उड़ावै अपने काम मा निरन्तर लाग रहीं। महिला जब आत्मनिर्भर, सामाजिक औ राजनीतिक अधिकार पइ हैं तब्बै समाज कै विकास होई।

नेपाल के लोकतान्त्रिक आन्दोलन मा उनकै बढ़िचढ़िकै सहभागिता रहा। वि.सं.२०४६ के आन्दोलन मे सक्रियता रहा। देश मा भवा वि.सं. २०६२/०६३ मा सात दल कै दूसरा जनआन्दोलन मा नेतृत्व के भूमिका मा रहीं। मधेस कै २०६३ कै आन्दोलन कै अगुवाई कइकै सुरुवात कै नेतृत्वकर्ता बनीं। उनके योगदान कै कदर कइकै राजनीतिक दल २०६७

साल मा हेटौड़ा सिमेन्ट कारखाना कै अध्यक्ष मनोनीत किहिन । वहुँ पर पूरे जिम्मेवारी औ लगन के साथ काम किहिन । उनके जीवनकाल मा राजनीति कइकै लाभ कै पद यहि एक रहा । बाँकी समय मा संसदीय निर्वाचन मा समानुपातिक मा नाम राखि गवा लेकिन उनका मवका नाही मिला ।

सत्यवती घर समाज कै सारा चुनौती का पार कइकै राजनीतिक आन्दोलनमा जीवन पर्यन्त परिवर्तन के खातिर लाग रहीं । उनका समाज के लोग **श्रद्धा** औ सम्मान से सबलोग मनोनितिन बुआ, मौसी, दादी कहत रहें । उनकै **चिन्तन** रहा- मधेसी महिला का **सशक्त** होय के जरुरत है । यकरे साथ शिक्षा के अवसर पावै मा कोई विभेद नाही होय के चाहीँ । लम्बे समय से दमा के बिमारी के कारण उपचार के क्रम मा वि.सं.२०८१ जेष्ठ ६ गते आइतबार के दिन उनकै निधन भवा । आजौ उनका महिला अधिकार के बद लड़ै वाली साहसी निडर औ समाजसेवी के रूप मा जाना जात है ।

शब्दार्थ

प्रतिकूलता : विपरीत परिस्थिति
कायरता : डेराकुल, कमजोर
सुधारक : सुधार करै वाला
तत्कालिन : वही समय कै
जीवनपर्यन्त : जीवनभर, आजीवन
अंश-हिस्सा : हक भाग
आमन्त्रण : नेवता, अनुरोध
डगमगान : विचलित
श्रद्धा : आदरपूर्ण भावना, भक्तिभाव
चिन्तन : गम्भीर सोचाई, समस्या कै समाधान करै वाला मानसिक प्रक्रिया
सशक्त : शक्तिशाली, शक्तियुक्त

शब्द भण्डार

१. नीचे दिहा पारिभाषिक शब्द औ अर्थ बीच जोड़ा मिलावा जाय :

ऐलानी	वन्यजन्तु के सुरक्षा के खातिर आरक्षित जङ्गल
जमानत	अधिकृत तह कै कानुन व्यवसायी
कुपोषण	दूर तक सूचना पहुचावै वाला कार्य
जीवाणु	सरकारी जमीन
दूरसञ्चार	धरौटी
अधिवक्ता	पौष्टिक तत्त्व कै कमी रहा खाद्य वस्तु
निकुञ्ज	नङ्गा आँखिसे न देखाय वाला सुक्ष्म जीव
	पत्रु खाना

२. दिहा शब्द पढा जाय औ शिक्षक से छलफल कइकै अर्थ लिखा जाय :

निक्षेप, प्रश्नावली, शिलान्यास, रेखाचित्र, शिलालेख, तारापुञ्ज

३. नीचे दिहा शब्द का वाक्य मा प्रयोग करा जाय :

सुधारक, सम्मान, सहभागिता, योगदान, अधिकार, हिस्सा, उद्योग, आत्मनिर्भर

बोध औ अभिव्यक्ति

१. नीचे दिहा शब्द शुद्ध से उच्चारण करा जाय :

आन्दोलन, सामाजिक, लोकतान्त्रिक, उजागर, तत्कालीन, मनोनित, चिन्तन

२. 'सचेतना कै धरोहर सत्यवती कुर्मी' जीवनी वसरीपारी सस्वर वाचन करा जाय ।

३. 'सचेतना कै धरोहर सत्यवती कुर्मी' कथा पढ़िकै पूछि गवा प्रश्न कै मौखिक उत्तर दिहा जाय :

(क) सत्यवती कै जन्म कइ साल मा भवा रहा ?

(ख) वनकै बाल्यकाल कइसन रहा ?

(ग) समाज मा कवन प्रथा व्याप्त रहा ?

(घ) आप कवने राजनीतिक पार्टी कै सदस्य बनीं ?

(ङ) उनकै चिन्तन काव रहा ?

४. 'सचेतना कै धरोहर सत्यवती कुर्मी' जीवनी कै पचवाँ अनुच्छेद शिक्षक से सुनिकै लिखा जाय ।

५. 'चेतना कै धरोहर सत्यवती कुर्मी' जीवनी पढ़िकै पूछि गवा प्रश्न कै सङ्क्षिप्त उत्तर लिखा जाय :

(क) सत्यवती कै जीवन कै संघर्ष कहाँ से सुरु भवा ?

(ख) उनके मातापिता कै नाम काव रहा ?

(ग) आप अपने जीवन मा कवन कवन उद्योग सञ्चालन किहिन ?

(घ) आप कइसन लोग का साथ औ सहयोग करत रहीं ?

(ङ) आप कै निधन कइ साल मा कइसै भवा रहा ?

६. 'सचेतना कै धरोहर सत्यवती कुर्मी' जीवनी से मुख्य मुख्य पाँच ठू घटना लिखा जाय :

७. व्याख्या करा जाय :

समाज चाहे जतना हँसै, खिल्ली उड़ावै अपने काम मा निरन्तर लाग रहीं । महिला जब आत्मनिर्भर, सामाजिक औ राजनीतिक अधिकार पइहैं तब्बै समाज कै विकास होई ।

८. ‘सचेतना कै धरोहर सत्यवती कुर्मी’ जीवनी पढ़िकै उनके जीवन पाँच ठू घटना कै टिपोट करा जाय ।

९. ‘सचेतना कै धरोहर सत्यवती कुर्मी’ जीवनी पढ़िकै सार लिखा जाय ।

१०. नीचे दिहा अनुच्छेद पढ़ा जाय औ टिपोट बनाइकै कक्षा मे प्रस्तुत करा जाय ।

पाँव तरे जमीन खिसकब

मुहावरा, कहकुति या कहावत आदि भाषा का सुन्दर औ सरस बनावत है । अवधी भाषा, साहित्य मे अइसन तमाम मुहावरा है । जवन भाषा कै सरस बनावत है । हरेक मुहावरा औ कहकुति या कहावत के पीछे एक ठु कहानी रहत है जवन येकर औचित्य पुष्टि करत है । “पाँव तरे जमीन खिसकब” बहुतै प्रचलित मुहावरा होय । जवने के पीछे तमाम कहानी है । या कहा जाय यी मुहावरा कवने कवने प्रसङ्ग मे प्रयोग कइ सका जात है । यहि मुहावरा के पीछे छिपा कहानी या प्रसङ्ग कै चर्चा करा जात है ।

अचानक बढुवा रुकि जाब

कहानीः रतन सरकारी नोकरी करत रहें । उनका पूरा भरोसा रहा कि अबकिर उनकै बढुवा होबै करी । लेकिन जब बढुवा कै सूची प्रकाशित भवा तो वहिमे उनकै नाँव नाही रहा । यी खबर मिलतै उनके “पाँव तरे कै जमीन खिसिक गवा ।” बहुत मेहनत किहे रहें तब्बो बढुवा नाही मिला । यहि कहानी मे रतन कै अपेक्षा अचानक धराशायी होय गवा । यहिसे उनके दिल औ दिमाग पर धक्का लाग औ विश्वास टुटि गवा । जब कवनो अप्रत्याशित औ अकल्पनीय घटना घटत है तो व्यक्ति का अचम्भित कइ देत है औ व्यक्ति अपनेआप का नाही सम्हारि पावत है । अइसन अवस्था मे पाँव तरे जमीन खिसिकै कै महसुस होत है ।

सच्चाई कै पता चलब

कहानीः राघव अपने सबसे ढेर रमेश पर विश्वास औ भरोसा करत रहा । कुछ समय यहर वोकां लगातार असफलता हाथे लागत रहा । जब यहि पर विचार कइकै पता लगावै लाग तो एक दिन वोकां पता चला कि रमेश पीठ पीछे वकरे विश्रुद्ध मे काम करत है । यी जानिकै राघव के “पाँव तरे कै जमीन खिसिक गवा ।” उनका कब्बो नाही लागत रहा कि

अपने से ढेर विश्वास करै वाला दोस्त यहि मेर से धोखा देत आय है । राघव का अइसन सच्चाई कै सामना करै के परा जवने कै वय कब्बो कल्पना तक नाही किहे रहें । अइसन अप्रत्याशित औ चउँकै वाला अनुभव के खातिर यी मुहावरा प्रयोग होत है ।

आर्थिक संकट

मीरा के बाबुजी कै कारबार अच्छा चलत रहा । बरखा खतम होतै ईंटा कै व्यापार सुरू होय जात रहा । लेकिन महामारी के चलते अचानक मन्दी आय गवा औ उनकै कारोबार घाटा मे जाय लाग । धीरेधीरे जमा पूँजी खतम होय गवा लेकिन अवस्था सामान्य नाही बना तो "पाँव तरे कै जमीन खिसिक गवा ।" परिवार अब कर्जा मे डुबि चुका रहा । मीरा के खातिर यी घटना एकदमै चउँकावै वाला रहा औ पूरा परिवार पर संकटपूर्ण रहा । जब कवनो घटना व्यक्ति के स्थिरता का हिलाय देत है तो यहि कहावत कै प्रयोग कइ जात है ।

भाषिक संरचना औ वर्ण विन्यास

१. नीचे दिहा वाक्य पढ़ा जाय औ वहिमा दिहा पुरुष सङ्गति पर छलफल करा जाय :

(क) हम कविता लिखे हन । हम कविता लिहे हीन । हमरे कविता लिखे हन ।

(ख) तयँ कविता लिखे हस । तोहरे कविता लिखे हौ ।

(ग) उ कविता लिखे है । वन कविता लिखे हीन । वन्हरे कविता लिखे हैं । आप कविता लिखा गा है ।

२. कोष्ठक मा दिहा निर्देशन अनुसार वाक्य परिवर्तन कइके लिखा जाय :

(क) तू सहयोग करत हौ । (तृतीय पुरुष)

(ख) वय काम करत हैं । (द्वितीय पुरुष)

(ग) वन्हरे लिखि भये । (प्रथम पुरुष)

(घ) वन लिखिन । (द्वितीय पुरुष)

(ङ) तयँ पकनारी खाये हस । (तृतीय पुरुष)

३. कोष्ठक मा दिहा निर्देशन अनुसार वाक्य परिवर्तन कइके लिखा जाय :

(क) राधा खात ही । (मध्यम आधार)

(ख) आप कथा वाचिन । (सामान्य आदर)

(ग) वन व्यापारी होयं । (उच्च आदर)

(घ) तू काहे यतना चिन्ता करत हिउ । (सामान्य आदर)

(ङ) श्याम आपन काम पूरा किहिन । (सामान्य आदर)

४. नीचे दिहा अनुच्छेद पढ़ा जाय औ उपसर्ग, चन्द्रविन्दु औ शिर विन्दु लाग शब्दन कै टिपोट बनावा जाय :

शंकर अनपढ़ रहें । भागवत मा शंख बजावत रहें । संगत से उनका पढ़ै औ लिखै के ज्ञान होय गवा । उनकै जीवन अनुशासित रहा । सशांक पाँच कक्षा तक पढ़े हैं । उनकै दोस्त होयं । वनहु मा अभिमान औ घमण्ड नाही है । जब से शंकर सत्संग मा लाग हैं । उनके प्रगति के मार्गमा अवरोध नाही आय है । घरेलु से हुन सिखिकै बाँस कै हस्तकला बनावत हैं । बेकारमा समय नाही गवाँवत हैं । अपने साथी के उपर कवनो आँच नाही आवै देत हैं । अनुचित व्यवहार कब्बो नाही करत हैं ।

सुनाई औ बोलाई

सुनाई पाठ -१२

अवधी संस्कृति

संस्कृति के अर्थ सम्पूर्ण जीवनचर्या होय । जन्म, लालनपालन, खानपिन, पहिरन, अनुशासन, रीतिरिवाज, पर्वउत्सव, मान्यता, पूजा, धर्म, विवाह से लइकै मृत्यु तक कै सब संस्कार कै पूरा रूप संस्कृति होय । यी सब के साथ भाषा औ साहित्यौ परत है । परम्परागत मान्यता परिवर्तनशिल होत है । यही विचार पहिले कै कुछ मान्यता जवन कवनो कालखण्ड मा महत्त्वपूर्ण मानि जात रहा । आज उ विकृति के रूप मा देखान है । विधवा के साथ व्यवहार, बालविवाह, दलित वर्ग कै उपस्थिति औ भौतिकवादी तृष्णा मा अन्याय औ भ्रष्टाचार

ओर कै झुकाव येकर उदारहण बना है । संस्कृति कै अहम् पक्ष चिन्तन होय । दार्शनिक चिन्तनप्रधान पूर्वीय संस्कृति से जुटा अवधी संस्कृति मा भौतिकवाद एवं अध्यात्मवाद कै सम्मिश्रण मिलत है । भौतिकवाद प्रधान इहलोक औ अध्यात्मवादी मान्यताप्रधान परलोक कै अन्तरसम्बन्ध कै दुइ किनारा मा मानव जीवनकाल कै कर्म सेतु कै स्थान लिहे है । कर्म का तीर्थ मानै वाले परमार्थी राजा हरिश्चन्द्र औ कर्म का अधिकार घोषित करै वाला गीता आर्दश होय । अइसै दूसरे ओर यकरे विपरीत अनेकन अइसन नमुना है, जवन घृणा औ निन्दा कै पात्र होय । यही चढ़ावउतार मा अवधी जनजीवन प्रवाहित है । अवधी समाज व्यक्ति औ वस्तु कै तहगत पहिचान करत है ।

२. सुनाई पाठ १२ के आधार पर ठीक है तो ठीक औ बेठीक है बेठीक कहा जाय :

(क) संस्कृति के अर्थ सम्पूर्ण जीवनचर्या होय ।

(ख) परम्परागत मान्यता परिवर्तनशील नाही होत है ।

(ग) संस्कृति कै अहम् पक्ष चिन्तन होय ।

(घ) अवधी संस्कृति मा भौतिकवाद एवं अध्यात्मवाद कै सम्मिश्रण नाही मिलत है ।

(ङ) अवधी समाज व्यक्ति औ वस्तु कै तहगत पहिचान करत है ।

१. सुनाई पाठ १२ सुनिकै दिहा प्रश्न कै उत्तर कहा जाय :

(क) संस्कार कै पूरा रूप काव होय ?

(ख) संस्कृति भीतर काव काव परत है ?

(ग) अवधी संस्कृति मा केतकै सम्मिश्रण मिलत है ?

(घ) गीता कर्म का काव कहत है ?

(ङ) भौतिकवादी तृष्णा मा काव होत है ?

सिर्जना औ परियोजना कार्य

१. नीचे दिहा बुँदा के आधार पर अपने आजा कै जीवनी लिखा जाय :

नाम :

जन्ममिति :

जन्मस्थान :

मातापिता:

शिक्षा :

पेशा :

रुची :

२. जीवनी लिखत के कवने कवने बाति पर ध्यान देयक के चाहीँ बुँदागत रूप मा लिखिकै कक्षामा प्रस्तुत करा जाय ।

वसंत बहार

- राजेश जिज्ञासु

॥१॥

न बढ़िके जाड़ा न चढ़िके गर्मी बस मन **लुभावन**
मंद मंद बयार सुगंध भरा अइसन मौसम पावन
जगत सारा बागबगिया पेड़पउधा लिए मुस्कान
सजिके हरियर बाना करै स्वागत वसंत कै आवन

॥२॥

अमवा बउरै डरिया पहुँडै पल्लो फुंगी **फनफनाय**
लइकै लब्दा दउरैं लड़िके टिकोरा झोर कै खायँ
सीताबिलरिया खुशी से फुदकै नीचे कब्बो उपर
बउर पे कहूँ फूलन पर चहकत भँवरा गुनगुनाय

॥३॥

करै कोइलिया कुहुकुहु सुनाय संगीत कै **झंकार**
पंख खोल मजोर नाचै खुश लउकै जगत संसार
मनई **चउआ** चिरई सजीव निर्जीव मे चारिउओर
खेत खरिहान जंगल मे मंगल वसंत कै रहै बहार

॥५॥

लाही लहलहाय गम्कय लहसुन, धनिया औ सोवा
दुलहिन जेस सजा धर्ती हरियर वस्त्र प्रकृति बोवा

लाल, पीयर अउर गुलाबी मे **चमनाचमन** श्रृंगारित
धर्ती मगन, गगन मगन औ मगन सबु पाताल होवा
॥६॥
कवियन कै छंद दिए कविता फुरावैक उठे **उफान**
गीतकारेन कै गीत फुरै शब्द बीनै कै करै आसान
मन कै भाव दिलकै **उमड़न** धाराप्रवाह बन जाय
तकलीफ मे मलहम बनै वसंत चित्रण कै गुणगान

शब्दार्थ

लुभावन : लोभ लागै वाला

फनफनाय : अपनेन गति से घुमै

चउआ : चउपाया जानवर

चमनाचमन : खुशी आननद से भरा

उफान : वेग के साथ उठब

उमड़न : चक्रिय रूप मा घुमै के अवस्था

तकलीफ : समस्या, दर्द

शब्द भण्डार

१. **नीचे दिहा अर्थ बुझावै वाला शब्द 'वसंत बहार' कविता से पहिचान कइकै लिखा जाय :**

(**क**) गीत रचना करै वाला व्यक्ति

(ख) अपने काम मा मस्त औ व्यस्त

(ग) हृदय से कइ गवा प्रशंसा

(घ) बिना कवनो अवरोध कै

(ङ) मधुर सुगन्ध

२. दिहा शब्द पढा जाय औ शिक्षक से छलफल कइकै अर्थ लिखा जाय :

विविधता, पर्ती, उसर, गौढ़ी, हाथिसार, सारथी, उतराही, चक्रपात, क्षेत्रपाल

४. नीचे दिहा शब्द का वाक्य मा प्रयोग करा जाय :

मधुर, मगन, हरियर, लहलहाय, चारिउओर, खरिहान, लब्दा, फुदकै

बोध औ अभिव्यक्ति

१. नीचे दिहा शब्द शुद्ध से उच्चारण करा जाय :

लहसुन, श्रृंगार, चमनाचमन, धर्ती, उमड़न, निर्जीव, टिकोरा, फनफनाय

२. 'वसंत बहार' कविता गति, यति, लय औ मात्रा मिलाइकै वसरीपारी वाचन कइकै सुनावा जाय ।

३. 'वसंत बहार' कथा मौखिक पढ़िकै पूछि गवा प्रश्न कै मौखिक उत्तर दिहा जाय :

(क) वसंत ऋतु मा प्रकृति कइसन देखात है ?

(ख) वसंत ऋतु कै स्वागत कइसै जात है ?

(ग) कवन जानवर फदकत ही ?

(घ) धर्ती पर हरियर वस्त्र के बोवत है ?

(ङ) वसंत ऋतु मा केकर काम आसान होय जात है ?

४. 'वसंत बहार' कविता कै पचवाँ अनुच्छेद शिक्षक से सुनिकै लिखा जाय ।

५. 'वसंत बहार' कविता पढ़िकै पूछि गवा प्रश्न कै सङक्षिप्त उत्तर लिखा जाय :

(क) वसंत ऋतु कै विशेषता काव काव होय ?

(ख) लब्दा लइकै लरिके काव करत हैं ?

(ग) वसंत ऋतु से जीवजानवर मा काव छाये रहत है ?

(घ) वसंत ऋतु मा धर्ती कइसन देखात है ?

(ङ) कवि औ गीतकार के खातिर वसंत ऋतु कइसन रहत ?

६. शिक्षक से सुनिकै छुटि गवा कवितांश लिखिकै कविता पूरा करा जाय :

करै कोइलिया .... सुनाय संगीत कै..........
पंख खोल .... नाचै खुश ....जगत संसार
मनई .... चिरई ....मे चारिउओर
......खरिहान जंगल मे ....वसंत कै रहै बहार

७. नीचे दिहा कवितांश गद्य बनाइकै लिखा जाय :

अमवा बउरै डरिया पहुँडै पल्लो फुंगी फनफनाय
लइकै लब्दा दउरैं लड़िके टिकोरा झोर कै खायँ
सीताबिलरिया खुशी से फुदकै नीचे कब्बो उपर
बउर पे कहूँ फूलन पर चहकत भँवरा गुनगुनाय

८. व्याख्या करा जाय :

मन कै भाव दिलकै उमड़न धाराप्रवाह बन जाय
तकलीफ मे मलहम बनै वसंत चित्रण कै गुणगान

९. 'वसंत बहार' कथा कै सार लिखा जाय ।

१०. नीचे दिहा कवितांश पढ़ा औ लय के बारे मे छलफल करा जाय :

वीर तुम बढ़े चलव

- आनन्द गिरि मायालु, नेपालगञ्ज

वीर हौ तु आगे बढ़े चलव ।
वीर हौ तु उँचे चढ़े चलव ॥
दुश्मन के आगे मूड़ झुकेक न चाहीँ ।
बिन मंजिल पाय पाँव रुकेक न चाहीँ ॥
दुनिया के सबसे ताकतवर जान हौ तु ।
यहि देश कै वीर पूत महान हौ तु ॥
देश कै तु शान हौ लड़े रहो ।
देश कै तु आन हौ बढ़े रहो ॥
वीर नेपाली तु ताकत कै खदान हौ ।
कदम कदम पर जितै वाले बलवान हौ ॥

फसौ न किसानों

- बाबा सैयद अली शाह, नेपालगन्ज

फसौ न किसानों दूनियादारी मा,
मन को लगावो खेतीबारी मा ।
जेठ से किसानी में मन को लगावो,
गोड़व खूटी खाटी और खदिया बहावो ।
तबही तू यहव भैया खेती के ताडको,
फूल जैसा समझो महीना असाढ़ को ।
बइठो ना महतो की चौपारी मा,

मनको लगावो खेतीबारी मा... ।
करिहौ किसानी जौ दिल को लगाय,
अगहन बैशाख मे तुम धरिहौ काटि दाँय ।
सारे किसान के बस खेती से शान है,
खेती नाही करिहौ जागना सूनसान है ।
रोटी ना आई भैया थारी मा,
मनको लगावो खेतीबारी मा...।
उठिके सबेरे पस दुवारे पे निकारो,
गोबरा बहाय दुवारा झारिके बहारो ।
भैंस भैंसा बैल उठके तड़के खवावो,
कोई जाय जोते को भैंस लगावो ।
दूपहर भर पस ना राखों घारी मा,
मनको लगावो खेतीबारी मा...।

११. नीचे दिहा सन्दर्भ पढ़ा जाय औ अपने सिखाई के बारे मे कक्षा मे सुनावा जाय ।

नदी का केहु बहै के नाही सिखावत है । चिरइन का केहु बोलै के नाही सिखावत है । अइसै बयारि का केहु चलै के नाही सिखावत है । जनावर के बच्चेन का केहु खाय औ रहै के नाही सिखावत है । मछरी अपनेन पउरै के जानत ही । सब अपनेआप सिखि जात हैं । हमरे मनई चेतनशील प्राणी होवा जात है । हमरेन का हरेक काम करै के औ बानीव्यवहार सिखावै के परत है । बहुत कम लोग हैं जे देखिकै, पढ़िकै, सुनिकै औ कइकै सिखै के कोशिश करत हैं ।

भाषिक संरचना औ वर्ण विन्यास

१. नीचे दिहा अनुच्छेद से करण औ अकरण वाक्य पढ़ा जाय औ पहिचान कइकै लिखा जाय :

चिरइन कै तमाम जात होत है । भूगोल औ वातावरण अनुसार मेर मेर कै चिरई होत हीं । वही अनुसार वनकै रङ्ग होत है । कोई वनके जीवन मा रङ्ग नाही भरत

है । चिरई आपन खोता अपनेन बनावत हीं । उनका आपन जात अनुसार बोलै के नाही सिखावै परत है । उनका उड़ै के केहु नाही सिखावत । आपन चारादाना अपनेन खोजिकै औ बीनि कै खाय लेत हीं । समूह मा रहै के पसन्द करत हीं ।

२. कोष्ठक मा दिहा निर्देशन अनुसार वाक्य परिवर्तन कइके लिखा जाय :

(क) वैदेशिक रोजगारी से खेत पर्ती होत जात है । (अकरण)

(ख) नदी का बहै के नाही सिखावत है । (करण)

(ग) बछियवा दूध पिइ लिहिस । (अकरण)

(घ) राम अपने मने बनबासी बना रहें । (करण)

(ङ) मामा बजारे गवा रहें । (अकरण)

३. नीचे दिहा वाक्य पढ़ा जाय औ छलफल करा जाय :

प्रेरणार्थक	सामान्यार्थक
(क) उ किताब पढ़िस ।	(क) दिदी वोकां किताब पढ़ाइन ।
(ख) तू गीत गावै के सिखबो ।	(ख) आप तुहुँका गीत गावै के सिखइ हैं ।
(ग) बुआ बरिया बनावत हीं ।	(ग) आजी बुआ का बरिया बनावै के कहत हीं ।
(घ) काका मछरी पकरिन ।	(घ) आजा काका से मछरी पकुरुवाइन ।
(ङ) भइया खेलत है ।	(ङ) उलोग भइया का खेलाइन ।

४. पाँच ठू प्रेरणार्थक औ पाँच ठू सामान्यार्थक वाक्य बनावा जाय ।

५. नीचे दिहा अनुच्छेद पढ़ा जाय औ प्रत्यय लागिकै बना शब्द पहिचान कइकै लिखा जाय :

पालिका अबकिर उदाहरणीय काम किहिस है । आजकाल्ह नागरिक बड़ा पत्र राख दिहे है । यहिसे काम करै के आसान भवा है । गाँव मा सरसफाई कै काम होत

है । गरमी मा विषालु साँप डसाई बढ़ि जात है । छोटवार लरिके खेलौना कहिकै साँप पकरि लेत हैं । उतराही बयारि चलै के बाद खूब रसदार पकनारी गिरै लाग । बगिया मा मुराहा लरिके आधा खात है, आधा फेंकत हैं ।

४. नीचे प्रत्यय कै प्रयोग कइकै दुइ/दुइ ठू शब्द बनावा जाय :

इय, आलु, इक, औना, वार, आई, अब, आवट, अक्कड़

५. नीचे दिहा आधा अक्षर मिलिकै बना शब्द पढ़ा जाय औ वाक्य बनावा जाय :

अध्धा, सम्बोधन, सम्मन, अचम्ह, छप्पर, छन्द, चम्पक, झण्डा, घुमक्कड़

सुनाई औ बोलाई

सुनाई पाठ -१३

उठ जाग मुसाफ़िर भोर भई

- वंशीधर शुक्ल

उठ जाग मुसाफ़िर भोर भई
अब रैन कहा जो सोवत है
जो सोवत है सो खोवत है
जो जागत है सो पावत है
उठ जाग मुसाफ़िर भोर भई
अब रैन कहा जो सोवत है

टुक नींद से अँखिया खोल जरा
पल अपने प्रभु से ध्यान लगा
यह प्रीति करन की रीति नही
जग जागत है तू सोवत है

तू जाग जगत की देख उडन,
जग जागा तेरे बंद नयन
यह जन जाग्रति की बेला है
तू नींद की गठरी ढोवत है

लड़ब वीरन कै पेशा है
इसमे कुछ भी न अन्देशा है
तू किस गफ़लत में पड़ा पड़ा
आलस में जीवन खोवत है

है आज़ादी ही लक्ष्य तोरा
वहिमें अब देर लगा न जरा
जब सारी दुनियां जाग उठी
तू सिर खुजलावत रोवत है

(साभार- कविता कोश)

१. नीचे दिहा कवितांश कै खाली जगह शिक्षक से सुनिकै पूरा करा जाय :

उठ जाग .... भोर भई
अब ..... कहा जो सोवत है
जो सोवत है सो .... है
जो जागत है सो पावत है
उठ .....मुसाफ़िर भोर भई
अब रैन कहा जो सोवत है

टुक नींद से ....खोल जरा
पल अपने प्रभु से ....लगा

यह ....करन की रीति नही

जग जागत है तू सोवत है

२. सुनाई पाठ १३ सुनिकै दिहा प्रश्न कै उत्तर कहा जाय :

(क) कवि मुसाफिर का काव कहत हैं ?

(ख) के से अँखिया खोलै के कहि गा है ?

(ग) आजादी केकर लक्ष्य होय ?

(घ) लड़ाई करब केकर काम होय ?

(ङ) यी केत कै बेला होय ?

सिर्जना औ परियोजना कार्य

१. नीचे दिहा शीर्षक पर कविता लिखा जाय :

(क) परिवर्तन (ख) किसानी

२. अपना बढ़िया लाग कविता पढ़िकै वकरे बारे मा लिखा जाय औ कक्षा मा प्रस्तुत करा जाय ।

चित्रकला कार्याशाला

मितिः २०८१-०१-०७ शुक्रवार
समय : रात कै ९:०० बजे
स्थान : आपन सोवै वाला कोठरी

रोज जेस आजो सबेरे उठेन । **शीतगरम** पानी पियेन । नित्यकर्म कइकै औ पुसअप किहेन । यी करै के हम्मै बहुत बढ़िया लागत है । वकरे बाद पूजा किहेन औ कुछ फल खाइकै दूध पियेन । बिद्यालय के खातिर बस्ता मिलायन । यतनै मे अम्मा खयका के खातिर बोलाइन । आज तो हम्मै बढ़िया लागै वाला बोड़ा कै तरकारी औ उरुद कै **पइहिती** औ भात बनाये रहीं । खाना खाइकै विद्यालय गयन ।

विद्यालय खुले एक हप्ता भवा रहा । आज शुक्रवार होय के नाते विद्यालय मे अतिरिक्त क्रियाकलाप कै आयोजना कइ गै रहा । हमहुँ सहभागी रहेन । **कवितावाचन** होय के नाते ढेर लोग सहभागी रहें । समय कविता वाचन सुरू भवा । अपने अपने वसरी पर कविताावाचन करा गै । सब लोग प्रोत्सहान स्वरूप एक एक ठू कापी औ पेन्सिल पावा गै । बहुत खुशी लाग । लेकिन कापी कै पन्ना सादा रहा । यतनै मे संयोजक मिस आवै वाले शुक्रवार के चित्रकला कार्याशाला कै बाति किहिन । यकरे बारे मा विस्तृत जानकारी सूचनापाटी पर बताइन । हम औ विवेक सूचना देखै गवा गै । सूचना देखिकै आवश्यक सामान कै टिपोट बनावा गै । दुनौ जने सहभागी होय के सल्लाह करा गै । सूचना हमरेन के पसन्द कै रहा । यहिसे आजै से तइयारी मे जुटै के बाति करा गै ।

विद्यालय से घरे आवै के बाद अम्मा का सब बतायेन औ नास्ता किहेन । अम्मा के काम मा सहयोग किहेन । सन्झा के बाबुजी आये । वनहु से सब बाति बतायेन । हमरे लगे न रहा सामान बजार से लाय देय के कहिन । हम अउर कल्पना करै लागेन । कुछ नमुना चित्र संकलन किहेन । यतना करतैकरत सन्झा होय गवा । सब जने मिलिकै खाना बनावा गै औ खाना खावा गै । बुआ से कुछ बाति छलफल किहेन । वय हम्मै रङ्ग के बारे मा ढेर बताइन । बुआ का सब बाति टिपोट बनाइकै राखेन औ सोवै के तइयारी करै लागेन ।

मिति : २०८१-०१-०८ शनिवार
समय : रात कै ९:०० बजे
स्थान : आपन सोवै वाला कोठरी

आज कुछ देर से उठेन । घर के सब लोग उठि गवा रहें । हमहुँ **शीतगरम** पानी पियेन औ नित्य कर्म के खातिर चला गयन । आजा बेह्रा मा पानी डारत रहें । हमहूँ उनके काम मा सहयोग किहेन । वकरे बाद आइकै आज थोरै देर पुसअप किहेन । नास्ता मा दही चिउरा रहा । मजा से खायन औ धोवै वाला कपड़ा निकारेन । अम्मा धोवै वाला अउर कपड़ा निकारिन । हम साबुन लगायेन औ अम्मा मीजि कै धोइन । यकरे बाद सब जने खाना खावा गै । शनिवार होय के नाते आजा के साथे बगिया घुमै गयन । आजा आम कै जात औ आकार के बारे मा बतावत रहें लेकिन हमार मन पेड़पउथा कै आकार, रङ्ग आदि देखै के मस्त रहेन । रास्ता गाय, भइँस, छगड़ी देखेन तो एक घरि रुकि कै देखै लागेन । बगिया मा धँवरखा कै खोता देखेन । वही में छोट छोट बच्चे रहें । महातारी धँवरखा चारा चुनिचुनिकै लाइकै खियावत रही । हम चुपचाप देखतै रहि गयन । कुछ देर तक हम नाही बोलेन तो आजा कारण पुछिन् । हम सब बाति बतायन । आज आपन अनुभव सुनाइन । हमार उत्सुकता अउर बढ़ि गवा । घरे आवा गै । सब जने मिलिकै खीरा खावा गै । यतने मा बाबुजी तौलिहवा बजारे से आये । हाथगोड़ धोइकै आये । हमरे खातिर लावा सब सामान सब एकएक कइकै देखावै लागें । हम तो देखतै रहि गयेन । सब लोग खुबै हँसी मजाक किहिन । हमहुँ **कार्यशाला** मा सहभागी होइकै चित्रकला **प्रतियोगिता** मा सहभागी होय के विचार बनायन । हम अपने बाबुजी से चित्रकला के सामग्री के बारे मा ढेर कुल जानकारी लिहेन । रोजैरोज घरहु पर अभ्यास करै के सुझाव दिहिन ।

सन्झा खाना रोटी तरकारी, आम कै चटनी औ दूध रहा । सब जने खाय पिइकै आपन आपन काम कइकै सोवै गयें । हमहुँ चित्रकला प्रतियोगिता के बारे मा सोचतै सोय गयन ।

मिति : २०८१-०१-१४
समय : रात कै ९:०० बजे
स्थान : आपन सोवै वाला कोठरी

अउर दिन से आज जल्दी उठेन नित्यकर्म कइकै बिद्यालय कै तइयारी करै लागेन । बाबुजी कै लाय दिहा चार्ट पेपर, रङ्ग, कार्यबोर्ड सब मिलाइकै धरेन । अम्मा खाना खाय के बोलाइन । खाना खाइकै बिद्यालय गयेन । आज हमरेन कै आर्ट टिचर से साथे अउर एक जनी मिस आय रहीं । कार्यशाला कै तइयारी भवा । उलोग हमरेन का रङ्ग मिश्रण कै जानकारी दिहिन औ यहिकै अभ्यासो कराइन । वकरे बाद ब्रस चलावै के अभ्यास कराइन । यी दुइ ठू अभ्यास करावै के बाद आपन मनपसन्द चित्र बनावै के कहिन । हम सोच मा परि गयन केतकै चित्र बनाई कहिकै । यतनै मे गुरुमाँ हमरे किनारे आइकै कहिन,“जवन चीज देखिकै तुहुँका अबहिन तक देखै के मन लागत है । वकरे बारे मा सोचत के खुशी लागत है ।” उनकै बाति सुनिकै हम्मै बहादुरगञ्ज के पोखरा कै याद आवा । जवने मा फागुन महीना से लइकै कुवार तक गुलाबी रङ्ग कै कमल फुलात रहा । वकरे किनारे दुइचार ठू पेड़ रहा । वही पर चिरइन कै खोता रहा । गाँव कै चउवाचाङर वही मा पानी पीयत रहें । गाँव के लोग वही मा फूलपाती सेरुवावत रहें । बाबा वही पोखरा के बारे मा बतावत रहें- ऊ पोखरा बहुतै उतारचढ़ाव कै गवाह होय । यी बाति याद कइकै हम वही कै चित्र बनावै के विचार किहेन । औ बनावै के सुरु किहेन । अन्त मा एक ठू गाँव औ वकरे किनारे पोखरा कै चित्र बनायन । जवन देखिकै सब जने बहुत खुश भयें । आर्टटिचर औ आर्ट कै गुरुमाँ हम्मै स्याबासी दिहिन ।

हम आपन चित्र लइकै घरे आयन । हमरे चित्र देखिकै सब जने खुशी भये । बाबा तो हमार पीठ ठोकै लागें । सन्झा के बाबुजी आये । हमार चित्र देखिकै खुशी भयें । बाबुजी तो हमार चित्र फ्रेमिङ करावै के कहिन । दूसरे दिन फ्रेमिङ करावै लइ जाय के कहिन । हमार चित्र देखिकै बुआ औ अम्मा दुनौ जनी खुशी भईं । बुआ तो हम्मै बढ़िया लागै वाला हलुवा बनाइन । सब जने खावा गै । हमरे घर मा जाइके आपन पहिले वाला चित्र सब देखेन । उ चित्र सब देखिकै हम्मै खुबै हँसी आय । हम्मै अकेलै हँसत सुनिकै उलोग दउरत आईं । वनहु लोग हँसै लागीं बिना बाति बुझे । अइसै करत खाना खाय के समय होय गवा । सुतै से पहिले हम फिर एक बेर चित्र औ रङ्ग के बारे मा सोचेन- चित्र बनाये से भर नाही होत है । वोकां जीवन्त बनावै के खातिर उचित **रङ्गरोगन** कै आवश्यकता परत है । चित्र बनावै से पहिले वहिसे सम्बन्धित वास्तविक वस्तु के बारे मा बढ़िया से

जानकारी होय के चाहीँ । चित्र मा बनावत के पेन्सिल भर नाही चलत है । बनावै वाले कै विचार औ बुझाई **सङहरियै** चलत है । आदमी के जिन्दगी अमूल्य क्षण **प्रतिविम्बन** भवा रहत है । अइसै मेरमेर कै बाति, विचार **मथिङ्गल** मा नाचत रहा । आँखि मे नीद नाही रहा । विद्यालय कै बाति **चलचित्र** जेस सामने घूमत रहा । घड़ी १२ बजै वाला रहा । सोचेन कहुँ अम्मा जानि पाइन तो रिसियाबो करिहैं कहिकै सोवै के कोशिश करै लागेन ।

- रामविनय यादव, कपिलवस्तु ।

शब्दार्थ

शीतगरम : शरीर से सहन करै लायक गरम

पइहिती : बनाय गवा दाल

कवितावाचन : कविता पाठ, कविता कै पढ़ै के काम

कार्यशाला : काम करै के जगह, सिखावै वाला जगह

प्रतियोगिता : प्रतिष्पर्धा

रङ्गरोगन : तमाम मेर कै रङ्ग आवश्यकता अनुसार लगाइकै सँवारै के काम

सङहरियै : साथसाथ

प्रतिविम्बन : प्रतिविम्ब उत्पन्न करै वाला प्रक्रिया

मथिङ्गल : मस्तिष्क, खोपड़ी

चलचित्र : बिजुली के सहायता से रजतपट मा देखाय जाय वाला बोलै वाला कथात्मक नाट्यचित्र

शब्द भण्डार

१. नीचे दिहा शब्द कै अर्थ लिखा जाय :

क्षण, सन्झा, कोशिश, विचार, जीवन्त, गवाह, फूलपाती, वास्तविक

२. **नीचे दिहा शब्द मध्ये कवन तद्भव, तत्सम, मौलिक औ आगन्तुक शब्द होय अलग कइकै लिखा जाय :**

रेडियो, बयारि, कम्प्युटर, वृक्ष, सोंस, बसेरा, ब्रेड, संगम, जिविका, बनैया, सिन्की, चाउचाउ, पास्ता, पवधा, माछापालन, बैट्री, सस, मुरब्बा, फोटो, वरिष्ठ, पोसाक, समूह, संस्कार, इन्जिन, अन्वेषण

३. **'चित्रकला कार्यशाला' दैनिकी पढ़िकै मौलिक औ आगन्तुक शब्द कै टिपोट बनाइकै वाक्य मा प्रयोग करा जाय ।**

४. **नीचे दिहा अनुच्छेद पढ़ा जाय औ आगन्तुक शब्द कै पहिचान करा जाय औ कवने भाषा से आय है, शिक्षक से छलफल कइकै लिखा जाय :**

रक्षाबन्धन के बिहान पहर काठमाडौं गाईजात्रा मनाय जात है । नेवार संस्कृति मा लाखेनाच कै विशेष स्थान है । हमरेन के समुदाय मा जाति नाच सब प्रचलन मा है । मौसम अनुसार कै गीत चइता, कजरी आदि गाय जात है । जवने कै प्रचारप्रसार बढ़िया से नाही होय पाये है । काठमाडौं राजधानी होय के नाते वहिंकै संस्कृति रेडियो, टेलिभिजमा आवत है । होय के तो आजकाल्ह स्थानीयस्तर एफएम रेडियो औ टेलिभिजन सब खुला है ।

बोध औ अभिव्यक्ति

१. **नीचे दिहा शब्द शुद्ध से उच्चारण करा जाय :**

कार्यशाला, चित्रकला, प्रतिविम्बन, गवाह, सम्बन्धित, मथिङ्गल, जीवन्त, चलचित्र

२. **'चित्रकला कार्यशाला' दैनिकी वसरीपारी सस्वर वाचन कइकै सुनावा जाय ।**

३. **'चित्रकला कार्यशाला' कथा पढ़िकै पूछि गवा प्रश्न कै मौखिक उत्तर दिहा जाय :**

(क) चित्रकला कार्यशाला कहाँ होय जात रहा ?

(ख) यी दैनिकी के लिखिस है ?

(ग) बालबालिका काहे उत्सुक रहें ?

(घ) पहिले वाले शुक्रवार कइसन कार्यक्रम रहा ?

(ङ) बालबालिका लोग सूचना कहाँ से देखिन दिहिन रहा ?

४. 'चित्रकला कार्यशाला' दैनिकी कै दूसरा अनुच्छेद शिक्षक से सुनिकै लिखा जाय ।

५. 'चित्रकला कार्यशाला' दैनिकी पढ़िकै पूछि गवा प्रश्न कै सङ्क्षिप्त उत्तर लिखा जाय :

(क) विद्यालय मा शुक्रवार कइसन कार्यक्रम होत रहा ?

(ख) सूचनापाटी मा कइसन सूचना रहा ?

(ग) रामविनय चित्रकला के बारे मा के से के से बाति किहिन ?

(घ) चित्रकला के खातिर सामान के लाय दिहिस ?

(ङ) कार्यशाला मा पहिले काव बताइकै अभ्यास कराय गै ?

६. 'चित्रकला कार्यशाला' दैनिकी मा अन्तिम दिन के दैनिकी केत कै चर्चा है लिखा जाय ।

७. भाव विस्तार करा जाय :

चित्र बनावत के पेन्सिल भर नाही चलत है । बनावै वाले कै विचार औ बुझाई सङ्हरियै चलत है ।

८. 'चित्रकला कार्यशाला' दैनिकी कै मुख्य मुख्य घटना कै सूची बनावा जाय ।

९. 'चित्रकला कार्यशाला' दैनिकी कै सार लिखा जाय ।

१०. नीचे दिहा दैनिक कै अंश पढ़ा जाय औ पाँच ठू प्रश्न बनावा जाय :

सहियै मे घुमफिर करै के का मन नाही होत होई । हम्मै तो नवाँ जगह घुमै औ अवलोकन करै के मन लागत है । वहिक्रम मे अबिकर के गर्मी छुट्‌टी मे परिवार

के साथे पोखरा घुमै गवा रहेन । बस से गवा गै रहा । रास्ता के चारो ओर देखाय वाला दृश्य बहुतै मनोरम रहा । हम तराई कै मनई, हमरे खातिर सब अदभूत लागत रहा । किताब मे जवन पढ़े रहेन तवन सहियै मे देखै के पाइकै बहुत खुश रहेन । रास्ता मे गाडी रोकिकै मनकामना माता कै दर्शन करा गै । वहिंकै अनुभव बहुत रोचक औ मजेदार रहा । अम्मा कै छुट्‌टी न मिलै के नाते बहुत दिन बाद लम्मा यात्रा मे निकरा गै रहा । ठण्ड हवा, चिरइन के चिरबिर आवाज, कलकलात बहै वाला नदी कै संगित कवनो स्वर्ग से कम नाही लागत रहा । होय के तो आज तक स्वर्ग देखिकै केहु नाही लउटा है । हमरे तीन दिन पोखरा रहै के योजना बनावा गै रहा । यहि बीच, फेवाताल, बेगनास ताल, महेन्द्र गुफा, डेभिड फल औ सराङ्कोट जाय के है । अम्मा का सब से बढ़िया लागै वाला मन्दिर विन्ध्यावासिनी मन्दिरो जाय के है । हम तो भगवान से कामना करित है । यात्रा अवधि भर सब जने स्वस्थ रहा जाय ।

११. नीचे दिहा सन्दर्भ पढ़ा जाय औ मुख्य मुख्य विषयवस्तु समेटिकै दैनिकी लिखा जाय ः

सम्यक (सही) दृष्टि- येका सही दृष्टि कहि सका जात है । येका यथार्थ बुझै वाला दर्शनौ कहि सका जात है । सही दृष्टि कहब हमरे जीवन कै दुःख औ सुख का बढ़िया से अवलोकन करब होय । यी सत्य औ असत्य पहिचान करै वाला शक्ति होय । बुद्ध के अनुसार जे दुःख से मुक्ति पावै के चाहत है, वकरे भीतर सत्य औ असत्य अलग कइ सकै वाला शक्ति होय के चाहीँ ।

भाषिक संरचना औ वर्ण विन्यास

१. नीचे दिहा वाक्य पढ़ा जाय औ रेखाङ्कित शब्द कै पदवर्ग पहिचान कै लिखा जाय ः

(क) बिता साल हमरे स्वर्गद्वारी औ बाग्दुला गवा गै रहा । वहिंकै मनोरम दृश्य अबहिनौ ताजा है ।

(ख) वन मेहनत करत हीं काहेकी चाहे जइसै अबकिर सफल होय के चाहत हीं ।

(ग) ओहो ! गजबै कै समाचार सुनै के परा । अब रुकब ठीक नाही है झटपट चला जाय ।

(घ) उलोग भरमग्दुर मेहनत करत है साथसाथ आम्दानिउ करत हैं ।

(ङ) धत् ! तोहार बाति सुनिकै हम्मै विश्वास नाही होत है ।

२. कोष्ठक मा दिहा धातु औ निर्देशन अनुसार वाक्य पूरा कइके लिखा जाय :

(क) रामविनय बढ़िया चित्र .... । (बन : सामान्य वर्तमान)

(ख) उलोग कहाँ .... । (रहत : अभ्यस्त भूत)

(ग) आजा खीसा .... । (सुन : पूर्ण वर्तमान)

(घ) सब जने मेहनत के साथ काम ....। (कर : अज्ञातभूत)

(ङ) मउसी नकटा .... । (गा : पूर्ण भूत)

३. नीचे दिहा तालिका कै विषय वस्तु पढ़ा जाय औ कक्षा मा छलफल करा जाय :

वर्ग	वर्ण	उदाहरण	तरिका
क	क,ख,ग,घ,ङ	चङ्गा, गङ्गा, शङ्कर, चङ्ख, जाङ्घ	क,ख,ग,घ वर्ण से आगे 'ङ' वर्ण कै प्रयोग कइ जात है ।
च	च,छ,ज,झ, ञ	चञ्चल, पुञ्ज, लाञ्छना	च,छ,,ज,झ, वर्ण से आगे 'ञ' वर्ण कै प्रयोग कइ जात है ।
ट	ट,ठ,ड,ढ,ण	कण्ठ, चण्डी, डण्डा, टण्टा, कण्डा	ट,ठ,ड,ढ, वर्ण से आगे 'ण' वर्ण कै प्रयोग कइ जात है ।

त	त, थ,द,ध,न	सन्धी, कन्थ, दन्त, धन्दा, सन्धान	त, थ,द,ध, वर्ण से आगे 'न' वर्ण कै प्रयोग कइ जात है ।
म	प, फ,ब,भ,म	सम्भव, पम्फा, सम्बन्ध, सम्भावना, पम्प, बम्मा	प, फ,ब,भ वर्ण से आगे 'म' वर्ण कै प्रयोग कइ जात है ।

४. नीचे दिहा अनुच्छेद शुद्ध कइकै लिखा जाय :

उसा बजारे गइँ । बजारमा मंच बनावा रहा । लरिके प्रतियोगिता सन्चालन किहे रहें । पत्रिका कै स्तंभकार निरहू यादव वहीं रहें । वय सन्चारकर्मी होयं । दुइ महीना पहिले निकुन्ज के बारे मा समाचार लिहिन रहा । पालिका से उनकै संबंध बढिया है ।

सुनाई औ बोलाई

सुनाई पाठ -१४

एक किसान कै दैनिकी

२०८०-०५-१०

समय : रात कै १०: ०० बजे

स्थान : अपनै कोठरी

काल्ह रेडियो मा समाचार सुने रहेन कि आज बढ़िया से घाम लागी । खाय वाला पिसान ओरान रहा । यकरे खातिर गोहुँ धोइकै सुखवायेन । बहिनी कहिन तेल ओरान है । वनही का कहिकै लाही धोइकै फइलावे के कहेन । अम्मा कहिन- तिउहार आवत है । बरिया फुलौरी बनी, थोरै के चना कै दाल पिसाय लेव । अम्मा चना कै दाल लाइकै छत पर फइलाय दिहिन । सब फइलाय कै खाना खाय गवा गै । मझिले भइया कै कबुत्तर आइकै गोहुं बिनिकै सुरु कइ दिहिन । वन्हरेन का न मारत बनै, न गरियावत । एक जने का बइठि कै रखावै के परा । वकरे बाद ४ बजत रहा होई सब अनाज उठाइकै पिसावै लइ

गयन । वहूँ गठरिहन कै लम्मा ताँता । हमहुं गठरी धइकै चलि दिहेन चिन्कनु के दुकान ओर । गाँव के कुछ लोग कै जमघट वहीं होत है । उ लोग कुलवा कै समस्या बतुवात रहें । हम्मै नाही सुनै के मन लाग । अबकिर बरखा मा नन्दराम पानी के खातिर परेसान कइ डारिन रहा । उ बाति याद आवत के वइसै बोलै के मन नाही होत है । चुपचाप चला आयन तो यहर ओसरियो आय गवा रहा ।

झटपट पिसाय, पेराय के घरे आयेन तो ८:०० बजि गवा रहा । हाथगोड़ धोयन तब तक खाय के बोलाइन लेकिन यहर बहिनी कहत ही गाय दुहै के बाँकी ही । गाय लतही होय के नाते हमहीं का दुहै के परत है । बाल्टी लइकै दुहै गयन तो बछिया पियाय लिहे रही । आज गइया चरिकै आवै के बाद बछियवै बान्है के भुलाय गई रहीं । हाथगोड़ धोयन औ खाना खायन । एक बेर फिर गायभइँस देखिकै हाथगोड़ धोइकै सुतै के खातिर आयन तो देखित है ९:१५ बजि गवा है । यकरे बाद दिनभर कै भागदौड लिखतैलिखत सोय गयन ।

- दिनानाथ बरई

२. सुनाई पाठ १४ के आधार पर ठीक है तो ठीक औ बेठीक है बेठीक कहा जाय :

(क) काल्ह रेडियो मा समाचार सुने रहेन ।

(ख) खाय वाला पिसान नाही ओरान रहा ।

(ग) अम्मा चना कै दाल लाइकै छत पर फइलाय दिहिन ।

(घ) पेराय के घरे आयेन तो १०:०० बजि गवा रहा ।

(ङ) आज गइया चरिकै आवै के बाद बछियवै बान्है के भुलाय गई रहीं ।

१. सुनाई पाठ १४ सुनिकै दिहा प्रश्न कै उत्तर कहा जाय :

(क) यी दैनिकी के लिखिस है ?

(ख) दैनिकी लिखे वाले मनई पेशा काव होय ?

(ग) उलोग कवन कवन अनाज सुखुवाइन ?

(घ) चिन्कनु के दुकान पर कवने विषय पर बाति होत रहा ?

(ङ) बछिया काहे दूध पिई लिहिस रहा ?

सिर्जना औ परियोजना कार्य

१. नीचे दिहा शीर्षक पर दैनिकी लिखा जाय :

(क) विद्यालय मा भवा प्रतियोगिता के दिन

(ख) गुड़िया (नागपञ्चमी)

२. आप के घर पर मनाय जाय वाला पर्वतिउहार के बारे मा लिखिकै कक्षा मा सुनावा जाय ।

कृषि प्रधान देश मा किसानै अपहेलित

मंसिर २६, २०८१

पाठक पत्र

कान्तिपुर मा अगहन १७ गते प्रकाशित 'मलको बर्सेनि अभाव, किसानलाई सधैं तनाव' शीर्षक कै **सम्पादकीय** यतना सटीक है कि येकां सरकार का अध्ययन करै के चाहीँ । काहेकी 'कृषि प्रधान देश' के नाम से चीह्नि जाय वाल देश नेपाल के किसान का आवश्यक परा समय पर मलखाद कै अभाव होय जात है । लेकिन **आपूर्ति** करै के सरकार कै कवनो इच्छा औ पहल नाही देखात है ।

फलस्वरूप **खेतीयोग्य** जमिन मा खेती करै चाहिउकै नाही होइ पावत है । समय पर खाद न पाइकै उत्पादन मा कमी होत के **अन्ततोगत्वा** मुलुक कै आर्थिक अवस्था समेत दयनीय है । उदाहरण के खातिर बीता वर्ष बाली लगावत के खाद के अभाव से उत्पादन घटिकै किसान समस्या मे है तो रब्बी फसल लगावत के फिर खादै के अभाव से किसान छटपटात हैं । कृषि उत्पादन मा प्रतिकूल असर परै के पक्कापक्की है ।

सरकार से खाद के अभाव का परिपूर्ति न होय के बाद किसान बाध्य होइकै जोखिम बेसाय के महँगै से व्यापारी से खरिद करत के स्वतः लागत बढ़ि जात है । भारतीय सीमा से लावत के कानुनी प्रावधान से **दण्डनीय** होय के साथ साथ जोखिम उठावै के परत है ।

दूसरे ओर अइसन जोखिमयुक्त काम **कालाबजारी** का प्रोत्साहन देय के साथसाथ **अराजकता** फइलावत है ।

मुश्किल से आयात कइ गवा खाद स्थानीय सरकार के माग के आधार पर कोटा के माध्यम से वितरण कइ जात है । राजनीतिक पहुँच के आधार पर खाद मिलै के नाते असमान रूप मा बिक्री वितरण होब स्वभाविक है । खाद कै आयात करै के खातिर हरेक साल अर्बौं रकम विदेश जात है । यहि वर्ष के खातिर भर लगभग २८ अर्ब रकम खाद के खातिर **विनियोजित** भवा देखात है ।

करिब ७० प्रतिशत नेपाली कृषि पेसा मा हैं । अइसन अवस्था मा खाद कै अभाव होब औ सरकार से आपूर्ति करै के न चाहब या ढिलाई करब लाज कै विषय नाही होय ? दूसरे ओर सरकार खाद कै आपूर्ति न करत के अइसन अवस्था मा सीमा क्षेत्र से खरिद कइके लावत हैं । जवन खाद बीच रास्तै से बरामद करत के स्थानीय किसान से वितरण किहा अनुभवो सरकार के लगे है न ?

शब्दार्थ

पाठक पत्र	:	सम्पादक का पाठक से लिखि गवा आपन विचार सहितकै पत्र
सम्पादकीय	:	कवनो या उद्देश्य स्पष्ट करै के खातिर सम्पादक के ओर से लिखि गवा विशेष लेख
आपूर्ति	:	दैनिक उपभोग्य सामान उपलब्ध करावै वाला काम
खेतीयोग्य	:	खेती के खातिर उपयुक्त
अन्ततोगत्वा	:	अन्त मा आइकै
दण्डनीय	:	सजाय देय के खातिर योग्य
कालाबजारी	:	व्यापार मा तस्करी करै वाला
अराजकता	:	व्यवस्था मा नियम, अनुशासन न मिला अवस्था
विनियोजित	:	निकासा कइ गवा, अर्पित

शब्द भण्डार

१. **नीचे दिहा शब्द कै अर्थ लिखा जाय :**

ढिलाई, वितरण, अभाव, आयात, मुश्किल, स्वभाविक, दयनीय

२. **नीचे दिहा पदावली प्रयोग कइकै वाक्य बनावा जाय :**

बहुतै जोखिम, ठहरै वाला जगह, कदम बढ़ाइब, ठोकर लागब, आँखि मुनब,

३. **नीचे दिहा शब्द प्रयोग कइके अनुच्छेद तइयार करा जाय :**

ब्यापारी, सामान, माग, विक्रेता, खाद, किसान, रकम, खेतीयोग्य, सीमा, स्थानीय

बोध औ अभिव्यक्ति

१. **नीचे दिहा शब्द शुद्ध से उच्चारण करा जाय :**

प्रतिशत, अभाव, विनियोजित, मुश्किल, स्वभाविक, आपूर्ति, आयात, अन्ततोगत्वा

२. **'कृषि प्रधान देश मा किसानै अपहेलित' पाठकपत्र वसरीपारी सस्वर वाचन कइकै सुनावा जाय ।**

३. **'कृषि प्रधान देश मा किसानै अपहेलित' पाठक पत्र पढ़िकै पूछि गवा प्रश्न कै मौखिक उत्तर दिहा जाय :**

(क) पत्र मा केकर समस्या देखाय गा है ?

(ख) केकरे काम कै सिकायत कइ गा है ?

(ग) आवश्यक परा समय पर काव नाही मिलत है ?

(घ) कृषि उत्पादन काहे घटत जात है ?

(ङ) केतना नेपाली कृषि पेशा मा हैं ?

४. 'कृषि प्रधान देश मा किसानै अपहेलित' पाठक पत्र कै तिसरा अनुच्छेद शिक्षक से सुनिकै लिखा जाय ।

५. 'कृषि प्रधान देश मा किसानै अपहेलित' दैनिकी पढ़िकै पूछि गवा प्रश्न कै सङ्क्षिप्त उत्तर लिखा जाय :

(क) लेखक के विचार मा के अपहेलित है ?

(ख) किसान लोग कै समस्या काव होय ?

(ग) खाद आयात करै के मुख्य जिम्मेवारी केकर होय ?

(घ) समय पर खाद कै आपूर्ति न होत के कइसन समस्या होत है ?

(ङ) कब्बोकाल खाद काव होत है ?

६. खाद सम्बन्धी समस्या आप के गाँव मा कइसन है, घर मा पुछिकै लिखा जाय ।

७. भाव विस्तार करा जाय :

कृषि उत्पादन मा प्रतिकूल असर परै के पक्कापक्की है ।

८. 'कृषि प्रधान देश मा किसानै अपहेलित' पाठक पत्र कै मुख्य मुख्य घटना कै सूची बनावा जाय ।

९. 'कृषि प्रधान देश मा किसानै अपहेलित' पाठक पत्र कै सार लिखा जाय ।

१०. नीचे दिहा बुंदा के आधार पर सम्पादक का चिठ्ठी लिखा जाय :

- नाला कै निकास अभाव
- गाँव मे पानी भरि जात है
- बरसात मे सरुवा रोग
- साँप कै डसाई

११. जिल्ला स्तरीय निबन्ध प्रतियोगिता मे प्रथम भई साथी का प्रोत्सहान देत बधाई पत्र लिखा जाय ।

भाषिक संरचना औ वर्ण विन्यास

१. नीचे दिहा अनुच्छेद पढ़ा जाय औ सरल वाक्य, मिश्र वाक्य औ संयुक्त वाक्य कै टिपोट कइकै कक्षा मा छलफल करा जाय :

काका कथा वाचत हैं । हमरे सुना जात है- कथा मा राम औ रावण कै प्रसङ्ग है । राम बन गये सीता कै अपहरण होय गवा । हनुमान तथा सुग्रिव से मुलाकात भवा । जब बानर सेना कै बाति आय तब जामवन्त आये परे । लङ्का जाय वाले रास्ता कै खोजी करै बानर सेना चला । उलोग कै यी काम आसान नाही रहा । उलोग रास्ता से परिचित नाही रहें लेकिन आज्ञा कै पालन करै के रहा ।

२. कोष्ठक मा दिहा धातु औ निर्देशन अनुसार वाक्य परिवर्तन कइके लिखा जाय :

(क) राधा बनाइन लेकिन नाही परोसिन । (सरल वाक्य)

(ख) ऊ मेहनत करत है । पइसवो कमात है । (मिश्र वाक्य)

(ग) पानी बरसी । नदिया मा बाढ़ि आई । (संयुक्त वाक्य)

(घ) काकी मामा किहा गइँ । सोहर गाइन । (मिश्र वाक्य)

(ङ) हम आज नाही जाबै काहेकी गोड़ पिरात है । (सरल वाक्य)

(च) यी काम चाहे आवै चाहे न । तुहुँका काम करै के परी । (संयुक्त वाक्य)

३. नीचे दिहा वाक्य पढ़ा जाय औ छलफल करा जाय :

भाव	उदाहरण
सामान्यार्थ	हम काम करब । उषा खेते जइ हैं ।
आज्ञार्थ	तू यहिं बइठ रहौ । रामू खेते जाव ।

इच्छार्थ	हम खेलै जाई । उलोग गाँव लउटि आवैं ।
सम्भावनार्थ	तू सफल होबौ । उ काल्ह आई ।
सङ्केतार्थ	बदर देखात तो पानी बरसत । कारखाना बनत तो रोजगारी बढ़त

४. कोष्ठक मा दिहा धातु औ निर्देशन अनुसार वाक्य पूरा कइके लिखा जाय :

(क) रामू मेहनत से .... । (पढ् : सामान्यार्थ)

(ख) तोहरे सब बजारे .... । (जा : आज्ञार्थ)

(ग) आज हम कविता .... । (लिख् : इच्छार्थ)

(घ) रजनी औ रेखा काल्ह ....। (आ : सम्भावनार्थ)

(ङ) बस .... तो जाय के सहज रही । (चल : सङ्केतार्थ)

५. सामान्यार्थ, आज्ञार्थ, इच्छार्थ, सम्भावनार्थ औ सङ्केतार्थ क्रियापद कै प्रयोग कइकै साथी के बारे मा अनुच्छेद लिखा जाय ।

सुनाई औ बोलाई

सुनाई पाठ -१५

अपाङ्गता भवा व्यक्ति पहुँचविहीन

मंसिर १९, २०८१

पाठक पत्र

काठमाडौं – डिसेम्बर ३ मा अन्तर्राष्ट्रिय अपाङ्गता दिवस मनाय गा है । वर्ष मा एक बेर कार्यक्रम मनाइकै सरकार से आपन जिम्मेवारी पूरा होय गवा कहिकै सोचब सरासर गलत होय । फरक क्षमता रहे व्यक्ति का राज्य से दइ मिलै वाला न्यूनतम सेवा सुविधा समेत नाही दइ पाये है ।

राज्य अबहिनौ अपाङ्गता रहा व्यक्ति प्रति विभेद किहे है, केतना तक कि अस्पताल, कार्यालय औ सड़क अपाङ्गमैत्री नाही है । कहुँ कहुँ सड़क मा पेटी नाही है अइसन अवस्था मा अपाङ्गता रहा व्यक्ति का चलै के केतना कठिन होत होई ? सरकार कै बजेट उलोग तक नाही पहुच पाये है ।

नेपाल अपाङ्ग संघ, खगेन्द्र नवजीवन केन्द्र जोरपाटी नारायणटार मा है । यहिँ भितर कै विवाद अबहिन तक समाधान नाही भवा है । वार्षिक करोडौं आम्दानी होय के बादो वहीँ रहै वाले अपाङ्गा रहा व्यक्ति आवश्यक सुविधा नाही पावत हैं । वहिँकै आर्थिक कारोबार मा पारदर्शिता नाही है ।

यहिँ भ्रष्टाचार, बेथिति, अनियमितता औ मनोमानी निर्णय भवा कहिकै उच्चस्तरीय छानबिन एवं अनुगमन समिति प्रतिवेदनै निकारे है। अपाङ्गता रहा व्यक्ति लोग के खातिर काम करै वाला संस्था यहि मेर से बेथिति मा घेरा मा रहब विडम्बना होय ।

२. सुनाई पाठ १५ के आधार पर खाली जगह पूरा कइकै कहा जाय ः

(क) डिसेम्बर ३ मा .... अपाङ्गता दिवस मनाय गा है ।

(ख) न्यूनतम सेवा .... समेत नाही दइ पाये है ।

(ग) सरकार कै .... उलोग तक नाही पहुच पाये है ।

(घ) वहिँकै आर्थिक कारोबार मा .... नाही है ।

(ङ) खगेन्द्र नवजीवन केन्द्र .... नारायणटार मा है ।

३. सुनाई पाठ १५ सुनिकै दिहा प्रश्न कै उत्तर कहा जाय ः

(क) डिसेम्बर ३ मा कवन दिवस कनाय जात है ?

(ख) कहुँ कहुँ सड़क मा काव नाही है ?

(ग) अपाङ्ग संघ कै कार्यालय कहाँ है ?

(घ) कहाँ आर्थिक कारोबार मा पारदर्शिता नाही है ?

(ङ) कवन लोग बहुचविहिन हैं ?

सिर्जना औ परियोजना कार्य

१. आप के वार्ड मा देखान ढलनिकास औ विजुली सम्बन्धी समस्या देखावत स्थानीय पत्रिका के सम्पादक का चिठ्ठी लिखा जाय ।

२. 'समाज मा रहा कवनो समस्या समाधान कै दायित्व सब कै होय ।' कहै वाले विषय पर आधारित होइकै बुँदा सङ्कलन करा जाय औ लेख तइयार कइकै कक्षा मा सुनावा जाय ।